बुजुर्गों के लिए आशा और सांत्वना

रिसाले-ए-नूर संग्रह से

मानवता का ईश्वरीय मुठभेड़ श्रृंखला

बुजुर्गों के लिए आशा और सांत्वना

* छब्बीसवीं झलक

* इक्कीसवाँ अक्षर

बेदिउज्जमां
सैयद नर्स

TUGHRA
BOOKS
न्यू जर्सी

12 11 10 09 1 2 3 4

तुग़रा बुक्स द्वारा प्रकाशित
26 वर्ल्ड्स फेयर डॉ. यूनिट सी
समरसेट, न्यू जर्सी, 08873, संयुक्त राज्य अमेरिका

www.tughrabooks.com

हुसेन अकारसु द्वारा तुर्की से अनुवादित

आईएसबीएन: 978-1-59784-222-8

द्वारा मुद्रित
Çağlayan A.Ş., इज़मिर - तुर्की

विषयसूची

माता-पिता के प्रति स्नेह

बेदिउज्जमां और रिसाले-ए नूर

अपने जीवनकाल की उपलब्धियों के कई आयामों के साथ-साथ अपने व्यक्तित्व और चरित्र में, बेदीउज्जमां (1877-1960) मुस्लिम दुनिया में एक महत्वपूर्ण विचारक और लेखक थे और अपने निरंतर प्रभाव के माध्यम से, आज भी हैं। उन्होंने इस्लाम की बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक शक्तियों को सबसे प्रभावी और गहन तरीके से प्रस्तुत किया, जो चौदहवीं शताब्दी के इतिहास में विभिन्न स्तरों पर स्पष्ट है। वे अस्सी-पांच साल तक जीवित रहे। उन्होंने लगभग सभी वर्ष इस्लाम के लिए प्रेम और जोश से भरे हुए, एक बुद्धिमान और संतुलित सक्रियता में बिताए, जो कि ठोस तर्क पर आधारित थी और कुरान और पैगंबर के उदाहरण की छाया में थी।

बेदीउज़्ज़मान उस दौर में रहते थे जब भौतिकवाद अपने चरम पर था और बहुत से लोग साम्यवाद के पीछे पागल थे, और दुनिया बहुत बड़े संकट में थी। उस महत्वपूर्ण दौर में, बेदीउज़्ज़मान ने लोगों को विश्वास के स्रोत की ओर इशारा किया और उनमें सामूहिक बहाली की प्रबल आशा जगाई।

ऐसे समय में जब विज्ञान और दर्शन का प्रयोग युवा पीढ़ी को नास्तिकता की ओर गुमराह करने के लिए किया जा रहा था, तथा शून्यवादी दृष्टिकोण का व्यापक प्रभाव था, ऐसे समय में जब यह सब सभ्यता, आधुनिकीकरण और समकालीन सोच के नाम पर किया जा रहा था और जो लोग इनका विरोध करने की कोशिश करते थे, उन्हें क्रूरतम उत्पीड़न का सामना करना पड़ता था, बेदिउज्जमां ने सम्पूर्ण लोगों के समग्र पुनरुत्थान के लिए प्रयास किया, तथा उनके मन और आत्मा में आधुनिक और पारंपरिक शिक्षा तथा आध्यात्मिक प्रशिक्षण के संस्थानों में जो कुछ भी सिखाया जाता था, उसे फूंक दिया।

बेदिउज़्ज़मान ने देखा था कि आधुनिक अविश्वास विज्ञान और दर्शन से उत्पन्न हुआ है, न कि पहले की तरह अज्ञानता से। उन्होंने लिखा कि प्रकृति ईश्वरीय शक्तियों का संग्रह है।

संकेत और इसलिए विज्ञान और धर्म परस्पर विरोधी विषय नहीं हो सकते। बल्कि, वे एक ही सत्य की दो (स्पष्टतः) भिन्न अभिव्यक्तियाँ हैं। मन को विज्ञान से प्रकाशित किया जाना चाहिए, जबकि हृदय को धर्म से प्रकाशित किया जाना चाहिए।

बेदीउज्जमां शब्द के सामान्य अर्थ में लेखक नहीं थे। उन्होंने अपनी शानदार रचना रिसाले-ए-नूर लिखी, जो 5,000 पृष्ठों से अधिक का संग्रह है, क्योंकि उनका एक मिशन था: उन्होंने विज्ञान और दर्शन द्वारा पोषित विचारों की भौतिकवादी और नास्तिक प्रवृत्तियों के खिलाफ संघर्ष किया और इस्लाम की सच्चाई को हर स्तर की समझ वाले आधुनिक दिमाग और दिलों के सामने पेश करने की कोशिश की। रिसाले-ए-नूर, कुरान की एक आधुनिक टिप्पणी है, जो मुख्य रूप से ईश्वर के अस्तित्व और एकता, पुनरुत्थान, पैगंबर, मुख्य रूप से कुरान सहित ईश्वरीय शास्त्रों, अस्तित्व के अदृश्य क्षेत्रों, ईश्वरीय नियति और मानवता की स्वतंत्र इच्छा, पूजा, मानव जीवन में न्याय और सृष्टि के बीच मानवता के स्थान और कर्तव्य पर केंद्रित है।

लोगों के मन और दिल से झूठे विश्वासों और अवधारणाओं के जमा हुए 'अवसाद' को हटाने और उन्हें बौद्धिक और आध्यात्मिक रूप से शुद्ध करने के लिए, बे-दीउज्जमान जोरदार तरीके से लिखते हैं और दोहराते हैं। वह न तो अकादमिक और न ही उपदेशात्मक तरीके से लिखते हैं; बल्कि वह भावनाओं से अपील करते हैं और लोगों के दिल और दिमाग में अपने विचारों और विचारों को उंडेलने का लक्ष्य रखते हैं ताकि उन्हें विश्वास और दृढ़ विश्वास के लिए जागृत किया जा सके।

इस पुस्तक में रिसाले-ए-नूर संग्रह से चयनित अनुभाग शामिल हैं ।

बुजुर्गों के लिए आशा और सांत्वना

[द ग्लेम्स, द ट्वेंटी-सिक्सथ ग्लेम्स से]

[नोट] मैंने प्रत्येक आशा के आरंभ में अपने दुखों और कष्टों को इस प्रकार लिखा है कि वे आपको दु:खी कर सकें, इसका कारण यह है कि मैं यह दिखाना चाहता हूँ कि विवेकपूर्ण कुरान में दिए गए उपचार असाधारण रूप से प्रभावशाली हैं।

यह ग्लेम, जो बुजुर्गों के बारे में है, संभवतः कुछ कारणों से धाराप्रवाह बोलने में असमर्थ रही होगी, जैसे कि निम्नलिखित हैं:

पहला: चूंकि यह मुख्यतः मेरे अपने अनुभवों पर आधारित है तथा उन पुराने दिनों को याद करने से उत्पन्न मनोदशा में लिखी गई है, इसलिए अभिव्यक्ति में अनुक्रम प्राप्त करना संभव नहीं था।

दूसरा: चूंकि यह सुबह की प्रार्थना के बाद तेजी से लिखा गया था, जब मैं थका हुआ महसूस कर रहा था, इसलिए अभिव्यक्ति में कुछ उलझन है।

तीसरा: मेरे साथ लिखने के लिए हमेशा कोई न कोई रहता था, और मेरे साथ आने वाले लेखक को रिसाले-ए-नूर से संबंधित चार या पाँच अन्य कार्य भी करने होते थे।

चूँकि हमें इसका गहन पुनरीक्षण करने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल सका, इसलिए इसमें कुछ अव्यवस्था उत्पन्न हो गई।

चौथा: लेखक और मैं दोनों ही इसके पूरा होने के बाद थक गए थे, और अभिव्यक्ति पर पर्याप्त रूप से विचार किए बिना शब्दों के सतही संशोधन से संतुष्ट होने के लिए बाध्य थे। इस वजह से, स्वाभाविक रूप से अभिव्यक्ति की गलतियाँ हो सकती हैं। हम अनुरोध करते हैं कि उदार बुजुर्ग मेरी अभिव्यक्ति की गलतियों को अनदेखा करेंगे और चूंकि ईश्वरीय दया धन्य बुजुर्गों के हाथों को खाली नहीं छोड़ती है जो उसके लिए खुले हैं,[1] हम आशा करते हैं कि जब वे ईश्वरीय न्यायालय की ओर अपने हाथ खोलेंगे तो वे हमें अपनी प्रार्थनाओं में शामिल करेंगे।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु,

दयावान है।

कफ. हा. या. ऐन. साद. अपने रब की अपने बन्दे ज़करियाह पर की गई दया का ज़िक्र: जब उसने अपने रब को चुपके से पुकारा और कहा: "मेरे रब! मेरी हड्डियाँ कमज़ोर हो गई हैं और मेरा सिर बुढ़ापे के कारण सफ़ेद बालों से चमक रहा है, और, मेरे रब, मैं कभी भी आपकी प्रार्थना में बरकत से वंचित नहीं रहा।" (19: 1-4)

इस चमक में छब्बीस आशाएँ हैं।

---

1 अत-तबारानी, अल-मजमा अल-अवसत, 5:270; अल-हयथामी, मजमा' अज़-ज़वायद, 10:149. (ट्र.)

पहली आशा

आदरणीय बुजुर्ग भाईयों और बहनों, जो वयस्कता की आयु तक पहुँच चुके हैं: आपकी तरह मैं भी बुजुर्ग हूँ।
उनमें निहित सांत्वना की रोशनी को आपके साथ साझा करने की इच्छा से, मैं उन आशाओं को लिखूंगा जो मुझे समय-समय पर अपने बुढ़ापे और अपने कुछ अनुभवों में मिली हैं। बेशक, मैंने जो रोशनी देखी है और उम्मीद के जो दरवाजे मैंने देखे हैं, वे मेरी दोषपूर्ण और भ्रमित क्षमता के अनुसार देखे और खोले गए हैं। ईश्वर की इच्छा से, आपके शुद्ध और ईमानदार स्वभाव उन रोशनी को और अधिक उज्ज्वल बना देंगे जो मैंने देखी हैं और उन आशाओं को मजबूत करेंगे जो मैंने पाई हैं।

आने वाली आशाओं और प्रकाश का स्रोत, झरना और फव्वारा विश्वास (ईश्वर और आस्था के अन्य स्तंभों में) है।

दूसरी आशा

एक शरद ऋतु के दिन जब बुढ़ापा मुझ पर हावी हो रहा था, दोपहर की प्रार्थना के समय, मैं एक ऊंचे पहाड़ से दुनिया को देख रहा था और मैं एक दयनीय, शोकाकुल और, कुछ अर्थों में, अंधकारमय मनोदशा या मन की स्थिति से अभिभूत हो गया। मैंने देखा कि मैं बन गया था

दिन भी बूढ़ा हो गया था, साल भी बूढ़ा हो गया था, और दुनिया भी बूढ़ी हो गई थी। बुढ़ापे के उन सभी उदाहरणों ने मुझे महसूस कराया कि दुनिया से विदा होने और अपने प्रियजनों से अलग होने का समय करीब आ गया है, और

मेरे अपने बुढ़ापे ने मुझे बुरी तरह हिला दिया। अचानक ईश्वरीय दया इस तरह प्रकट हुई कि उसने उस दयनीय दुख और अलगाव को एक शक्तिशाली आशा और सांत्वना की उज्ज्वल रोशनी में बदल दिया। मैं आप लोगों से जो मेरे जैसे बुजुर्ग हैं, पुष्टि करता हूँ: दयालु सृष्टिकर्ता बुद्धिमान कुरान में सौ स्थानों पर खुद को हमारे सामने "दयालु और दयालु" के रूप में प्रस्तुत करता है। वह हमेशा पृथ्वी पर जीवित प्राणियों की सहायता के लिए अपनी दया भेजता है जो इसकी तलाश करते हैं। हर साल वह वसंत ऋतु को भेजता है, जिसे वह अदृश्य से असंख्य उपहारों और उपहारों से भर देता है, हम पर, जो दूरदर्शिता के जरूरतमंद हैं, और हमारी जन्मजात कमजोरी और नपुंसकता के अनुपात में अपनी दया को प्रचुर मात्रा में प्रकट करता है। इस प्रकार, हमारे दयालु सृष्टिकर्ता की दया[2] हमारे बुढ़ापे में सबसे बड़ी आशा और सबसे शक्तिशाली प्रकाश है।

हम इस दया को विश्वास के माध्यम से सर्वशक्तिमान ईश्वर के साथ संबंध बनाकर और उससे जुड़कर तथा दैनिक प्रार्थनाओं के द्वारा उसकी आज्ञा का पालन करके पा सकते हैं।

तीसरी आशा

जब मैं जवानी की रात की नींद से बुढ़ापे की सुबह जागा, मैंने खुद को देखा और पाया

---

2 सर्वशक्तिमान ईश्वर से संबंधित या उनसे संबंधित बातें कभी-कभी बड़े अक्षरों से और कभी-कभी छोटे अक्षरों से शुरू की जाती हैं।

उदाहरण के लिए, इस अनुच्छेद में "दया" को या तो बड़े अक्षर से या छोटे अक्षर से शुरू किया गया है। यदि यह भगवान के नाम या गुण को संदर्भित करता है, तो इसे बड़े अक्षर से शुरू किया जाता है, लेकिन यदि यह उस नाम या गुण की अभिव्यक्ति को संदर्भित करता है, तो इसे छोटे अक्षर से शुरू किया जाता है। (ट्र.)

कि मेरी ज़िंदगी कब्र की ओर तेज़ी से बढ़ रही थी जैसे कि ढलान से नीचे उतर रही हो। जैसा कि नियाज़ी मिसरी ने कहा,

> हर दिन मेरे जीवन की इमारत से एक पत्थर ज़मीन पर गिरता है;
>
> आत्मा असावधानी में सोती रहती है और उसे पता नहीं होता कि
> इसकी इमारत खंडहर में है!

मेरा शरीर, मेरी आत्मा का निवास, सड़ रहा था, और उसका एक पत्थर हर दिन टूट रहा था। यह महसूस करते ही, वे उम्मीदें और महत्वाकांक्षाएँ जो मुझे दुनिया से मजबूती से बांधे हुए थीं, टूटने लगीं। मुझे लगा कि मेरे कई दोस्तों और जिनसे मैं प्यार करता था, उनसे अलग होने का समय करीब आ रहा है। मैंने उस बहुत गहरे और जाहिर तौर पर लाइलाज आध्यात्मिक घाव के लिए मरहम की तलाश की, लेकिन मुझे कोई नहीं मिला। फिर से नियाज़ी मिस्री की तरह मैंने कहा:

> जबकि मेरा हृदय स्थायित्व चाहता था, सत्य परमेश्वर ने मेरे शरीर की नश्वरता का न्याय किया;
>
> मैं एक असाध्य बीमारी से पीड़ित हूँ; यह कितने अफ़सोस की बात है कि लुकमान को इसका पता नहीं है!

फिर अचानक महिमावान पैगंबर की रोशनी और सिफ़ारिश - उन पर शांति और आशीर्वाद हो, जो आवाज़, मॉडल, अवतार, हेराल्ड और प्रतिनिधि हैं-

---

3 मेहमत नियाज़ी मिस्री (1617-1694)। उनका जन्म तुर्की के मालट्या में हुआ था और उनकी मृत्यु एजियन सागर में लिम्नी द्वीप में हुई थी। वे एक सूफी शेख, कवि और विद्वान थे। इल्मिहाली तारीकत ("सूफी मार्ग के सिद्धांत"), मवादी अल-इरफ़ान ("गूढ़ ज्ञान की तालिकाएँ") और तेवहीद रिसालेसी (ईश्वर की एकता का ग्रंथ") उनकी सबसे प्रसिद्ध कृतियों में से हैं। (अनुवाद)

ईश्वरीय दया के प्रतीक, तथा मानवजाति को उनके द्वारा दिया गया मार्गदर्शन का उपहार, उस घाव के लिए अच्छा मरहम बन गया, जिसे मैं असाध्य समझता था।

आदरणीय बुजुर्ग पुरुष और महिलाएं जो मेरी तरह ही अपने बुढ़ापे को महसूस करते हैं! हम जा रहे हैं; खुद को धोखा देने से कोई फायदा नहीं है। भले ही हम अपनी आँखें बंद कर लें, हमें यहाँ रहने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

बिलिज़ेशन। मध्यवर्ती क्षेत्र की भूमि

कब्र, जो हमें अंधकारमय और अनंत अलगाव की भूमि प्रतीत होती है, क्योंकि यह भ्रम असावधानी और आंशिक रूप से गुमराह लोगों के कारण उत्पन्न होता है, मित्रों का मिलन स्थल है। यह वह क्षेत्र है जहाँ हम सबसे पहले ईश्वर के प्रियतम से, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, और अपने सभी मित्रों से मिलेंगे।

हम उस व्यक्ति की दुनिया में जा रहे हैं जो एक हजार तीन सौ पचास वर्षों से करोड़ों लोगों का शासक, उनकी आत्माओं का प्रशिक्षक, उनके मन का शिक्षक और उनके दिलों का प्रिय रहा है। "कारण जैसा ही कर्ता होता है" इस नियम के अनुसार, उसका पूरा समुदाय अपने अच्छे कर्मों से हर दिन जो पुण्य अर्जित करता है, उसका समतुल्य उसके अच्छे कर्मों की पुस्तिका में जुड़ जाता है। वह ब्रह्मांड में उच्च दिव्य उद्देश्यों की प्राप्ति और प्राणियों के मूल्य में वृद्धि का साधन है। जैसा कि प्रामाणिक परंपराओं में दर्ज है और आध्यात्मिक खोज के संतों द्वारा खोजा गया है, जब वह आया था

दुनिया में, उन्होंने कहा, "मेरा समुदाय! मेरा समुदाय!"[4] वह अपने समुदाय की सहायता के लिए सबसे ऊंचे आत्म-बलिदान के साथ और अपनी मध्यस्थता के माध्यम से भी दौड़ेंगे, जब हर कोई दूसरे संसार में सर्वोच्च सभा के स्थान पर केवल अपने बारे में सोचेगा, और फिर वह चिल्लाएगा, "मेरा समुदाय! मेरा समुदाय!"[5] हम एक ऐसे संसार में जा रहे हैं जो इस सूर्य और असंख्य संतों और शुद्ध विद्वानों के सितारों से प्रकाशित है।

उस व्यक्ति की मध्यस्थता का हकदार बनने, उसके प्रकाश से लाभ उठाने और मध्यवर्ती क्षेत्र के अंधकार से बचने का साधन उसके बताए मार्ग का अनुसरण करना है।

उत्तम उदाहरण या मार्ग (सुन्नत)।

चौथी आशा

जब मैं बुढ़ापे में पहुंचा तो मेरा शारीरिक स्वास्थ्य, जो हमेशा असावधानी का कारण बनता है, टूट गया। बुढ़ापा और बीमारी दोनों ने मुझ पर एक साथ हमला किया। वे लगातार मुझे परेशान करते रहे, लगातार परेशान करते रहे।

मुझे दुनिया से जोड़ने वाला कुछ भी नहीं था, न परिवार, न बच्चे, न संपत्ति। मैंने देखा कि मेरी जीवन की पूंजी, जिसे मैंने युवावस्था के चक्कर में बर्बाद कर दिया था, केवल पाप और गलतियाँ ही थीं। नि-याज़ी मिस्री की तरह चिल्लाते हुए मैंने कहा:

4 अस-सुयुति, अल-खासाईस अल-कुबरा, 1:80, 85. (ट्र.)

5 अल-बुखारी, "तौहीद" 36; मुस्लिम, "ईमान" 326. (ट्र.)

मैंने कोई व्यापार नहीं किया था; जीवन की सारी पूंजी बर्बाद हो गई थी;

मैंने सड़क तो ढूंढी, लेकिन पाया कि कारवां आगे बढ़ चुका था, जबकि मुझे इसकी जानकारी तक नहीं थी।

विलाप करते हुए मैं भी चल पड़ा, बिलकुल अकेला, एक अजनबी

रोती हुई आँखें, व्यथित हृदय, भ्रमित एवं अनभिज्ञ मन।

मैं उस समय निर्वासन में था। मुझे निराशा भरा दुख, गहरा अफसोस, सहायता की लालसा महसूस हुई। अचानक, चमत्कारी अभिव्यक्ति वाली कुरान मेरी सहायता के लिए आई। इसने मेरे लिए आशा का ऐसा शक्तिशाली द्वार खोला और मुझे सच्ची सांत्वना का ऐसा प्रकाश दिया कि यह किसी भी निराशा और अंधकार को दूर कर सकता था जो मुझसे सौ गुना अधिक तीव्र था।

आदरणीय वृद्ध पुरुष और महिलाएं, जिनकी दुनिया में रुचि समाप्त होने लगी है, जब उन्हें इस दुनिया से जोड़ने वाले बंधन धीरे-धीरे टूट रहे हैं! क्या यह संभव है कि महिमा के निर्माता, जिन्होंने इस दुनिया को एक बेहतरीन शहर या महल के रूप में बनाया है, उस महल में अपने सबसे महत्वपूर्ण मेहमानों और दोस्तों से नहीं मिलेंगे या उनसे बात नहीं करेंगे? चूँकि उन्होंने जानबूझकर इस महल को बनाया और इसे उद्देश्यपूर्ण ढंग से व्यवस्थित और सजाया है, तो निश्चित रूप से—

जिस तरह से कोई चीज़ बनाने वाला जानता है, उसी तरह से कोई चीज़ बनाने वाला जानता है—जो जानता है, वही बोलेगा। और चूँकि उसने इस महल और शहर को हमारे लिए एक बढ़िया गेस्टहाउस और व्यापार की जगह के रूप में बनाया है, इसलिए उसके पास निश्चित रूप से एक किताब होगी जो हमारे लिए उसके संबंधों को प्रदर्शित करेगी और वह हमसे क्या चाहता है।

ऐसी पवित्र पुस्तकों में सबसे उत्तम क़ुरआन है, जिसमें चमत्कारपूर्ण अभिव्यक्ति है। यह चालीस मामलों में चमत्कार है और हर पल कम से कम दस करोड़ लोगों की ज़बान पर है। यह प्रकाश फैलाता है, और इसका हर अक्षर कम से कम दस पुण्य और सवाब प्रदान करता है, और कभी-कभी मध्यवर्ती क्षेत्र में जन्नत और रोशनी के दस हज़ार फल और कभी-कभी - भाग्य और शक्ति की रात के अर्थ और महत्व के कारण - तीस हज़ार। यह कब्र के मध्यवर्ती क्षेत्र के लिए भी जन्नत और रोशनी का फल प्रदान करता है। इन मामलों में इसका मुकाबला करने वाली ब्रह्मांड में कोई किताब नहीं है और कोई भी इसे आगे नहीं ला सकता है। चूँकि यह क़ुरआन जिसे हम मानते हैं, आकाशों और धरती के महाप्रतापी रचयिता का वचन है, जो उसकी पूर्ण प्रभुता, सर्वोच्च दिव्यता और सर्वव्यापी दया से निकला है, और उसका आदेश और उसकी दया का स्रोत है, इसलिए इसका पालन करो। इसमें हर बीमारी के लिए एक इलाज, हर तरह के अंधेरे के लिए एक रोशनी और हर निराशा के लिए एक आशा है।

इस शाश्वत खजाने की कुंजी ईश्वर के प्रति विश्वास और समर्पण है, कुरान को सुनना, स्वीकार करना और उसका पाठ करना है।

पांचवी आशा

एक बार, जब मैं बूढ़ा हो रहा था, मेरी आत्मा ने इस्तांबुल में बोस्फोरस के ऊपर माउंट जोशुआ (युशा टेपेसी) पर एकांत में आराम की तलाश की। एक दिन उस ऊंची पहाड़ी पर,

मैंने चारों ओर दूर तक देखा और बुढ़ापे की चेतावनी के बीच क्षय और अलगाव का एक अत्यंत दयनीय दृश्य देखा। मैंने अपने जीवन के वृक्ष की पैंतालीसवीं शाखा यानी पैंतालीसवें वर्ष की ऊँची स्थिति से अपने जीवन के निचले स्तरों पर नज़र डाली। मैंने देखा कि प्रत्येक निचली शाखा पर, प्रत्येक वर्ष में, उन लोगों की असंख्य लाशें थीं जिन्हें मैं जानता था और प्यार करता था, और जिनसे मेरा किसी तरह का रिश्ता था। उन दोस्तों के बारे में सोचते हुए जो चले गए थे, अलगाव से उत्पन्न वास्तव में दयनीय दु:ख के साथ, मैं बगदाद के फ़ुज़ुली की तरह कराह उठा:6

जब मैं तुम्हारी संगति को याद करता हूँ तो रो पड़ता हूँ,

जब तक मेरे इस सूखे शरीर में सांस है, मैं चिल्लाता हूँ...

ऐसा कहकर मैंने सांत्वना, प्रकाश और आशा का द्वार खोजा। अचानक, परलोक में विश्वास की रोशनी मेरी सहायता के लिए आई, एक अमिट रोशनी, एक अविनाशी आशा की पेशकश की। यह इस प्रकार है:

मेरे जैसे बुज़ुर्ग भाईयों और बहनों! जैसे आख़िरत है और वह हमेशा रहनेवाली है, और वह हमेशा रहनेवाली है।

6 मेहमद फ़ुज़ुली (1490-1556)। तुर्क-ईश साहित्य के सबसे महान कवियों में से एक। वे इराक में रहते थे और उन्होंने पद्य और गद्य दोनों में कई रचनाएँ लिखीं। उनकी रचनाओं में उनका दीवान ("कविताओं का संग्रह") सबसे प्रसिद्ध है, जिसे उन्होंने तुर्की, फ़ारसी और अरबी में लिखा था।

लैला वु मजनूं (“लैला और मजनूं”), तर्जुमा-ए हदीस-ए अर्-बैन (“चालीस हदीसों का अनुवाद”), और हदीकत अस-सुआदा (“पवित्र लोगों का बगीचा”) उनकी सबसे प्रसिद्ध कृतियों में से हैं। (अनुवाद)

यह दुनिया से कहीं बेहतर है और जिस ने हमें बनाया है, वह सर्वज्ञ और दयालु है, इसलिए हमें अपने बुढ़ापे पर शिकायत या अफसोस नहीं करना चाहिए। इसके विपरीत, चूँकि बुढ़ापा विश्वास और उपासना में परिपक्वता की उम्र तक पहुँचने का संकेत है, और जीवन के कर्तव्यों से मुक्ति और आराम करने के लिए दया की दुनिया में प्रस्थान का संकेत है, इसलिए हमें इससे प्रसन्न होना चाहिए।

एक हदीस में कहा गया है कि एक लाख चौबीस हज़ार पैगम्बर भेजे गए हैं, जो मानवता में सबसे ज़्यादा प्रतिष्ठित और प्रतिष्ठित हैं।7 इन सभी पैगम्बरों ने ईश्वरीय रहस्योद्घाटन और अपने आध्यात्मिक अवलोकन के आधार पर सर्वसम्मति से और पूरी सहमति से यह खबर दी कि आख़िरत मौजूद है, कि इंसानों को वहाँ भेजा जाएगा, और यह कि सृष्टिकर्ता अपने वादे के अनुसार इसे लाएगा। इसके अलावा, एक सौ चौबीस मिलियन संतों ने आध्यात्मिक रोशनी, खोज और अवलोकन के साथ पैगम्बरों की रिपोर्टों को ज्ञान से उत्पन्न निश्चितता की डिग्री के साथ पुष्ट किया है, और आख़िरत के अस्तित्व की गवाही दी है। साथ ही, सर्वज्ञ निर्माता के सभी नाम, इस दुनिया में अपनी अभिव्यक्तियों के माध्यम से, एक शाश्वत क्षेत्र के बिल्कुल आवश्यक अस्तित्व को दर्शाते हैं और इसकी आवश्यकता बताते हैं। उदाहरण के लिए, शाश्वत शक्ति, जो हर वसंत में जीवन को बहाल करती है

7 अहमद इब्न हनबल, अल-मुस्नद, 5:265; इब्न हिब्बन, अस-सहीह, 2:77. (ट्र.)

धरती पर मरे हुए पेड़ों की असंख्य लाशें "हो जाओ" के आदेश के साथ और यह हो जाता है, और जो मृतकों के पुनरुत्थान के नमूने के रूप में पौधों और जानवरों की लाखों प्रजातियों को पुनर्जीवित करता है, सबसे स्पष्ट रूप से परलोक के अस्तित्व को आवश्यक बनाता है। इसी तरह, असीम, शाश्वत ज्ञान, जो कुछ भी व्यर्थ या उद्देश्यहीन नहीं होने देता है, और शाश्वत दया और सतत अनुग्रह, जो पूर्ण करुणा के साथ और अत्यंत अद्भुत तरीके से, सभी जीवित प्राणियों को पोषण प्रदान करता है, जिन्हें इसकी आवश्यकता होती है, और वसंत ऋतु में थोड़े समय के लिए उन्हें अपने श्रृंगार और सजावट की कई तरह की किस्मों को प्रदर्शित करने की अनुमति देता है, परलोक की आवश्यकता है। इसके अलावा, मानव ब्रह्मांड का सबसे उत्तम फल और इसके निर्माता का सबसे प्रिय प्राणी है, और सभी प्राणियों में मानव ब्रह्मांड के अन्य प्राणियों के साथ सबसे अधिक निकटता से और गहराई से जुड़ा और चिंतित है।

मानव स्वभाव में निहित शाश्वतता के प्रति तीव्र, अविचल और निरंतर प्रेम तथा स्थायित्व की महत्त्वाकांक्षा एक स्थायी क्षेत्र, सुख के एक शाश्वत निवास के अस्तित्व को प्रमाणित करते हैं, जो इस क्षणभंगुर संसार के बाद आएगा, और इस प्रकार निर्णायक रूप से कि वे परलोक को उसी निश्चयता के साथ स्वीकार करने को आवश्यक बनाते हैं, जिस प्रकार हम इस संसार के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं।८

8 जो चीज निश्चित रूप से मौजूद है, उसकी सूचना देने में आसानी और उसे नकारने में अत्यधिक कठिनाई को निम्नलिखित तुलना में देखा जा सकता है: यदि एक व्यक्ति कहता है, "पृथ्वी पर एक अद्भुत बगीचा है, जिसके पेड़ों के फल दूध के डिब्बों के समान हैं," और दूसरा कहता है, "यह सच है कि यह सच नहीं है।"

चूंकि सबसे महत्वपूर्ण चीजों में से एक जो बुद्धिमान कुरान हमें सिखाता है वह है परलोक में विश्वास, और चूंकि यह विश्वास इतना शक्तिशाली है और यह ऐसी आशा और सांत्वना प्रदान करता है कि यदि एक व्यक्ति एक लाख बार बुढ़ापे से ग्रसित हो जाए, तो इस विश्वास से उत्पन्न सांत्वना उसका सामना करने के लिए पर्याप्त होगी, तो निश्चित रूप से हम बुजुर्गों को कहना चाहिए, "पूर्ण विश्वास के लिए सभी प्रशंसा भगवान को है," और अपने बुढ़ापे से प्यार करना चाहिए।

छठी आशा

एक बार अपनी कष्टदायक निगरानी के दौरान, एकांतवास को प्राथमिकता देते हुए, मैं बारला पठार (इस्पार्टा प्रांत में) में पाइन माउंटेन (कैम डागी) की चोटी पर अकेला था। मुझे अपने एकांत में रोशनी की जरूरत थी।

उस ऊँचे पहाड़ की चोटी पर एक ऊँचे देवदार के पेड़ के ऊपर बने छोटे से मंच पर एक रात अकेले बैठे हुए, बुढ़ापे ने मुझे एक के बाद एक तीन या चार अलगाव याद दिलाए। जैसा कि छठे पत्र में वर्णित है (शामिल)

कहते हैं, “नहीं है,” इसका दावा करने वाला केवल इसके स्थान या इसके कुछ फलों या इसके एक सदस्य को इंगित करके अपना दावा साबित करता है। जबकि, इसका खंडन करने वाले को पूरी धरती को स्कैन करके दिखाना पड़ता है। ठीक उसी तरह, भले ही हम स्वर्ग के सैकड़ों हज़ारों संकेतों, फलों और निशानों को अनदेखा कर दें, जो इसके अस्तित्व की रिपोर्ट करने वालों ने बताए हैं, उनकी रिपोर्ट की सच्चाई के लिए दो सच्चे गवाहों की गवाही पर्याप्त है। लेकिन अपने इनकार को साबित करने के लिए, इसका खंडन करने वाले को असीम ब्रह्मांड और अनंत, कभी न खत्म होने वाले समय को स्कैन करना होगा और इसके गैर-अस्तित्व को प्रदर्शित करना होगा। और इसलिए, मेरे बुजुर्ग भाइयों और बहनों, समझिए कि आखिरत में विश्वास कितना शक्तिशाली है।

पत्रों में), उस एकाकी, खामोश, सुदूर रात में पेड़ों की सरसराहट की उदासी भरी आवाज़ ने मुझे बुढ़ापे में अपने निर्वासन में बहुत बोझिल बना दिया। बुढ़ापे ने निम्नलिखित विचार को जन्म दिया: जिस तरह दिन का उजाला इस कब्र के कालेपन में बदल गया है और दुनिया ने अपना काला कफन ओढ़ लिया है, उसी तरह आपके जीवन का दिन रात में बदल जाएगा, और दुनिया का दिन कब्र के मध्यवर्ती क्षेत्र की रात में बदल जाएगा, और जीवन का ग्रीष्मकाल मृत्यु की सर्दियों की रात में बदल जाएगा।

उसने मेरे दिल के कानों में यह बात फुसफुसा दी। तब मेरी आत्मा को जवाब देना पड़ा: सच है, मैं अपनी जन्मभूमि से बहुत दूर हूँ,

लेकिन उन सभी लोगों से अलग होना और उनके लिए शोक मनाना जो अब मर चुके हैं, जिन्हें मैंने अपने पचास साल के जीवन के दौरान प्यार किया, अपने देश से निर्वासन से कहीं ज़्यादा दुखद और दुखदायी अलगाव है। इसके अलावा, मैं रात और पहाड़ के उदास निर्वासन की तुलना में कहीं ज़्यादा दुखद और दर्दनाक निर्वासन के करीब पहुँच रहा हूँ: बुढ़ापा मुझे सूचित करता है कि मैं पूरी तरह से दुनिया से अलग होने के समय के करीब पहुँच रहा हूँ।

फिर मैंने इन दुखदायी वियोगों में से एक प्रकाश, एक आशा की तलाश की। अचानक ईश्वर में विश्वास मेरी सहायता के लिए आया और ऐसा साथ दिया कि अगर मैं जिस उजाड़ में था, वह हज़ार गुना बढ़ जाता तो भी उसकी सांत्वना पर्याप्त होती।

बुज़ुर्ग पुरुष और महिलाएँ! चूँकि हमारे पास एक दयालु सृष्टिकर्ता है, इसलिए हमें निर्वासन नहीं हो सकता। चूँकि

वह मौजूद है, हमारे लिए सब कुछ मौजूद है। चूँकि वह मौजूद है और उसके पास स्वर्गदूत हैं, इसलिए दुनिया खाली नहीं है। एकाकी पहाड़ और खाली रेगिस्तान सर्वशक्तिमान ईश्वर के सेवकों से भरे हुए हैं।

उनके चेतन सेवकों के अलावा, उनके पत्थर और पेड़ भी उनके प्रकाश से और उनके कारण देखने पर परिचित मित्र की तरह बन जाते हैं। वे हमसे बातचीत कर सकते हैं और हमें संतुष्टि दे सकते हैं।

ब्रह्मांड में प्राणियों की संख्या और ब्रह्मांड की इस विशाल पुस्तक के अक्षरों की संख्या के प्रमाण और साक्ष्य हमारे सर्व-दयालु, सर्व-उदार, सर्व-अंतरंग और सर्व-प्रेमी निर्माता, निर्माता और रक्षक के अस्तित्व की पुष्टि करते हैं। वे हमें जीवित प्राणियों के अंगों की संख्या और उनके द्वारा प्राप्त प्रावधानों और उपकारों के प्रति उनकी दया दिखाते हैं, जो सभी उनकी करुणा, दया और कृपा के साधन हैं, और उनके दरबार की ओर इशारा करते हैं। उनके दरबार में सबसे स्वीकार्य मध्यस्थ नपुंसकता, कमजोरी और दरिद्रता है। और नपुंसकता, कमजोरी और दरिद्रता का सबसे बड़ा समय बुढ़ापा है। इसलिए हमें बुढ़ापे से नाराज नहीं होना चाहिए, जो इस दरबार में एक स्वीकार्य मध्यस्थ है, बल्कि इसका स्वागत करना चाहिए।

सातवीं आशा

एक बार बुढ़ापे की शुरुआत में जब पुराने या भूतपूर्व सईद की हंसी नए सईद के रोने में बदल रही थी, अंकारा में कुछ सांसारिक सोच वाले लोगों ने, मुझे अभी भी पुराना सईद समझकर, मुझे वहाँ आमंत्रित किया, और मैं चला गया। शरद ऋतु के अंत में मैं शहर के किले की चोटी पर चढ़ गया, जो जीर्ण-शीर्ण था, और बहुत अधिक

मुझसे ज़्यादा उम्रदराज़। मुझे ऐसा लगा जैसे यह ऐतिहासिक घटनाओं से बना हो। साल के मौसम की उम्र के साथ-साथ मेरी उम्र, किले की उम्र, मानव जाति की उम्र, शानदार ओटो-मैन राज्य की उम्र, और खिलाफत का प्रतिनिधित्व करने वाली सल्तनत का अंत, और दुनिया की उम्र, इन सबने मुझे उस ऊंचे किले से अतीत की घाटियों और भविष्य के पहाड़ों की ओर सबसे दुखद, दयनीय और उदास स्थिति में देखने पर मजबूर कर दिया। मैंने खुद को अंकारा में एक बेहद अंधेरे मनःस्थिति में पाया, जो बुढ़ापे के अंधेरे की चार या पाँच परतों से घिरा हुआ था, एक के भीतर एक, और मैंने एक रोशनी, एक सांत्वना, एक उम्मीद की तलाश की।

जब मैंने सांत्वना पाने के लिए दाईं ओर, यानी अतीत की ओर देखा, तो वह मुझे मेरे पिता और पूर्वजों तथा मानव जाति के विशाल कब्रिस्तान के रूप में दिखाई दिया, जिससे मुझे सांत्वना के बजाय निराशा हुई। इलाज की तलाश में मैंने भविष्य की ओर बाईं ओर देखा। यह मेरे लिए, मेरे समकालीनों और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक विशाल, अंधकारमय कब्रिस्तान के रूप में दिखाई दिया, जो राहत और सांत्वना के स्थान पर आतंक दे रहा था। बाईं और दाईं ओर जो था, उससे भयभीत होकर मैंने वर्तमान समय की ओर देखा। मेरी असावधान और ऐतिहासिक दृष्टि को वह एक ताबूत के रूप में दिखाई दिया, जिस पर मेरी अर्ध-मृत, पीड़ित लाश थी, जो मरने के लिए बेताब संघर्ष कर रही थी। फिर, उस दिशा से भी निराश होकर, मैंने अपना सिर उठाया और अपने जीवन के पेड़ के शीर्ष पर देखा,

इस दिशा से भी मुझे भय महसूस हुआ, मैंने अपना सिर नीचे किया, अपने जीवन के वृक्ष के नीचे, उसकी जड़ों की ओर देखा। मैंने देखा कि मेरे पैरों के नीचे की हड्डियों की धूल मेरी रचना की धूल में मिल गई थी। उससे भी कोई इलाज नहीं मिला; इसने मेरे दर्द को दोगुना कर दिया।

फिर मुझे पीछे देखने पर मजबूर होना पड़ा। मैंने देखा कि यह अस्थायी दुनिया, जिसका कोई आधार नहीं है, शून्यता की घाटियों और अस्तित्वहीनता के अंधेरे में घूम रही थी। मैं अपने दर्द के लिए दवा की तलाश कर रहा था, लेकिन यह दृश्य इसे और भी बदतर बना रहा था। उस दिशा में कोई अच्छाई न देखकर, मैंने अपने सामने देखा, मैंने अपनी नज़र आगे की ओर घुमाई। मैंने देखा कि एक कब्र के मैदान का प्रवेश द्वार मेरे सामने था, जो मेरे रास्ते में खुला था और मुझे घूर रहा था, उसका मुंह खुला हुआ था। इसके पीछे का राजमार्ग अनंत काल की ओर जाता था और उस पर यात्रा करने वाले काफिले ने मेरी नज़र को आकर्षित किया। और इन छह दिशाओं से आने वाली भयावहता का सामना करने के लिए मेरे पास जो कुछ भी है वह मेरा समर्थन और बचाव है

केवल एक सीमित, महत्वहीन इच्छाशक्ति। चूँकि वह इच्छाशक्ति, जो उन असंख्य शत्रुओं और हानिकारक चीज़ों के विरुद्ध एकमात्र मानवीय बचाव है, दोषपूर्ण, कम दूरी की और कमज़ोर है, जिसमें सृजन करने की कोई शक्ति नहीं है, इसलिए यह ग्रहणशील और प्रतिबद्ध होने के अलावा कुछ भी करने में सक्षम नहीं है। यह न तो पीछे मुड़कर अतीत में प्रवेश कर सकती है ताकि वहाँ से उत्पन्न होने वाले दुखों को शांत कर सके और न ही यह भविष्य में प्रवेश कर सकती है ताकि वहाँ से आने वाले भय को रोक सके। मैंने देखा कि अतीत और भविष्य से संबंधित मेरी पीड़ाएँ और महत्वाकांक्षाएँ

कोई फायदा नहीं हुआ।

जब मैं इन छह दिशाओं से आने वाली भयावहता, एकांत, अंधकार और निराशा से जूझ रहा था, तो अचानक ही कुरान के चमत्कारी भावों के आकाश में चमकने वाले ईमान के प्रकाश मेरी सहायता के लिए आ गए। उन्होंने उन छह दिशाओं को इस हद तक रोशन कर दिया कि अगर मैंने जो भयावहता और अंधकार देखा था वह सौ गुना बढ़ जाता, तो भी वे प्रकाश उन्हें दूर करने के लिए पर्याप्त होते। एक-एक करके उन्होंने इन सभी भयावहताओं को आराम और एकांत को संगति में बदल दिया। यह इस प्रकार था:

विश्वास ने अतीत के विशाल कब्रिस्तान के उजाड़ दृश्य को खंडित कर दिया तथा पूर्ण निश्चय के साथ दिखाया कि यह मित्रों का एक परिचित और प्रबुद्ध समूह है।

विश्वास ने भविष्य को, जो असावधान आँखों को एक विशाल कब्रिस्तान के रूप में दिखाई देता है, निःसंदेह प्रसन्नता के रमणीय महलों में दयालु ईश्वर का भोज है।

ईमान ने वर्तमान समय को ताबूत के रूप में देखा है, जैसा कि असावधान आँखों को दिखाई देता है, और निश्चय ही यह दिखा दिया है कि यह परलोक के लिए व्यापार का स्थान और दयालु अल्लाह का शानदार अतिथिगृह है।

विश्वास ने निश्चयता से दिखाया कि जीवन के वृक्ष के शीर्ष पर एकमात्र फल एक लाश नहीं थी, जैसा कि असावधान आँखों को लगता है, बल्कि यह मेरी आत्मा है, जो अनन्त जीवन के लिए बनाई गई थी और जो पाने की क्षमता से संपन्न थी।

शाश्वत खुशी की चाहत में, वह अपना जीर्ण-शीर्ण घर छोड़कर सितारों की सैर पर निकल पड़ी है।

अपने अर्थ और विषयवस्तु के माध्यम से, विश्वास ने दिखाया कि मेरी हड्डियां और धूल, जो मेरी रचना का स्रोत थीं, पैरों तले रौंदी गई बेकार धूल नहीं थीं, बल्कि यह मिट्टी ईश्वरीय दया का द्वार और स्वर्ग के द्वार के सामने एक पर्दा थी।

कुरान के माध्यम से ईमान ने यह भी दिखाया कि दुनिया, जो मेरी असावधान आँखों को शून्यता की घाटियों और अस्तित्वहीनता के अंधेरे में मेरे पीछे घूमती हुई दिखाई दे रही थी, वह सनातन सर्व-प्रार्थना के संदेशों और ईश्वर की दिव्य महिमा की कढ़ाई के पन्नों से बनी है। जब वे (ये संदेश और पन्ने, यानी दुनिया में मौजूद सभी चीजें और घटनाएँ) अपना काम पूरा कर लेती हैं, अपनी विषय-वस्तु और अर्थ प्रदर्शित करती हैं, तो वे एक के बाद एक दुनिया से विदा हो जाती हैं, और अपने अस्तित्व में अपने परिणामों को अपनी जगह पर छोड़ जाती हैं। पूरी निश्चितता के साथ दुनिया की असली प्रकृति ज्ञात हो जाती है।

कुरान की रोशनी के ज़रिए ईमान ने दिखाया कि कब्र जो एक निश्चित दूरी से खुली आँखों से मुझे देख रही है, वह किसी कुएँ का मुँह नहीं है, बल्कि प्रकाश की दुनिया का दरवाज़ा है, और कब्र से परे अनंत काल तक जाने वाला राजमार्ग शून्यता और अस्तित्वहीनता की ओर नहीं बल्कि अस्तित्व और प्रकाश के क्षेत्र और शाश्वत सुख की ओर ले जाता है। चूँकि ईमान ने इस सत्य को पूरी तरह से निश्चितता के साथ दिखाया है, इसलिए यह मेरे दुखों के लिए एक इलाज और मरहम दोनों है।

इसके अलावा, चुनने और लागू करने की बहुत मामूली क्षमता के स्थान पर, विश्वास उस सीमित मानव इच्छाशक्ति को एक दस्तावेज देता है जिसके माध्यम से वह एक अनंत शक्ति पर भरोसा कर सकता है और इन असंख्य दुश्मनों और अंधकार के आवरणों के सामने असीम दया से जुड़ सकता है। वास्तव में, विश्वास ही मानव इच्छाशक्ति के हाथ में वह दस्तावेज है।

यद्यपि इच्छाशक्ति का यह मानवीय साधन अपने आप में अल्प-सीमा वाला, दुर्बल और अपूर्ण है, फिर भी—

ठीक वैसे ही जैसे जब एक सैनिक राज्य की ओर से अपनी सीमित क्षमताओं का उपयोग करता है, तो वह उन क्षमताओं से कहीं बढ़कर कर्तव्यों का पालन करता है - विश्वास के माध्यम से, यदि उस सीमित इच्छाशक्ति का उपयोग सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम पर और उसके कार्य में किया जाता है

, यह पाँच सौ वर्ष तक चलने जितना बड़ा स्वर्ग भी प्राप्त कर सकता है।

विश्वास शरीर से इच्छाशक्ति की लगाम ले लेता है, जो भूतकाल या भविष्यकाल में प्रवेश नहीं कर सकती, और उसे हृदय और आत्मा को सौंप देता है। चूँकि आत्मा और हृदय के जीवन का क्षेत्र शरीर की तरह वर्तमान समय तक सीमित नहीं है, और चूँकि यह भूतकाल से लेकर भविष्यकाल तक के बहुत से वर्षों को अपने में समाहित करता है, इसलिए इच्छाशक्ति अब सीमित नहीं रहती और सार्वभौमिक हो जाती है। जिस प्रकार विश्वास की शक्ति से यह भूतकाल की सबसे गहरी घाटियों में प्रवेश कर सकती है और भूतकाल से उत्पन्न दुखों के अंधकार को दूर कर सकती है, उसी प्रकार विश्वास के प्रकाश से यह पृथ्वी के सबसे दूर के पहाड़ों तक भी पहुँच सकती है।

भविष्य को समझें और वहां से उत्पन्न होने वाली आशंकाओं और चिंताओं को दूर करें।

और इसलिए, मेरे बुज़ुर्ग भाई-बहन जो मेरी तरह बुढ़ापे की तकलीफ़ों से जूझ रहे हैं! चूँकि, परमेश्वर की स्तुति हो, हम विश्वासी हैं, और विश्वास में बहुत सारे प्रकाश फैलाने वाले, आनंदमय, सुखद और संतुष्टिदायक ख़ज़ाने हैं; और चूँकि हमारा बुढ़ापा हमें उन ख़ज़ानों की सामग्री में और भी ज़्यादा ले जाता है, तो, निश्चित रूप से, विश्वास के साथ आने वाले बुढ़ापे के बारे में शिकायत करने के बजाय, हमें इसके लिए अंतहीन धन्यवाद देना चाहिए।

आठवीं आशा

जिस समय मेरे सिर पर बुढ़ापे की निशानी सफ़ेद बाल आने लगे थे, मैं प्रथम विश्व युद्ध की उथल-पुथल के बाद युद्ध बंदी (रूस में) के रूप में कैद से इस्तांबुल लौटा और इसने जवानी की गहरी नींद को और भी भारी कर दिया। मुझे जो महान यश और सम्मान दिया गया, उसके अलावा खलीफा, शेखुल-इस्लाम और सेना के कमांडर से लेकर धार्मिक स्कूलों के छात्रों तक सभी ने मुझे जो सम्मान और सम्मान दिया, वह मेरे हक़ से कहीं बढ़कर था, जवानी का नशा और मेरी स्थिति से पैदा हुई मनोदशा ने जवानी की नींद को इतना भारी कर दिया कि मुझे दुनिया शाश्वत और खुद को उसमें इस तरह जकड़ा हुआ दिखाई देने लगा जैसे अब मौत नहीं है।

फिर, रमज़ान के पवित्र महीने में एक दिन, मैं क़ुरआन के सच्चे पाठकों को सुनने के लिए इस्तांबुल की बायज़ीद मस्जिद गया। पाठकों की ज़बानों के ज़रिए, चमत्कारी अभिव्यक्ति वाला क़ुरआन अपने शानदार स्वर्गीय संबोधन के साथ यह आदेश दे रहा था, हर आत्मा को मृत्यु का स्वाद चखना है (3: 185), जो सबसे शक्तिशाली रूप से मनुष्य और सभी जीवित प्राणियों की अपरिहार्य मृत्यु की घोषणा करता है। यह मेरे कानों में घुस गया, और मेरे दिल के केंद्र में बस गया, मेरी लापरवाही और नशे की बेहद मोटी परतों को तोड़ दिया। मैं मस्जिद से बाहर चला गया। नींद की बेहोशी के कारण, जो इतने लंबे समय से मेरे सिर में बसी हुई थी जिसमें अब एक तूफान चल रहा था और आग जल रही थी जिससे धुआँ निकल रहा था, कई दिनों तक मैं खुद को एक नाव की तरह देखता रहा जो अपना रास्ता भूल गई थी। हर बार जब मैं आईने में देखता, तो सफेद बाल मुझसे कहते, "सावधान रहो!" और इस तरह वास्तविकता मेरे सफेद बालों की चेतावनियों के माध्यम से खुद को दिखाती थी।

मैंने देखा कि मेरी जवानी, जिसने मुझे अपने सुखों से इतना मोहित कर लिया था और जिस पर मैंने इतना भरोसा किया था, मुझसे विदा ले रही थी और यह सांसारिक जीवन जिसमें मैं इतने प्रेम से लिप्त था, फीका पड़ने लगा था; वह दुनिया जिसे मैं इतना प्यार करता था और जिसके साथ मेरा इतना गहरा संबंध था, मुझे विदा कर रही थी, मुझे चेतावनी दे रही थी कि मैं इस गेस्टहाउस को छोड़ दूंगा। यह खुद भी विदा लेते हुए, विदा होने की तैयारी कर रही थी। कविता की व्यापक सामग्री से, प्रत्येक आत्मा स्वाद लेने के लिए बाध्य है

मृत्यु के बारे में सोचते हुए, मेरे हृदय में निम्नलिखित अर्थ उभर रहे थे: मानवजाति एक आत्मा है - यह पुनर्जीवित होने के लिए मर जाएगी; पृथ्वी एक आत्मा है - यह शाश्वत रूप धारण करने के लिए मर जाएगी; और संसार भी एक आत्मा है - यह परलोक का रूप धारण करने के लिए मर जाएगी।

अतः इस अवस्था में रहते हुए मैंने अपनी स्थिति पर विचार किया।
मैंने देखा कि जवानी जो सुखों की खान है, जा रही थी और उसकी जगह बुढ़ापा ले रहा था - दुखों का स्रोत। जीवन जो इतना चमकता था, विदा हो रहा था और मृत्यु जो अंधकारमय और भयावह प्रतीत होती है, उसकी जगह लेने की तैयारी कर रही थी। प्यारा संसार, जिसे शाश्वत माना जाता है और जो असावधान लोगों का प्रिय है, अपने अंत की ओर तेजी से बढ़ रहा था।

खुद को धोखा देने और अपने मन को एक बार फिर से लापरवाही में डुबाने के लिए, मैंने इस्तांबुल में अपने सामाजिक पद के सुखों पर विचार किया, जो मेरे हक से कहीं ज़्यादा था, लेकिन यह बिल्कुल भी काम का नहीं था। लोगों का सारा सम्मान, ध्यान और सांत्वना मुझे केवल कब्र के दरवाजे तक ही मिल सकती थी, जो मेरे बहुत करीब थी; वहाँ यह बुझ जाएगी। और जब से मैंने महिमा और प्रसिद्धि के अलंकृत आवरण के नीचे एक घृणित पाखंड, ठंडा दिखावा, आत्म-प्रशंसा और अस्थायी मूर्खता देखी, जो कि प्रसिद्धि के पीछे भागने वालों का सबसे बड़ा लक्ष्य है, मैंने समझा कि ये चीजें जो मुझे अब तक भ्रमित कर रही थीं, मेरे लिए कोई सांत्वना नहीं दे सकती थीं और उनमें कोई प्रकाश नहीं था।

मैं फिर बायजीद मस्जिद में कुरान की तिलावत करने वालों की ओर मुड़ा ताकि कुरान की स्वर्गीय शिक्षा सुन सकूं और एक बार फिर जागृत हो सकूं। फिर इसकी उच्चता से

निर्देश मैंने ऐसे पवित्र आदेशों के माध्यम से खुशखबरी सुनी और उन लोगों को खुशखबरी दो जो विश्वास करते हैं...

कुरान द्वारा प्रदान की गई किरणों के माध्यम से, मैंने सांत्वना, आशा और प्रकाश की तलाश की, न कि उन मामलों से परे, जिन्होंने मुझे भय, निराशा और निराशा में डाल दिया था। सर्वशक्तिमान ईश्वर का लाख-लाख शुक्र है, मैंने पीड़ा के भीतर ही इलाज पाया, मैंने अंधकार के भीतर ही प्रकाश पाया, और मैंने भय के भीतर ही सांत्वना पाई।

सबसे पहले, मैंने मौत का चेहरा देखा, जो हर किसी को डराता है और जिसे सबसे भयानक चीज़ माना जाता है। कुरान की रोशनी के ज़रिए मैंने देखा कि हालाँकि मौत का पर्दा काला, अंधेरा और बदसूरत है, लेकिन ईमान वालों के लिए इसका असली चेहरा चमकदार और खूबसूरत है। हमने इस सच्चाई को रिसाले-ए-नूर के कई हिस्सों में काफ़ी हद तक व्यक्त किया है। उदाहरण के लिए, जैसा कि हमने आठवें शब्द और बीसवें अक्षर में समझाया है, मौत विलुप्ति और शाश्वत अलगाव नहीं है; बल्कि यह शाश्वत जीवन का परिचय है, इसकी शुरुआत है। यह जीवन के कर्तव्यों की कठिनाइयों से आराम है, एक विमुद्रीकरण है। यह निवास का परिवर्तन है। यह अपने दोस्तों के कारवां से मिलना है जो पहले से ही कब्र की मध्यवर्ती दुनिया में चले गए हैं, इत्यादि। मैंने मौत को देखा

इन जैसी वास्तविकताओं के माध्यम से सच्चा, सुंदर चेहरा। यह डर के साथ नहीं था, बल्कि एक निश्चित तड़प के साथ था कि मैंने मौत का चेहरा देखा। वास्तव में, एक तरह से, यह तड़प के साथ था, और मुझे सूफियों के "मृत्यु के चिंतन" का कुछ अर्थ समझ में आया।

फिर मैंने अपनी विदा हुई जवानी को देखा, जो असावधानी में बीती थी - वह जवानी जो हर किसी को मोहित कर लेती है और जिसके चले जाने पर लोग रो पड़ते हैं।
मैंने देखा कि उसके खूबसूरत अलंकृत वस्त्र के भीतर सबसे बदसूरत, सबसे नशे में धुत्त और स्तब्ध चेहरा छिपा था। अगर मैंने कुछ सालों तक नशे में धुत्त और खुश रहने के बदले में उसका असली स्वरूप नहीं जाना होता। अगर मैं सौ साल दुनिया में रहता, तो यह मुझे इतने सालों तक रोने पर मजबूर कर देता। ऐसे ही एक व्यक्ति ने विलाप करते हुए कहा, "अगर एक दिन मेरी जवानी लौट आती, तो मैं उसे बताता कि बुढ़ापे ने मुझे क्या-क्या दुख दिए हैं।"

दरअसल, जो बुज़ुर्ग लोग, उस व्यक्ति की तरह, जवानी के असली स्वरूप को नहीं जानते, वे अपनी जवानी के बारे में सोचते हैं और पछतावे और लालसा से रोते हैं। लेकिन स्वस्थ मन और दिल वाले ईमान वालों द्वारा इबादत, अच्छे कामों और आख़िरत के लिए व्यापार में बिताई गई जवानी कमाई का सबसे शक्तिशाली साधन और अच्छे काम करने का सबसे सुखद और सुखद साधन है। जो लोग अपने धार्मिक कर्तव्यों को जानते हैं और अपनी जवानी को गलत तरीके से नहीं बिताते हैं, उनके लिए यह एक अनमोल और आनंददायक ईश्वरीय अनुग्रह है। जब इसे ईमानदारी, विनम्रता और ईश्वर-चेतना में नहीं बिताया जाता है, तो जवानी कई तरह के जोखिम पैदा करती है।

जब इसे अनियंत्रित किया जाता है, तो यह शाश्वत सुख और इस संसार में जीवन को नष्ट कर देता है। दरअसल, कुछ वर्षों के युवापन के सुखों के बदले में बुढ़ापे में कई वर्षों तक दुख और पीड़ा का सामना करना पड़ता है।

चूँकि युवावस्था ज़्यादातर लोगों के लिए हानिकारक होती है, इसलिए हम बुज़ुर्ग लोगों को भगवान का शुक्रिया अदा करना चाहिए कि हम इसके खतरों और नुकसान से बच गए हैं। हर चीज़ की तरह, युवावस्था के सुख क्षणभंगुर होते हैं। अगर युवावस्था को पूजा-पाठ और अच्छे कामों में बिताया जाए, तो उसके फल हमेशा बने रहते हैं और अनंत जीवन में युवावस्था पाने का साधन बनेंगे।

इसके बाद, मैंने दुनिया को देखा, जिसे ज़्यादातर लोग गहरे लगाव के साथ प्यार करते हैं। कुरान की रोशनी में, मैंने देखा कि तीन सार्वभौमिक दुनियाएँ हैं, एक दूसरे के भीतर:

पहला दिव्य नामों से संबंधित है; यह उनका दर्पण है।

दूसरा आख़िरत से संबंधित है; यह एक कृषि योग्य वस्तु है

इसके लिए मैदान तैयार करें।

तीसरा संसारी लोगों से सम्बन्धित है; यह असावधान लोगों का क्रीड़ास्थल है।

इसके अलावा, इस दुनिया के भीतर हर किसी की अपनी एक खास दुनिया है। ऐसा लगता है जैसे इंसानों की संख्या के बराबर एक के अंदर एक दुनियाएँ हैं। लेकिन हर किसी की निजी दुनिया का आधार उसका अपना जीवन है।

जब उनके शरीर नष्ट हो जाते हैं, तो उनकी दुनिया ढह जाती है

उनके सिर पर, और यह उनके लिए प्रलय का दिन है। चूँकि असावधान लोग यह नहीं समझते कि उनकी दुनिया ऐसी प्रकृति की है, जो इतनी जल्दी नष्ट होने के लिए बाध्य है, वे इसे सामान्य दुनिया की तरह ही शाश्वत मानते हैं और इसकी पूजा करते हैं। मैंने मन ही मन सोचा, "मेरी भी एक निजी दुनिया है जो अन्य लोगों की दुनिया की तरह जल्दी ही ढह जाएगी। मेरी इस निजी दुनिया, मेरे इस छोटे से जीवन का क्या मूल्य है?"

कुरान की रोशनी से मैंने देखा कि मेरे और बाकी सभी के लिए यह दुनिया राहगीरों के लिए सड़क पर बनाया गया एक अस्थायी बाज़ार है, एक गेस्टहाउस जो हर दिन भरता और खाली होता है, शाश्वत लेखक की एक हमेशा नवीनीकृत नोटबुक है, जिसमें वह लगातार लिखता और मिटाता है; हर वसंत उसका एक सुनहरा पत्र है और हर गर्मी एक अच्छी तरह से रचित स्तुति है। यह उन दर्पणों से बना है जो सर्व-महान निर्माता के नामों की हमेशा नवीनीकृत अभिव्यक्तियों को दर्शाते हैं; यह परलोक का बीज है, ईश्वरीय दया का फूल है, और एक अस्थायी कार्यशाला है जो ऐसी पटियाएँ बनाती है जिन्हें अनंत काल के क्षेत्र में प्रदर्शित किया जाएगा।

मैं सृष्टिकर्ता को एक लाख धन्यवाद देता हूँ

हे महाराज, किसने दुनिया को इस तरह बनाया है। मैंने समझा कि जबकि मानव जाति को

संसार के सुन्दर, आन्तरिक चेहरों के प्रति प्रेम, जो परलोक और ईश्वरीय नामों की ओर देखते हैं, बहुतों ने उस प्रेम को उसके क्षणभंगुर, कुरूप, हानिकारक, लापरवाह कार्यों पर व्यर्थ कर दिया है।

कम चेहरा, और इस तरह हदीस का अर्थ समझ में आया, "इस दुनिया की मोहब्बत सभी ग़लतियों की जड़ है।"9

और इसलिए, बुज़ुर्ग भाइयों और बहनों, मैंने इस सच्चाई को बुद्धिमानी भरे क़ुरआन की रोशनी से समझा और बुढ़ापे और ईमान की चेतावनियों ने मेरी आँखें खोल दीं; मैंने इसे रिसाले-ए-नूर के कई हिस्सों में निर्णायक सबूतों के साथ साबित किया है। मुझे एक सच्चा सुकून, शक्तिशाली उम्मीद और चमकती हुई रोशनी मिली है। मैं खुश हूँ कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ; और मैं खुश हूँ कि मेरी जवानी चली गई। तुम भी ऐसा ही करो: रोओ मत, बल्कि शुक्र अदा करो। चूँकि ईमान है और चूँकि सच्चाई यही है, इसलिए ग़ाफ़िलों को रोना चाहिए और गुमराहों को विलाप करना चाहिए।

नौवीं आशा

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान मैं युद्ध बंदी के रूप में रूस के उत्तर-पूर्वी भाग के कोस्तुरमा प्रांत में था।
वहाँ प्रसिद्ध वोल्गा नदी के किनारे तातारों की एक छोटी सी मस्जिद थी। मैं अपने दोस्तों, दूसरे अधिकारियों के बीच थक गया था। मैं एकांत चाहता था, फिर भी मैं बिना अनुमति के बाहर नहीं घूम सकता था।

फिर उन्होंने मुझे वोल्गा के किनारे स्थित उस छोटी मस्जिद में तातार क्वार्टर में जमानत पर छोड़ दिया। मैं मस्जिद में अकेला रहता था। वसंत करीब था। मैं लंबी-लंबी रातों में काफी देर तक जागता रहता था।

9 अल-बहाकी, शुआब अल-इमान, 7:338; अल-मुंधिरी, अत-तरघिब वत-तारहिब, 3:178। (ट्र.)

उस उत्तरी भूमि का। उस अंधेरे निर्वासन में उन अंधेरी रातों के दौरान वोल्गा की दयनीय छपाक और बारिश की चलती हुई फुहार और हवा के उदास झोंके ने मुझे अस्थायी रूप से असावधानी की गहरी नींद से जगा दिया। मैं अभी तक खुद को बूढ़ा नहीं मानता था, लेकिन जिन्होंने विश्व युद्ध का अनुभव किया था उन्हें बूढ़ा माना जाता था। क्योंकि वे ऐसे दिन थे, मानो कविता के अर्थ को प्रकट करते हुए, एक दिन जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा (73: 17), बच्चों को भी बूढ़ा बना दिया। इसलिए, हालांकि मैं चालीस साल का था, मुझे ऐसा लगता था जैसे मैं अस्सी का हूँ। उस दुखद निर्वासन और उदासी के दौरान उन लंबी, अंधेरी रातों में, मुझे जीवन और अपनी मातृभूमि के लिए निराशा महसूस हुई। अपनी शक्तिहीनता और अकेलेपन के सामने, मेरी आशा टूट गई।

फिर जब मैं इसी हालत में था, तो हिकमत वाला कुरआन मेरी मदद के लिए आया। मेरी ज़बान ने कहा, " हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है, और वह कितना अच्छा रक्षक है" (3:173) और रोते हुए मेरा दिल चिल्लाया:

> मैं अजनबी हूँ, मैं अकेला और कमज़ोर हूँ, और मैं शक्तिहीन हूँ:
>
> हे मेरे परमेश्वर! मैं दया की भीख मांगता हूं, क्षमा मांगता हूं, और तेरे दरबार से सहायता की गुहार लगाता हूं!

और, अपने वतन के पुराने दोस्तों के बारे में सोचते हुए, और खुद को नियाज़ी की तरह निर्वासन में मरने की कल्पना करते हुए
मिसरी, मैंने कहा:

> संसार के दु:ख को त्यागकर,
>
> शून्य में उड़ान भरते हुए,

निरंतर उत्साह के साथ उड़ते हुए,

मैं हर साँस में पुकारता हूँ, मित्र! मित्र!

मेरी आत्मा अपने मित्रों को खोज रही थी।

किसी भी मामले में, निर्वासन में उस लंबी, उदास, दयनीय, वियोग-पीड़ित रात में मेरी ज़रूरत और कमज़ोरी ईश्वरीय न्यायालय में इतनी शक्तिशाली मध्यस्थ और साधन बन गई कि अब भी मुझे इस पर आश्चर्य होता है। क्योंकि, कई दिनों बाद, मैं एक बेहद अप्रत्याशित तरीके से, अपने आप, रूसी नहीं जानते हुए, उस दूरी को पार करके भाग गया, जिसे पैदल चलने में एक साल लग जाता। मैं ईश्वरीय कृपा के माध्यम से एक अद्भुत तरीके से बच गया, जो मेरी ज़रूरत और नपुंसकता के जवाब के रूप में आया।

फिर, वारसॉ और ऑस्ट्रिया से होते हुए मैं इस्तांबुल पहुंचा। इस तरह से, इतनी आसानी से बच जाना, बहुत ही असाधारण बात थी। मैंने लंबी उड़ान इतनी आसानी और सुविधा के साथ पूरी की कि शायद कोई रूसी-भाषी, सबसे साहसी और सबसे चालाक व्यक्ति भी ऐसा करने में सक्षम नहीं होता।

वोल्गा के तट पर स्थित मस्जिद में बिताई गई उस रात ने मुझे यह निर्णय लेने पर मजबूर कर दिया कि मैं अपना शेष जीवन गुफाओं में बिताऊंगा।

यह काफी है कि मैं लंबे समय से लोगों के सामाजिक जीवन में घुल-मिल गया हूँ। चूँकि, अंततः, मैं अकेले ही कब्र में जाऊँगा, इसलिए अब से मैं एकांत का चयन करूँगा ताकि मैं एकांत में रह सकूँ।

अकेलेपन का आदी.

लेकिन, अफसोस की बात है कि ये बेकार की चीजें हैं, जैसे इस्तांबुल में कई और महत्वपूर्ण दोस्त होना, और वहां की चमकदार सांसारिक जिंदगी, और विशेष रूप से प्रसिद्धि और सम्मान

मुझे जो दिया गया वह मेरे हक़ से कहीं ज़्यादा था, जिससे मैं कुछ समय के लिए अपना फ़ैसला भूल गया। ऐसा लगा जैसे निर्वासन की वह रात मेरी ज़िंदगी की आँख की पुतली और परितारिका थी, और इस्तांबुल का चमकता हुआ सफ़ेद दिन, उसका प्रकाशहीन, सफ़ेद हिस्सा था, जिससे वह भविष्य को नहीं देख सकता था, और फिर से सो गया। दो साल बाद ही ग़ौथ अल-जिलानी ने अपनी किताब फ़ुतुहुल-ग़ैब ("अदृश्य के बारे में विजय") के साथ एक बार फिर मेरी आँखें खोलीं ।

और इसलिए, वृद्ध पुरुषों और महिलाओं! जान लें कि बुढ़ापे की कमजोरी और शक्तिहीनता ईश्वरीय कृपा और दया को आकर्षित करने का साधन है। जैसा कि मैंने स्वयं में अनेक अवसरों पर देखा है, पृथ्वी पर दया का प्रकटीकरण इस सत्य को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है। क्योंकि सबसे शक्तिहीन और कमजोर प्राणी बच्चे हैं। लेकिन यह वे ही हैं जिन्हें दया की सबसे मधुर और सबसे सुंदर अभिव्यक्ति का आशीर्वाद प्राप्त है। एक पेड़ की चोटी पर घोंसले में एक युवा पक्षी की शक्तिहीनता उसकी माँ को दया की अभिव्यक्ति के रूप में एक आज्ञाकारी सैनिक की तरह नियुक्त करती है। उसकी माँ चारों ओर उड़ती है और उसके लिए भोजन लाती है। जैसे ही उसके पंख मजबूत हो जाते हैं और बच्चा अपनी शक्तिहीनता को भूल जाता है, उसकी माँ कहती है, "जाओ और अपना भोजन स्वयं खोजो!" और फिर उसकी बात नहीं सुनती।

जिस तरह दया की यह सच्चाई बहुत छोटे बच्चों के लिए लागू होती है, उसी तरह यह बुज़ुर्गों के लिए भी लागू होती है, जो कमज़ोरी और नपुंसकता में बच्चों के समान होते हैं।

मेरे पास अनेक अनुभव हैं, जिनसे मुझे यह निश्चित विश्वास हो गया है कि जिस प्रकार शिशुओं को उनकी शक्तिहीनता के कारण उनकी माताओं के स्तनों से ईश्वरीय दया द्वारा अद्भुत रूप में पोषण प्राप्त होता है, उसी प्रकार विश्वास करने वाले वृद्धों को भी, जिन्होंने अबोधिता प्राप्त कर ली है, चमत्कारिक प्रचुरता के रूप में पोषण प्राप्त होता है।

हदीस का वह अंश जिसमें कहा गया है कि, "यदि झुकी हुई पीठ वाले बुजुर्ग न होते, तो विपत्तियां बाढ़ के रूप में तुम पर टूट पड़तीं"10 स्पष्ट करता है कि परिवार की समृद्धि का स्रोत उसके बुजुर्ग लोग हैं, और यह बुजुर्ग ही हैं जो परिवार को विपत्तियों से बचाते हैं।

चूँकि बुढ़ापे की कमज़ोरी और शक्तिहीनता ईश्वरीय दया को इस हद तक आकर्षित करने का साधन है; चूँकि बुद्धिमानी भरी क़ुरान आयतों के ज़रिए कहती है कि अगर उनमें से कोई एक या दोनों तुम्हारे जीवनकाल में बुढ़ापे को प्राप्त हो जाएँ, तो उनसे (शिकायत या अधीरता के संकेत के रूप में) 'उफ़!' न कहो, न ही उन्हें दूर भगाओ; और हमेशा उनसे दयालु शब्दों में बात करो। दया के कारण विनम्रता का पंख उनके सामने रखो, और कहो: "मेरे रब, उन पर दया करो जैसे उन्होंने बचपन में मेरी देखभाल की थी (17: 23-24), बच्चों को अपने बुजुर्ग माता-पिता के प्रति दयालु और सम्मानजनक होने के लिए सबसे शानदार तरीके से पाँच तरीकों से बुलाता है; चूँकि इस्लाम धर्म फिर से आदेश देता है-

10 अत-तबरानी, अल-मुजम अल-कबीर, 22:309; अबू याला, अल-मुस्नद, 11:287. (ट्र.)

बुजुर्गों के प्रति सम्मान और करुणा; और चूँकि मानव स्वभाव भी बुजुर्गों के प्रति सम्मान और करुणा की माँग करता है, इसलिए हम बुजुर्ग लोग, युवावस्था की भूख से उत्पन्न होने वाले अस्थायी भौतिक सुखों के स्थान पर, ईश्वरीय कृपा से मिलने वाली पर्याप्त, निरंतर दया और सम्मान और कोमलता की सहज मानवीय भावनाओं और ऐसे सम्मान और करुणा से उत्पन्न होने वाली आत्मा की संतुष्टि का आनंद अवश्य लेते हैं। ऐसा होने पर, हमें अपने इस बुढ़ापे को सौ युवाओं के बदले में नहीं बदलना चाहिए। मैं आपको निश्चित रूप से बता सकता हूँ कि यदि वे मुझे पुराने या पहले वाले सईद की जवानी के दस साल दें, तो मैं उसके बदले में नए सईद के बुढ़ापे का एक साल भी नहीं दूँगा। मैं अपने बुढ़ापे से संतुष्ट हूँ, और आपको भी अपने बुढ़ापे से संतुष्ट होना चाहिए।

दसवीं आशा

रूस में कैद से लौटने के बाद इस्तांबुल में एक-दो साल तक मैं लापरवाह रहा। उन दिनों जब राजनीतिक माहौल ने मेरा ध्यान खुद से हटाकर बाहरी दुनिया की ओर खींचा, मैं एक बार एयूप सुल्तान कब्रिस्तान में एक ऊंचे स्थान पर बैठा था, जहां से गोल्डन हॉर्न दिखाई दे रहा था। मैंने इस्तांबुल के क्षितिज पर नज़र डाली। मैं अचानक ऐसी मानसिक स्थिति से घिर गया कि ऐसा लगा जैसे मेरी निजी दुनिया मर रही है और मेरी आत्मा कुछ मामलों में पीछे हट रही है। यह सोचकर कि क्या कब्रों पर लिखे शिलालेख मुझे ऐसे भ्रम दे रहे हैं, मैं पीछे हट गया।

मेरी नज़र। मैंने दूर की ओर नहीं, बल्कि कब्रिस्तान की ओर देखा। तब मेरे दिल में यह बात समा गई: "तुम्हारे आस-पास का यह कब्रिस्तान इस्तांबुल को सौ गुना ज़्यादा समेटे हुए है, क्योंकि इस्तांबुल को यहाँ सौ बार खाली किया जा चुका है। तुम अपवाद नहीं हो सकते जो उस सर्वज्ञ और शक्तिशाली के न्याय से बच सकते हो, जिसने इस्तांबुल के सभी लोगों को यहाँ डाला है। तुम भी जाओगे।"

मैं कब्रिस्तान से निकलकर उस अद्भुत अनुभव के साथ एयूप सुल्तान मस्जिद की एक छोटी सी कोठरी में दाखिल हुआ, जहाँ मैं पहले भी कई बार रुका था। मैंने खुद से सोचा: मैं तीन तरह से मेहमान हूँ: मैं इस छोटे से कमरे में मेहमान हूँ, मैं इस्तांबुल में भी मेहमान हूँ, और इस दुनिया में भी मेहमान हूँ।

एक मेहमान को अपनी यात्रा के बारे में सोचना चाहिए। जिस तरह मैं इस कमरे को छोड़ दूंगा, उसी तरह एक दिन मैं इस दुनिया को छोड़ दूंगा।

इन विचारों के बीच, मेरा दिल एक बहुत ही दयनीय, गंभीर दुःख से भर गया। क्योंकि मैं सिर्फ़ एक या दो दोस्तों को नहीं खो रहा था; मैं इस्तांबुल में अपने हज़ारों दोस्तों से अलग हो जाऊंगा, और मैं इस्तांबुल से भी अलग हो जाऊंगा, जिसे मैं बहुत प्यार करता था। और जैसे मैं इस दुनिया में लाखों दोस्तों से अलग हो जाऊंगा, वैसे ही मैं उस खूबसूरत दुनिया से भी अलग हो जाऊंगा जिसे मैं प्यार करता था और जिसके साथ मैं मोहित था। यह सोचते हुए, मैं एक बार फिर कब्रिस्तान में ऊंचे स्थान पर गया। समय-समय पर सिनेमाघर में जाकर सोचने के बाद

और सबक लें, जैसे फिल्म में मृत लोगों की तस्वीरें दिखाई जाती हैं जैसे कि वे जीवित हों, इधर-उधर घूम रहे हों, उस पल, इस्तांबुल के सभी मृतक मुझे लाशों की तरह घूमते हुए दिखाई दिए। मैंने अपनी कल्पना से कहा: चूँकि कब्रिस्तान में मौजूद कुछ लोग फिल्म के पर्दे पर चलते हुए दिखाए गए लोगों की तरह घूमते हुए दिखाई देते हैं, इसलिए आपको उन लोगों को भी देखना चाहिए जो भविष्य में कब्रिस्तान में प्रवेश करने वाले हैं जैसे कि वे उसमें प्रवेश कर चुके हैं - वे भी लाशें हैं, घूम रहे हैं।

अचानक, कुरान की रोशनी और ग़ौस अल-आज़म, शेख अल-जिलानी के मार्गदर्शन के ज़रिए, मेरी दु:ख भरी स्थिति एक खुशहाल और आनंदमय स्थिति में बदल गई। यह कुछ इस तरह था:

उस दुखद स्थिति में, कुरान से आती रोशनी ने मुझे याद दिलाया: जब आप रूस के उत्तर-पूर्व में कोस्तुरमा में निर्वासन में थे, तो आपके कुछ अधिकारी मित्र थे। आप जानते थे कि वे मित्र आपके लिए कुछ करेंगे।

एक दिन इस्तांबुल जाओ। अगर उनमें से किसी ने तुमसे पूछा होता, "क्या तुम इस्तांबुल जाओगे, या तुम यहीं रहोगे?" निश्चित रूप से, अगर तुम्हारे पास थोड़ी भी बुद्धि होती, तो तुम खुशी-खुशी इस्तांबुल जाना चुनते। क्योंकि एक हजार एक दोस्तों में से नौ सौ निन्यानबे पहले से ही इस्तांबुल में थे। केवल एक या दो वहाँ रह गए, और वे भी एक दिन इस्तांबुल चले जाएँगे। इस्तांबुल जाना तुम्हारे लिए कोई दुखद प्रस्थान या दुखद वियोग नहीं होगा। इसके अलावा, आखिरकार, तुम यहाँ आ गए और क्या तुम ऐसा करके खुश नहीं थे? तुम मुक्त हो गए

उस दुश्मन देश की लंबी, अंधेरी रातों और ठंडी, तूफ़ानी सर्दियों से बचकर तुम इस खूबसूरत इस्तांबुल में आए, जो धरती पर जन्नत जैसा था।

इसी तरह, बचपन से लेकर आज तक, आपके चाहने वालों में से सौ में से निन्यानबे लोग कब्रिस्तान चले गए हैं; यह आपके लिए भयावह है। आपके कुछ ही दोस्त हैं जो अभी भी इस दुनिया में हैं, और वे भी वहाँ चले जाएँगे। इस दुनिया में आपकी मृत्यु अलगाव नहीं है; यह एक पुनर्मिलन है - उन सभी दोस्तों के साथ पुनर्मिलन। वे - वे हमेशा जीवित रहने वाली आत्माएँ - मिट्टी के नीचे अपने जीर्ण-शीर्ण आवास छोड़ गई हैं, कुछ सितारों के इर्द-गिर्द यात्रा कर रहे हैं और कुछ मध्यवर्ती क्षेत्र के स्तरों से गुज़र रहे हैं।

कुरान और ईमान इस सत्य को इतने निश्चित और विश्वसनीय ढंग से प्रदर्शित करते हैं कि जब तक किसी के दिल और आत्मा में पूरी तरह से कमी न हो, या जब तक किसी के दिल में गुमराही ने दम न घोंट दिया हो, तब तक इस पर विश्वास करना चाहिए जैसे कि वह इसे देख रहा हो। क्योंकि, सबसे निश्चित रूप से और स्वयंसिद्ध रूप से, सर्व-उदार और सर्व-दयालु निर्माता, जो इस दुनिया को अपने अनगिनत उपकारों और उपहारों से सजाता है और इस तरह अपने प्रभुत्व को सर्व-उदार और देखभाल करने वाले तरीके से प्रदर्शित करता है, यहां तक कि बीजों जैसी कम से कम महत्वपूर्ण चीजों को भी संरक्षित करता है, मानवता को नष्ट या बर्बाद नहीं करेगा - जो कि उसकी रचनाओं में सबसे परिपूर्ण, सबसे व्यापक और सबसे महत्वपूर्ण और प्रिय है - इसे अनंत विलुप्ति या उन लोगों से कभी न खत्म होने वाले अलगाव में भेजकर जिन्हें वे प्यार करते हैं।

जैसा कि दसवें और उनतीसवें वचनों में सिद्ध है, जैसे किसान धरती पर बीज बिखेरता है, वैसे ही दयालु सृष्टिकर्ता अपने उस प्रिय प्राणी को अस्थायी रूप से धरती के नीचे ले जाता है, जो दया का द्वार है, ताकि दूसरे जीवन में अंकुर उत्पन्न कर सके।

और इस तरह, कुरान से यह याद दिलाने के बाद, कब्रिस्तान मेरे लिए इस्तांबुल से ज़्यादा प्यारा हो गया। एकांत और एकांत मेरे लिए लोगों के साथ बातचीत और संगति से ज़्यादा आनंददायक हो गया।

और मैंने बोस्फोरस पर सरीयर में अपने लिए एकांत स्थान पाया। वहाँ, ग़ौथ अल-आज़म अल-जिलानी, ईश्वर उनसे प्रसन्न हों, अपने फ़ुतुहुल-ग़ैब ("अदृश्य के बारे में खोज") के साथ मेरे लिए एक गुरु, डॉक्टर और मार्गदर्शक बन गए, और इमाम रब्बानी, ईश्वर उनसे प्रसन्न हों, अपने मेकतुबत ("पत्र") के साथ एक साथी, एक कोमल हृदय वाले दोस्त और शिक्षक बन गए। तब मैं बेहद खुश था कि मैं बुढ़ापे में प्रवेश कर चुका था, आधुनिक सभ्यता के सुखों को त्याग चुका था, और सामाजिक जीवन से दूर हो चुका था। मैंने ईश्वर को धन्यवाद दिया।

और इसलिए, मेरे जैसे बुढ़ापे में प्रवेश करने वाले सम्मानित लोग और अक्सर मौत को उसकी चेतावनियों के माध्यम से याद करते हैं! कुरान में ईमान की शिक्षाओं के प्रकाश के अनुसार, हमें बुढ़ापे, मृत्यु और बीमारी को अनुकूल दृष्टि से देखना चाहिए, और एक मामले में उनसे प्यार भी करना चाहिए। चूँकि हमारे पास ईमान जैसा एक अनमोल उपहार है, इसलिए बुढ़ापा सुखद है, और बीमारी और मृत्यु भी। अगर ऐसी चीज़ें हैं जो अप्रिय हैं, तो वे हैं

पाप, अपव्यय, विधर्म, धर्म में अस्वीकार्य नवाचार और गुमराही हैं।

ग्यारहवीं आशा

कैद से लौटने के बाद, मैं अपने भतीजे अब्दुर्रहमान के साथ इस्तांबुल में कैमलीका की पहाड़ी पर एक विला में रह रहा था। सांसारिक जीवन के संबंध में, मेरी स्थिति को हम जैसे लोगों के लिए सबसे खुशहाल माना जा सकता था: मैं कैद से बचा लिया गया था, और दारुल-हिकम अल-इस्लामिया11 ("इस्लामी ज्ञान का घर") में, हम शिक्षण के अपने पेशे के लिए सबसे उच्चतम स्तर पर शिक्षण और ज्ञान की सेवा में सफलता का आनंद ले रहे थे। मुझे जो सम्मान और ध्यान दिया गया, वह मेरे हक़ से कहीं ज़्यादा था। मैं कैमलीका में रह रहा था, जो इस्तांबुल में रहने की सबसे खूबसूरत जगह है। मेरे लिए सब कुछ सही था। मैं अपने दिवंगत भतीजे अब्दुर्रहमान के साथ था, जो बेहद बुद्धिमान और आत्म-त्यागी था, और मेरा छात्र, और नौकर, और लेखक दोनों था, और जो मेरे लिए एक बेटे की तरह था। इस स्थिति में, स्वयं को दुनिया में किसी भी अन्य व्यक्ति की तुलना में अधिक भाग्यशाली समझते हुए, एक दिन मैंने आईने में देखा और अपने बालों और दाढ़ी में सफेद बाल देखे।

11 दारुल-हिकमत अल-इस्लामिया ("इस्लामिक ज्ञान का घर"), जिसकी स्थापना अगस्त 1918 में हुई थी, एक इस्लामी अकादमी थी। इसकी स्थापना इस्लाम से जुड़े सवालों के जवाब देने, इसके सिद्धांतों के बारे में उठाए गए संदेहों को दूर करने और इसे सिखाने के लिए किताबें प्रकाशित करने के लिए की गई थी।
बेदिउज़्ज़मां सईद नूरसी इसके प्रमुख सदस्यों में से एक थे। (ट्र.)

अचानक, मुझे कोस्तुरमा की मस्जिद में कैद के दौरान जो आध्यात्मिक जागृति का अनुभव हुआ था, वह फिर से शुरू हो गया। परिणामस्वरूप, मैं उन परिस्थितियों और कारणों पर विचार करने लगा, जिनसे मैं भीतर से जुड़ा हुआ था और जिन्हें मैं सांसारिक जीवन में सुख का साधन मानता था। उनमें से जिस किसी के बारे में भी मैंने सोचा, अब मुझे वह सब सड़ा हुआ, लगाव के अयोग्य, एक प्रकार का भ्रम दिखाई दिया। इस बीच, मुझे एक ऐसे मित्र के हाथों विश्वासघात और विश्वासघात का अप्रत्याशित और अकल्पनीय कृत्य सहना पड़ा, जिसे मैं सबसे अधिक वफ़ादार मानता था। मुझे दुनिया से डर लगने लगा। मैंने अपने दिल से कहा, "क्या मैं पूरी तरह से भ्रमित हो गया हूँ? मैं देखता हूँ कि बहुत से लोग हमारी स्थिति को ईर्ष्या से देखते हैं, जबकि वास्तव में हमें दया आनी चाहिए। क्या ये सभी लोग पागल हैं, या मैं अब पागल हो रहा हूँ ताकि मैं इन सभी दुनिया-प्रेमी लोगों को ऐसा देखूँ?"

वैसे भी, बुढ़ापे के कारण आई उस तीव्र जागृति के परिणामस्वरूप, सबसे पहले मैंने उन क्षणभंगुर चीज़ों की क्षणभंगुरता पर ध्यान दिया, जिनसे मैं जुड़ा हुआ महसूस करता था। फिर मैंने खुद पर ध्यान दिया, और पाया कि मैं पूरी तरह से शक्तिहीन हूँ। इसके बाद मेरी आत्मा, जो अनंत काल की चाहत रखती थी और फिर भी क्षणभंगुर चीज़ों से बहुत जुड़ी हुई थी, उन्हें शाश्वत मानती थी, ने बहुत ज़ोर देकर कहा, "चूँकि मैं अपने शरीर के संबंध में नश्वर हूँ, तो इन नश्वर चीज़ों से क्या अच्छा हो सकता है? चूँकि मैं शक्तिहीन हूँ, तो मैं इन शक्तिहीन चीज़ों से क्या उम्मीद कर सकता हूँ? मुझे एक सर्वशक्तिमान, शाश्वत की आवश्यकता है

वह जो मेरी बीमारियों के लिए एक उपाय प्रदान करेगा। ” और मैंने खोज शुरू कर दी।

फिर, सबसे पहले, मैंने उस ज्ञान का सहारा लिया जो मैं इतने लंबे समय से पढ़ रहा था, और एक सांत्वना, एक उम्मीद की तलाश की। दुर्भाग्य से, उस समय तक मैंने अपने दिमाग को "प्राकृतिक" विज्ञान और दर्शन के साथ-साथ इस्लामी विज्ञानों से भर दिया था, और गलती से उन दार्शनिक और "प्राकृतिक" विज्ञानों को व्यक्तिगत विकास और ज्ञान के साधन के स्रोत के रूप में कल्पना की थी। हालाँकि, उन दार्शनिक मुद्दों ने मेरी आत्मा को बहुत अधिक मैला कर दिया था और मेरे आध्यात्मिक विकास में बाधा उत्पन्न की थी। अचानक, सर्वशक्तिमान ईश्वर की दया और कृपा के लिए, बुद्धिमान कुरान में निहित पवित्र ज्ञान मेरी सहायता के लिए आया। जैसा कि रिसाले-ए नूर के कई हिस्सों में समझाया गया है, इसने उन दार्शनिक मुद्दों की गंदगी को धो दिया और साफ कर दिया।

उदाहरण के लिए, "प्राकृतिक" विज्ञानों से आने वाले अंधकार के आध्यात्मिक आवरणों ने बाहरी दुनिया को मेरी आत्मा का दम घोंटने के लिए मजबूर कर दिया था। जिस भी दिशा में मैं आत्मज्ञान की तलाश में मुड़ा, मुझे उन मामलों में प्रकाश की एक किरण नहीं मिली, न ही मैं सांस ले पाया। और ऐसा तब तक चलता रहा जब तक कि कुरान द्वारा सिखाई गई दिव्य एकता की असाधारण शानदार रोशनी ने, "ईश्वर के अलावा कोई पूज्य नहीं है" की घोषणा के साथ अंधकार के उन सभी आवरणों को हटा दिया, और मैं आसानी से सांस ले पाया। लेकिन गुमराह लोगों और दार्शनिकों से जो कुछ उन्होंने सीखा था, उसके आधार पर मेरी शारीरिक आत्मा और शैतान ने मुझ पर हमला किया

मेरी बुद्धि और मेरा हृदय। ईश्वर का धन्यवाद, मेरी आत्मा के साथ हुई बहस के परिणामस्वरूप मेरे हृदय की जीत हुई। उन आदान-प्रदानों का वर्णन रिसाले-ए-नूर के कई भागों में किया गया है। आगे जाने की आवश्यकता न रखते हुए, हृदय की उस जीत का एक हजारवाँ भाग दिखाने के लिए, मैं यहाँ हज़ारों में से केवल एक प्रमाण की व्याख्या करूँगा। मुझे आशा है कि यह कुछ हद तक उन बुज़ुर्ग लोगों की आत्माओं को भी शुद्ध कर सकता है, जिन्होंने अपनी युवावस्था में अपनी आत्माओं को गंदा कर लिया है और अपने हृदय को बीमार बना लिया है, अपनी आत्माओं को उन बातों से खराब कर लिया है जो आंशिक रूप से गुमराह करने वाली और आंशिक रूप से तुच्छ हैं-

वे विषय जिन्हें वे आधुनिक दर्शन या कुछ आधुनिक विज्ञान कहते हैं, के नाम पर पढ़ाए या अध्ययन किए जाते हैं।

और उनकी आत्माएं उस बुराई से बचाई जाएं जो शैतान और शारीरिक, दुष्ट आत्माएं ईश्वरीय एकता के संबंध में भड़काती हैं।

हज़ार में से एक सबूत इस प्रकार है: मेरी शारीरिक, दुष्ट-आदेश देने वाली आत्मा ने

विज्ञान और दर्शन के नाम पर कहा, "अपनी प्रकृति के कारण, चीज़ें ब्रह्मांड के अस्तित्व और संचालन में हिस्सा लेती हैं। सब कुछ एक कारण पर निर्भर करता है। फल पेड़ से और बीज मिट्टी से माँगना पड़ता है। इसलिए

परमेश्वर से सबसे छोटी और सबसे कम महत्वहीन चीज़ की माँग करना और उसके लिए उससे विनती करना क्या मतलब है?

कुरान की रोशनी के माध्यम से, ईश्वरीय एकता का अर्थ और रहस्य तब उजागर हुआ और मेरे दिल ने मेरी आत्मा से कहा:

सबसे छोटी और सबसे कम महत्वपूर्ण चीज़, सबसे बड़ी और सबसे बड़ी चीज़ की तरह, पूरे ब्रह्मांड के निर्माता की शक्ति से सीधे निकलती है और उसके खजाने से निकलती है। यह किसी और तरीके से नहीं हो सकता। कारण केवल एक पर्दा है। क्योंकि, कला और सृजन के संबंध में, कभी-कभी जिन प्राणियों को हम सबसे छोटे और सबसे कम महत्वपूर्ण मानते हैं, वे सबसे बड़े प्राणियों से भी बड़े होते हैं।

कला में मक्खी भले ही मुर्गे से बड़ी न हो, पर उससे कम भी नहीं है। इसलिए हमें बड़े और छोटे में फर्क नहीं करना चाहिए। या तो सभी को भौतिक कारणों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए, या सभी को एक ही सत्ता के लिए जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। और जिस तरह पहला विकल्प अकल्पनीय है, उसी तरह दूसरा विकल्प भी आवश्यक और अनिवार्य रूप से स्वीकार्य है।

क्योंकि यदि वस्तुओं और प्राणियों को एक ही सत्ता के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, अर्थात, वह जो शाश्वत और सर्वशक्तिमान है, क्योंकि उसका ज्ञान - जिसके अस्तित्व से ब्रह्मांड का क्रम और असंख्य उदाहरण हैं

इसमें निहित बुद्धिमत्ता को पूर्ण प्रमाण के साथ स्थापित और प्रदर्शित करें-

कलंक - सब कुछ को समाहित करता है; और चूँकि सभी चीज़ें उसके ज्ञान में निर्धारित हैं, प्रत्येक एक निश्चित, विशेष माप के साथ; और चूँकि, स्पष्ट रूप से, चीज़ें और प्राणी, असीम रूप से कला से भरे हुए, अनंत आसानी से शून्य से लगातार अस्तित्व में आते हैं; और चूँकि, जैसा कि रिसाले-ए-नूर के कई हिस्सों में कई शक्तिशाली प्रमाणों के साथ स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया गया है, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान एक "हो जाओ" के आदेश से किसी भी चीज़ का निर्माण करने में पूरी तरह सक्षम है और यह एक माचिस जलाने जितना आसान है, उसके पास असीम शक्ति है - ऐसा होने के कारण, हम चीज़ों के अस्तित्व में आने में असाधारण आसानी और सुविधा देखते हैं

ये सब उस ज्ञान की सर्वव्यापक प्रकृति और उस शक्ति की असीम विशालता के कारण हैं।

उदाहरण के लिए, यदि अदृश्य स्याही से लिखी गई किसी पुस्तक पर उपयुक्त रासायनिक घोल डाला जाए, तो वह पुस्तक अचानक अपना अस्तित्व प्रकट कर देती है और स्वयं ही पढ़ी जाने लगती है।

ठीक इसी प्रकार, प्रत्येक वस्तु का विशेष रूप और स्वभाव उस शाश्वत, सर्वशक्तिमान के सर्वव्यापी ज्ञान में एक निश्चित, विशिष्ट माप से निर्धारित होता है। अदृश्य लेखन पर लागू रासायनिक घोल की तरह, अपनी असीम शक्ति और भेदक इच्छा के माध्यम से, परम सर्वशक्तिमान एक "हो जाओ!" की आज्ञा के साथ लागू होता है और यह एक अभिव्यक्ति है

वह अपनी शक्ति को ज्ञान के रूप में विद्यमान सत्ता तक पहुँचाता है, तथा उसे अत्यंत सहजता और सुविधा के साथ बाह्य अस्तित्व प्रदान करता है। वह अपनी बुद्धि की कढ़ाई को पढ़ता है।

यदि सभी वस्तुओं को एक साथ उस शाश्वत, सर्वशक्तिमान, सभी वस्तुओं के ज्ञाता से संबद्ध नहीं किया जाता, तो न केवल उस छोटी सी मक्खी के शरीर में कार्यरत कणों को, उदाहरण के लिए, संसार के विभिन्न प्राणियों में से एक मक्खी जैसी सबसे छोटी वस्तु का शरीर भी ठीक-ठीक मात्रा में एकत्रित करना होगा, बल्कि मक्खी की रचना के रहस्यों और उसकी संपूर्ण कला को भी उसके सभी सूक्ष्मतम विवरणों में जानना होगा। क्योंकि, स्पष्ट रूप से और सभी बुद्धिमान लोगों द्वारा सहमत रूप से, प्राकृतिक या भौतिक कारण अस्तित्वहीनता से कुछ नहीं बना सकते। यदि वे सृजन करने में सक्षम होते, तो वे प्राणियों की अधिकांश प्रजातियों में से सबसे छोटे प्राणी के शरीर को भी एकत्रित कर लेते। और यदि वे इसे एकत्रित करते, तो चाहे कोई भी सजीव प्राणी क्यों न हो, क्योंकि प्रत्येक प्राणी में अधिकांश तत्वों और अधिकांश प्रजातियों के नमूने होते हैं, क्योंकि प्रत्येक जीवित प्राणी एक बीज के समान होता है।

ब्रह्मांड या उससे निकाले गए अंश को प्राप्त करने के लिए, उन्हें पूरे पेड़ से बीज या पूरी धरती से जीवित प्राणी प्राप्त करना होगा, उन्हें सावधानीपूर्वक एक महीन छलनी से छानना होगा और उन्हें सबसे संवेदनशील तराजू से मापना होगा। हालाँकि, प्राकृतिक कारण अज्ञानी और बेजान हैं, और उनके पास कोई ज्ञान नहीं है जो उन्हें एक योजना, एक सामग्री, मॉडल या कार्यक्रम निर्धारित करने की अनुमति देगा जिसके अनुसार वे कणों को पिघला सकते हैं और किसी भी प्राणी के सटीक रूप को आकार देने के लिए डाल सकते हैं बिना फैलाव या विरूपण की अनुमति दिए।

इसके अलावा, किसी चीज़ या प्राणी के लिए एक विशेष रूप लेने के लिए अनंत विकल्प हैं; इसके लिए आवश्यक है कि निर्जीव और अज्ञानी प्राकृतिक कारणों को पता हो कि उन्हें प्रत्येक चीज़ को कौन सा रूप देना चाहिए और इस प्रकार एक निश्चित, विशेष माप के अनुसार, बाढ़ की तरह बहने वाले तत्वों के कणों को इकट्ठा और एक साथ रखना चाहिए। इसलिए, जो कोई भी अपने दिल में अंधेपन से पीड़ित नहीं है, वह देखेगा कि संभावना और तर्क से यह विचार कितना दूर है कि प्राकृतिक कारण इन सभी प्राणियों को बना सकते हैं, जिनमें से प्रत्येक का शरीर असाधारण रूप से सुव्यवस्थित है।

इस सत्य के परिणामस्वरूप, आयत के अर्थ के अनुसार, जिन्हें तुम ईश्वर के अलावा पूज्य मानते हो और पुकारते हो, वे कभी भी एक मक्खी भी नहीं बना सकते, भले ही वे सभी ऐसा करने के लिए एक साथ आ जाएं (22: 73), यदि सभी भौतिक कारण एक साथ आ जाएं और यदि उनमें इच्छाशक्ति हो, तो भी वे एक मक्खी के सभी तंत्रों और अंगों को उसके शरीर को बनाने के लिए सटीक क्रम और संतुलन में एकत्र नहीं कर सकते। यहां तक कि अगर वे उन्हें एकत्र करने में सक्षम भी हो जाएं, तो वे उन्हें निर्दिष्ट माप में बनाए या संरक्षित नहीं कर सकते

उस शरीर के अस्तित्व के लिए आवश्यक है। भले ही वे उन्हें इस तरह बनाए रखने या संरक्षित करने में सक्षम थे, वे उस शरीर में कणों को व्यवस्थित रूप से काम नहीं करवा सकते थे, जो बाहरी दुनिया से आने वाले नए कणों द्वारा लगातार नवीनीकृत या प्रतिस्थापित होते रहते हैं। इसलिए, स्व-स्पष्ट रूप से, भौतिक कारण चीजों के स्वामित्व का दावा नहीं कर सकते हैं, और उनका सच्चा स्वामी कोई और है।

वास्तव में, उनका सच्चा मालिक एक है, जिसके लिए, आयत के अनुसार, आपकी रचना और आपका पुनरुत्थान एक आत्मा के सृजन और पुनरुत्थान के समान है (31: 28), वह पृथ्वी पर सभी जीवित प्राणियों को उसी आसानी से पुनर्जीवित करता है, जैसे वह एक मक्खी को पुनर्जीवित करता है। वह वसंत को उतनी ही आसानी से बनाता है, जितनी आसानी से वह एक फूल बनाता है, क्योंकि उसे बनाने के लिए चीजों को इकट्ठा करने की कोई आवश्यकता नहीं है। चूँकि उसके पास "हो जाओ!" का आदेश है और यह है और चूँकि प्रत्येक वसंत, प्राणियों के शरीर बनाने वाले भौतिक तत्वों के अलावा, वह शून्य से असंख्य प्राणियों की असंख्य विशेषताओं, अवस्थाओं और रूपों का भी निर्माण करता है, और चूँकि हर चीज़ की योजना, मॉडल, सामग्री और कार्यक्रम पहले से ही उसके ज्ञान में निर्धारित हैं, और चूँकि सभी कण और परमाणु उसके ज्ञान और शक्ति के क्षेत्र में चलते हैं, वह हर चीज़ को असीम आसानी से बनाता है, मानो एक माचिस जला रहा हो। और कोई भी चीज़ इस गति को कम से कम भ्रमित नहीं करती है। जिस प्रकार ग्रह उनकी आज्ञाकारी सेना हैं, उसी प्रकार कण और परमाणु भी उनके लिए एक नियमित, सुव्यवस्थित सेना की तरह चलते हैं।

चूँकि वे उस शाश्वत पर निर्भर होकर चलते हैं
उस शाश्वत ज्ञान के सिद्धांतों के अनुसार कार्य करते हुए, सभी चीजें और प्राणी उस शक्ति के अधीन हो जाते हैं और उसी के अनुसार कार्य करते हैं।

उस शक्ति के आविष्कार के साथ ही वे अस्तित्व में आए। इसलिए उन्हें इसलिए महत्वहीन नहीं माना जाना चाहिए क्योंकि वे शरीर में छोटे हैं। उस शक्ति के साथ अपने संबंध के कारण जो शक्ति उन्हें प्राप्त है, उसके द्वारा एक मक्खी निम्रोद को नष्ट कर सकती है, एक चींटी फिरौन के महल को बर्बाद कर सकती है, और एक छोटा सा देवदार का बीज एक पहाड़ जितने ऊंचे पेड़ का बोझ उठा सकता है। हमने इस सत्य को रिसाले-ए-नूर में कई जगहों पर साबित किया है। उसी तरह जैसे कि राज्य के सदस्य के रूप में उनके संबंध के कारण

सेना में, एक साधारण सैनिक एक राजा को बंदी बना सकता है, इस प्रकार अपनी व्यक्तिगत क्षमता से कहीं अधिक, इसी प्रकार, शाश्वत शक्ति के साथ अपने संबंध के कारण, सभी चीजों को अनुग्रह प्राप्त हो सकता है और वे कला के चमत्कार दिखा सकते हैं जो उनके प्राकृतिक कारणों की क्षमता से सैकड़ों-हजारों गुना अधिक हैं।

संक्षेप में, यह तथ्य कि सभी चीजें अनंत कला और अनंत सहजता से अस्तित्व में आती हैं, यह दर्शाता है कि वे एक शाश्वत सर्वशक्तिमान के कार्य हैं जिनके पास सर्वव्यापी ज्ञान है। अन्यथा, सैकड़ों हज़ारों असंभवताओं के कारण, संभव होने से बहुत दूर, उनका अस्तित्व बिल्कुल अकल्पनीय होगा।

इस अत्यंत सूक्ष्म, शक्तिशाली, गहन और स्वयंसिद्ध प्रमाण के माध्यम से, मेरी शारीरिक, दुष्ट-आदेश देने वाली आत्मा, जो शैतान की अस्थायी शिष्या और गुमराह करने वाले लोगों और पथभ्रष्ट दर्शन के प्रवक्ता थी, चुप हो गई, और, ईश्वर की स्तुति हो, पूरी तरह से विश्वास करने लगी। उसने कहा:

मुझे ऐसे सृष्टिकर्ता और प्रभु की आवश्यकता है जो मेरे हृदय की छोटी से छोटी और सबसे गुप्त घटनाओं को जान सके और

> मेरी सबसे गुप्त अपीलें। और, जिस तरह उसे मेरी आत्मा की सबसे छिपी जरूरतों का जवाब देना चाहिए, उसी तरह उसके पास इस शक्तिशाली दुनिया को परलोक से बदलने की शक्ति भी होनी चाहिए ताकि मुझे शाश्वत खुशी मिल सके, और एक मक्खी की तरह आसानी से स्वर्ग का निर्माण कर सके, और मेरी आंख की पुतली में एक कण रख सके जैसे वह आकाश के सामने एक आंख के रूप में सूर्य को बांधता है। क्योंकि जो मक्खी नहीं बना सकता वह मेरे दिल के विचारों के संबंध में कुछ नहीं कर सकता और मेरी आत्मा की अपील नहीं सुन सकता। जो आकाश नहीं बना सकता वह मुझे शाश्वत खुशी नहीं दे सकता। उस स्थिति में, मेरा रब वह है जो मेरे दिल की घटनाओं को सही और शुद्ध करता है, और, जैसे वह एक घंटे में आसमान को बादलों से भरता और खाली करता है, वह इस दुनिया को परलोक से बदल देगा, जन्नत बनाएगा, और मेरे लिए इसके दरवाजे खोल देगा, मुझे प्रवेश करने के लिए कहेगा।

तो, मेरे बुजुर्ग भाईयों और बहनों, जो मेरी आत्मा की तरह कुछ दुर्भाग्यपूर्ण विचारों से गुमराह हो गए हैं, जिन्होंने अपने जीवन का कुछ हिस्सा प्रकाशहीन भौतिकवादी दर्शन और वैज्ञानिकता पर बिताया है! कुरान द्वारा निरंतर घोषित किए गए इस पवित्र आदेश से समझें कि उसके अलावा कोई पूज्य नहीं है , यह कितना शक्तिशाली और सच्चा, कितना अडिग और अभेद्य, कितना अपरिवर्तनीय और पवित्र विश्वास का स्तंभ है, और यह कैसे सभी आध्यात्मिक अंधकार को दूर करता है और सभी आध्यात्मिक घावों को ठीक करता है!

वैसे भी, मेरे बालों और दाढ़ी में उग आए सफ़ेद बालों और एक पुराने दोस्त के विश्वासघात के कारण, मुझे इस्तांबुल की चमक-दमक और स्पष्ट रूप से सुखद सांसारिक जीवन के सुखों से घृणा होने लगी। मेरी आत्मा ने तलाश की

आध्यात्मिक सुखों की जगह वह सुख चाहता था, जिसके लिए वह मोहग्रस्त था। उसे इस बुढ़ापे में एक रोशनी, एक सांत्वना चाहिए थी, जिसे लापरवाह लोग ठंडा, बोझिल और अप्रिय समझते हैं। और सारी प्रशंसा ईश्वर की हो और अनगिनत धन्यवाद, जैसे मैंने ईश्वर में विश्वास का सच्चा, स्थायी और मधुर सुख पाया। ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है

और ईश्वरीय एकता के प्रकाश में, उन सभी झूठे, अप्रिय, क्षणभंगुर और निरर्थक सांसारिक सुखों के स्थान पर, ईश्वरीय एकता के प्रकाश के माध्यम से, मैंने बुढ़ापे को (जिसे असावधान लोग ठंडा और बोझिल समझते हैं) सबसे हल्का, गर्म और प्रकाशमान देखा।

और इसलिए, बुज़ुर्ग पुरुष और महिलाएँ! चूँकि आपके पास विश्वास है और चूँकि आप नियमित रूप से प्रार्थना करते हैं और प्रार्थनाएँ करते हैं जो विश्वास को रोशन और मज़बूत करती हैं, इसलिए आप अपने बुढ़ापे को शाश्वत युवावस्था के रूप में देख सकते हैं। क्योंकि आप इसके ज़रिए शाश्वत युवावस्था प्राप्त कर सकते हैं। बुढ़ापा जो वास्तव में ठंडा, बोझिल, बदसूरत, अंधकारमय और दर्द से भरा होता है, वह गुमराह लोगों का बुढ़ापा होता है; वास्तव में, उनकी जवानी भी ऐसी ही होती है। उन्हें रोना चाहिए और आहें भरनी चाहिए और पछताना चाहिए। लेकिन आप, सम्मानित विश्वास करने वाले बुज़ुर्ग लोगों को भगवान का शुक्रिया अदा करना चाहिए और यह कहते हुए खुश होना चाहिए, "हर स्थिति के लिए भगवान की सभी प्रशंसा और धन्यवाद!"

बारहवीं आशा

एक बार मुझे निर्वासन की आड़ में इस्पार्टा प्रांत के बारला जिले में कष्टदायक कैद में रखा गया था। मैं अत्यंत दयनीय स्थिति में था, बीमारी और बुढ़ापे से पीड़ित था, और लगातार अलगाव की स्थिति में था।

घर से दूर, और एक गाँव में अकेले, किसी से भी दूर, किसी भी तरह की संगति और बातचीत से दूर। फिर, अपनी पूर्ण दया से, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मुझ पर ज्ञानपूर्ण कुरान के सूक्ष्म बिंदुओं और रहस्यों के बारे में एक प्रकाश प्रदान किया, जो मेरे लिए सांत्वना का साधन था। इसके साथ, मैंने अपनी दयनीय, दुखद, दुखद स्थिति को भूलने की कोशिश की।

मैं अपनी जन्मभूमि, अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को भूल गया, लेकिन अफसोस, एक व्यक्ति ऐसा था जिसे मैं नहीं भूल पाया। वह था अब्दुर्रहमान, जो मेरा भतीजा था, हालाँकि वह मेरे लिए बेटे जैसा था, और मेरा सबसे त्यागी छात्र और सबसे साहसी दोस्त था।

वे मुझसे छह या सात साल पहले ही अलग हो चुके थे। उन्हें नहीं पता था कि मैं कहाँ हूँ और इसलिए वे मेरी मदद करने या मुझे सांत्वना देने के लिए जल्दी नहीं कर सकते थे, न ही मैं उनकी स्थिति के बारे में जानता था ताकि मैं उनसे पत्र-व्यवहार कर सकूँ और उन्हें अपने दिल की बात बता सकूँ।

उस वृद्धावस्था में मुझे उनके जैसे विश्वासपात्र और त्यागशील व्यक्ति की आवश्यकता थी।

तभी अचानक किसी ने मुझे एक पत्र दिया।
मैंने उसे खोला और देखा कि यह अब्दुर्रहमान का पत्र था; यह एक ऐसा पत्र था जो उसके वास्तविक स्वरूप को दर्शाता था। इसमें चमत्कारों के तीन स्पष्ट उदाहरण दर्शाए गए हैं, जिनमें से कुछ को सत्ताईसवें पत्र में शामिल किया गया है ।12

---

12 इसमें सैद नूरसी और रिसाले-ए-नूर के छात्रों के बीच के संवाद शामिल हैं और इसे अलग-अलग पुस्तकों के रूप में बारला लाहिकासी (“बार-ला के पूरक”), कस्तमोनु लाहिकासी (“कस्तमोनु के पूरक”), और एमिरदाग लाहिकासी (“एमिरदाग के पूरक”) के नाम से प्रकाशित किया गया था । (अनुवाद)

मुझे बहुत रुलाया; वास्तव में, यह अभी भी मुझे रुलाता है।
पत्र में, दिवंगत अब्दुर्रहमान ने ईमानदारी से लिखा कि उन्हें दुनिया के सुखों से नफरत है और उनकी सबसे बड़ी इच्छा मेरे पास आकर मेरी सेवा करना है, जैसे मैंने बचपन में उनकी देखभाल की थी। वह अपनी शक्तिशाली कलम से कुरान की सच्चाई को प्रचारित करने में मेरी मदद करना चाहते थे, जो इस दुनिया में मेरा सच्चा कर्तव्य है। उन्होंने यहां तक लिखा, "मुझे बीस या तीस ग्रंथ भेजें और मैं प्रत्येक की बीस या तीस प्रतियां लिखूंगा और दूसरों से लिखवाऊंगा।"

उनके पत्र ने मुझे मेरे मामलों के संबंध में बड़ी आशा दी। यह सोचकर कि मुझे एक प्रतिभाशाली छात्र मिला है, जो एक सगे (जैविक) बेटे से भी अधिक निष्ठा और निकटता से मेरी सेवा करेगा, मैं अपनी दर्दनाक कैद, अकेलेपन, घर से अलगाव और बुढ़ापे को भूल गया।

उस पत्र को लिखने से पहले, उनके पास दसवें वचन की एक प्रति थी, जो परलोक में विश्वास के बारे में है। ऐसा लगा जैसे यह ग्रंथ उनके लिए एक औषधि थी, जिसने उन छह या सात वर्षों के दौरान उन्हें मिले सभी आध्यात्मिक घावों को ठीक कर दिया। फिर उन्होंने मुझे पत्र लिखा जैसे कि वे वास्तव में एक मजबूत और उज्ज्वल विश्वास के साथ अपनी मृत्यु की आशंका कर रहे थे। जब मैं एक बार फिर अब्दुर्रहमान के साथ एक खुशहाल जीवन बिताने के बारे में सोच रहा था, तो एक या दो महीने बाद मुझे अचानक उसकी मृत्यु की खबर मिली। मैं इतना हिल गया कि पाँच साल बाद भी मैं उसके प्रभाव में हूँ।

इससे अलगाव, दुःख और पीड़ा की गहरी भावना पैदा हुई।

मैं जो कुछ भी कर रहा था, वह कैद, अकेलेपन, अलगाव, बुढ़ापे और बीमारी की पीड़ा से दस गुना अधिक था। मैंने सोचा कि मेरी निजी दुनिया का आधा हिस्सा मेरी माँ की मृत्यु के साथ ही खत्म हो गया था, और अब अब्दुर्रहमान की मृत्यु के साथ, मुझे लगा कि बाकी आधा हिस्सा भी खत्म हो गया है।

दुनिया से मेरा नाता अब पूरी तरह टूट चुका था।
क्योंकि अगर वह जीवित रहता, तो वह मेरे लिए परलोक से जुड़े कर्तव्यों में एक शक्तिशाली सहायक होता, और मेरे बाद मेरी जगह लेने के लिए एक योग्य उत्तराधिकारी होता, साथ ही इस दुनिया में एक आत्म-त्यागी दोस्त और सांत्वना का साधन होता। वह मेरा सबसे बुद्धिमान छात्र और साथी होता, और रिसाले -ए-नूर का सबसे भरोसेमंद संरक्षक और रक्षक होता।

मानवीय दृष्टिकोण से, मेरे जैसे लोगों के लिए ऐसी क्षति अत्यंत पीड़ादायक और विनाशकारी होती है।
यह सच है कि मैं बाहर से तो इसे बर्दाश्त करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन मेरी आत्मा में एक भयंकर तूफान उठ रहा था। अगर समय-समय पर कुरान की रोशनी से मिलने वाली सांत्वना मुझे सांत्वना न दे पाती, तो मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर पाता। उस समय मैं अकेला ही बरला के पहाड़ों और घाटियों में घूमने निकल जाता था। मैं एकांत स्थानों पर बैठता और दुखों से घिरा हुआ, अब्दुर्रहमान जैसे अपने वफ़ादार शिष्यों के साथ अतीत में बिताए सुखी जीवन के चित्र मेरी कल्पना में फिल्मी दृश्यों की तरह घूमते और बुढ़ापे और निर्वासन के कारण होने वाले दुख ने मेरा प्रतिरोध तोड़ दिया। अचानक, पवित्र आयत इव- का अर्थ मेरे मन में आया।

सब कुछ नाशवान है (और इसलिए नाशवान है) सिवाय उसके "चेहरे" (उसकी शाश्वत आत्मा, और उसकी अच्छी इच्छा की तलाश में जो कुछ भी किया जाता है) के। केवल उसका ही न्याय और अधिकार है, और उसी की ओर तुम्हें वापस लाया जा रहा है (28: 88), मेरे सामने प्रकट किया गया। इसने मुझे यह कहने पर मजबूर कर दिया, "हे सनातन, तुम ही सनातन हो! हे सनातन, तुम ही सनातन हो!" और मुझे सच्ची सांत्वना दी।

फिर, जैसा कि सुन्ना की सीढ़ी (ग्यारहवीं किरण) नामक ग्रंथ में वर्णित है, उस उजाड़ घाटी में उस दुःखी अवस्था में, इस पवित्र श्लोक से प्रेरित होकर, मैंने स्वयं को तीन विशाल शवों के सिर पर देखा:

मैंने स्वयं को उन पचपन मृत सईदों की कब्र पर एक कब्र के पत्थर के रूप में देखा, जिन्हें मेरे जीवन के पचपन वर्षों के दौरान दफनाया गया था।

दूसरी लाश मेरे उन सभी साथी इंसानों की विशाल लाश थी जो आदम (उन पर शांति हो) के समय से मर चुके थे और जिन्हें अतीत की कब्र में दफना दिया गया था। मैंने खुद को इस सदी के चेहरे पर एक चींटी की तरह एक छोटे से जीवित प्राणी के रूप में देखा, जो उस कब्र के शिलापट्ट की तरह है।

तीसरी लाश पूरी दुनिया थी जो, जैसा कि ऊपर की कविता में कहा गया है, एक दिन इंसानों की तरह और हर साल उसमें से गुज़रने वाले संसारों की तरह मर जाएगी। यह मेरी कल्पना में सन्निहित था।

फिर यदि वे तुमसे मुँह फेर लें तो कह दो, "मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं।"

वह। मैंने उस पर भरोसा किया है, और वह सर्वोच्च सिंहासन का स्वामी है" (9: 129), मेरी सहायता के लिए आया और अपने सच्चे सांत्वना और अमिट प्रकाश के साथ, इसने उस भयानक दृष्टि को पूरी तरह से दूर कर दिया जो अब्दुर्रहमान की मृत्यु पर मेरे दुख से उत्पन्न हुई थी। इसने मुझे याद दिलाया: चूँकि सर्वशक्तिमान ईश्वर मौजूद है, इसलिए वह बाकी सब चीजों के स्थान पर पर्याप्त है। चूँकि वह शाश्वत है, इसलिए वह निश्चित रूप से पर्याप्त है। उसकी कृपा का एक ही उदाहरण पूरी दुनिया का विकल्प है। और उसकी एक अभिव्यक्ति

प्रकाश ऊपर वर्णित तीन विशाल शवों को जीवन देता है, यह दर्शाता है कि वे शव नहीं हैं, बल्कि उन्होंने अपना कर्तव्य पूरा कर लिया है और दूसरे लोकों के लिए प्रस्थान कर चुके हैं। जैसा कि इस सत्य को तीसरी किरण में समझाया गया है, यहाँ मैं केवल इतना कहूँगा कि वाक्यांश के दो दोहराव, "हे सनातन, तुम सनातन हो! हे सनातन, तुम सनातन हो!" जो कि सब कुछ नाशवान है (और इसलिए नाशवान है) सिवाय उसके "चेहरे" (श्लोक के अंत तक) के अर्थ को इंगित करता है, ने मुझे उस सबसे दर्दनाक, दुखद स्थिति से बचाया। यह इस प्रकार था:

जब मैंने पहली बार कहा, "हे सनातन, आप सनातन हैं!", तो एक शल्यक्रिया की तरह इसने उन अंतहीन आध्यात्मिक घावों को ठीक करना शुरू कर दिया जो संसार के बीत जाने तथा इस संसार में मेरे असंख्य मित्रों से जुड़े होने तथा उनसे मेरे संबंध विच्छेद हो जाने के कारण मुझ पर लगे थे।

“हे सनातन, तू ही सनातन है!” वाक्यांश का दूसरा उच्चारण उन सभी असंख्य घावों के लिए मरहम और औषधि दोनों था।

मुझे यह विचार आया: "आप चिरस्थायी हैं। जो चले जाते हैं, उन्हें जाने दो; आप मेरे लिए पर्याप्त हैं। चूँकि आप चिरस्थायी हैं, इसलिए आपकी दया का एक प्रकटीकरण सभी क्षयकारी चीज़ों के स्थान पर पर्याप्त है।

चूँकि आप विद्यमान हैं, इसलिए जो व्यक्ति आपके अस्तित्व में विश्वास के माध्यम से आपके साथ अपने संबंध के बारे में जानता है, और जो उस संबंध के अनुरूप कार्य करता है, उसके लिए यह बहुत बड़ी बात है।

इस्लाम में, सब कुछ मौजूद है। क्षणभंगुरता और क्षय, और मृत्यु और प्रस्थान एक पर्दा, एक नवीनीकरण हैं; वे अलग-अलग क्षेत्रों से यात्रा करने जैसे हैं।" यह सोचते हुए, मेरा जलता हुआ, निर्वासित, उदास, दर्दनाक, अंधेरा और भयावह मूड एक खुश, हर्षित, सुखद, चमकदार, प्यारा, मिलनसार स्थिति में बदल गया। मेरी जीभ और दिल - वास्तव में, उनके स्वभाव की जीभ के माध्यम से, मेरे अस्तित्व का प्रत्येक कण - चिल्लाया, "सभी प्रशंसा भगवान की है!"

दया की उस अभिव्यक्ति का एक हज़ारवाँ हिस्सा यह है: मैं उस घाटी से बारला लौटा जहाँ मैं दुखों से पीड़ित था और जहाँ मैं मन की उदासी की स्थिति में था। मैंने देखा कि कुलेओनलू मुस्तफा नामक एक युवक मुझसे पाँच दैनिक प्रार्थनाओं और स्नान के बारे में कुछ सवाल पूछने आया था। हालाँकि मैं उस समय आगंतुकों को स्वीकार नहीं कर रहा था, जैसे कि किसी पूर्वाभास के माध्यम से मेरी आत्मा ने उसकी आत्मा की ईमानदारी को महसूस किया और

भविष्य में वह रिसाले-ए-नूर के लिए जो मूल्यवान सेवाएं करेगा , 13 मैंने उसे ठुकराया नहीं और उसे स्वीकार कर लिया।14 बाद में यह स्पष्ट हो गया कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मुझे अब्दुर्रहमान के स्थान पर (रिसाले-ए-नूर के भावी छात्रों के लिए) एक उदाहरण के रूप में मुस्तफा को एक योग्य उत्तराधिकारी के रूप में भेजा था जो रिसाले-ए-नूर के काम में एक सच्चे उत्तराधिकारी के कर्तव्य को पूरी तरह से पूरा करेगा, मानो कह रहा हो, "मैंने तुमसे एक अब्दुर्रहमान लिया, लेकिन बदले में मैं तुम्हें उस मुस्तफा जैसे तीस अब्दुर्रहमान दूंगा, जो तुम देख रहे हो, जो छात्र और भतीजे और बेटे जैसे साथी और भाई और धर्म के लिए इस कर्तव्य में आत्म-त्यागी दोस्त होंगे।"

भगवान की स्तुति हो, उसने मुझे तीस अब्दुर्रहमान दिए। इसलिए मैंने खुद से कहा, "हे रोते हुए दिल! चूँकि तुमने यह उदाहरण देखा है और इसके ज़रिए उसने तुम्हारे सबसे गंभीर आध्यात्मिक घावों को ठीक किया है, इसलिए तुम्हें यकीन होना चाहिए कि वह तुम्हारे बाकी सभी घावों को भी ठीक कर देगा।"

और इसलिए, मेरे बुजुर्ग भाई-बहन, जिन्होंने मेरी तरह, अपने बुढ़ापे में किसी बच्चे या रिश्तेदार को खो दिया है, जिसे वे बहुत प्यार करते थे, और जिन्हें बुढ़ापे के बोझ के साथ-साथ बिछड़ने का गहरा दुख भी सहना पड़ता है।

---

[१३] अपनी उत्कृष्ट कलम से रिसाले-ए-नूर के कुछ भागों की सात सौ से अधिक प्रतियां लिपिबद्ध करके , मुस्तफा के छोटे भाई, कुकुक अली, न केवल अब्दुर्रहमान बने, बल्कि उन्होंने कई अन्य अब्दुर्रहमानों को भी प्रशिक्षित किया।

14 उसने सचमुच यह प्रदर्शित किया कि वह न केवल स्वीकार किये जाने के योग्य था, बल्कि भविष्य के लिए भी योग्य था।

उम्र! आप समझ गए होंगे कि जब मैं आपसे कहीं ज़्यादा गंभीर स्थिति में था, तो कुरान की एक आयत ने उसे ठीक कर दिया। इसलिए, बुद्धिमान कुरान की पवित्र फार्मेसी में निश्चित रूप से आपके सभी कष्टों को ठीक करने के उपाय मौजूद होंगे। यदि आप विश्वास के माध्यम से इसका सहारा लेते हैं और नियमित पूजा के माध्यम से उन उपायों को लागू करते हैं, तो आपके बुढ़ापे का भारी बोझ और आपके दुख-दर्द बहुत हद तक हल्के हो जाएंगे।

इस शांति को अपेक्षाकृत लंबे समय तक लिखने का कारण अब्दुर्रहमान के लिए अधिक प्रार्थनाएँ प्राप्त करना है; इससे आप थकें नहीं। साथ ही, मैं अपने सबसे दर्दनाक और घिनौने घाव को अत्यंत गंभीर और अप्रिय तरीके से दिखाने का प्रयास करता हूँ, ताकि यह प्रदर्शित किया जा सके कि बुद्धिमान कुरान का पवित्र मारक कितना असाधारण उपाय और शानदार प्रकाश है।

तेरहवीं आशा

यहाँ मैं अपने जीवन के एक महत्वपूर्ण प्रसंग का वर्णन करूँगा। यह थोड़ा लम्बा होना चाहिए, लेकिन मुझे उम्मीद है कि यह उबाऊ नहीं होगा या आपके धैर्य पर भारी नहीं पड़ेगा।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान रूस में कैद से बचाए जाने के बाद, दारुल-हिकमत में धर्म की सेवा ने मुझे दो या तीन साल तक इस्तांबुल में रखा। फिर, ज्ञानपूर्ण कुरान के मार्गदर्शन और ग़ौथ अल-आज़म अल-जिलानी की आध्यात्मिक सहायता और प्रभाव और बुढ़ापे की जागृति के माध्यम से, मैंने महसूस किया

इस्तांबुल के सभ्य जीवन से थककर और उसके व्यस्त सामाजिक परिदृश्य से परेशान होकर। अपनी जन्मभूमि की लालसा मुझे वहाँ ले आई। यह सोचकर कि, चूँकि मुझे मरना ही है, इसलिए मुझे अपनी जन्मभूमि में ही मरना चाहिए, मैं वान चला गया।15

मैं सबसे पहले वान में अपने मदरसे , होरहोर से मिलने गया ।
मैंने देखा कि अर्मेनियाई लोगों ने रूसी कब्जे के दौरान इसे जला दिया था, वैन की अन्य सभी इमारतों की तरह। यह वैन के प्रसिद्ध किले के बगल में था, जो एक विशाल, पहाड़ जैसा मोनोलिथ है। मेरे सच्चे दोस्त, भाई-बहन और मदरसे के करीबी छात्र, जिसे मैंने छोड़ दिया था

सात-आठ साल पहले हुई घटनाओं को मेरी आँखों के सामने साकार रूप दिया गया। मेरे कुछ आत्म-बलिदान करने वाले मित्र सचमुच शहीद हो गए थे, जबकि कुछ अन्य उस आपदा के कारण मारे गए थे और स्वाभाविक रूप से शहीद हो गए थे।

मैं खुद को रोने से नहीं रोक पाया। मैं किले की चोटी पर चढ़ गया, जो मदरसे के ऊपर है, जो दो मीनारों की ऊंचाई पर है। मैं वहीं बैठ गया। मैं सात या आठ साल पीछे चला गया। एक शक्तिशाली कल्पना के साथ, मैं अपने मन में उस समय के चारों ओर घूमता रहा। अकेले होने के कारण, मुझे इन कल्पनाओं से विचलित करने या मुझे उस समय से वापस लाने वाला कोई नहीं था। मैंने सात या आठ वर्षों में इतने बदलाव देखे कि एक सदी भर के लिए काफी हैं।

मैंने देखा कि किले की तलहटी में और मेरे मदरसे के आसपास के शहर के हिस्से पूरी तरह से नष्ट हो गए थे।

15 वान तुर्की का एक प्रांत है जो पूर्वी अनातोलिया में स्थित है और पश्चिमी ईरान की सीमा से सटा हुआ है। (ट्र.)

जलकर नष्ट हो गया। यह देखकर मुझे बहुत दुख हुआ; ऐसा लगा जैसे तब से लेकर जब मैंने इसे पहले देखा था, तब तक दो सौ साल बीत चुके थे।

उन घरों में रहने वाले लोग मेरे दोस्त और परिचित थे। उनमें से अधिकांश लोग पलायन में मर गए थे, भगवान उन पर दया करे; वे निर्वासन में दुखी हो गए थे। अर्मेनियाई क्वार्टर के अलावा, वान के सभी मुस्लिम घर ध्वस्त हो गए थे। मेरे दिल में बहुत तेज दर्द हुआ। मैं इतना दुखी था कि अगर मेरे पास हज़ारों आँखें होतीं, तो वे सभी एक साथ रोते। मैं निर्वासन से अपने वतन लौट आया था और मुझे लगा कि मैं निर्वासन से बच गया हूँ। लेकिन अफसोस! सबसे दुखद निर्वासन जो मैंने देखा

मुझे जो कुछ भी सहना पड़ा, वह मेरी मातृभूमि में था। मैंने देखा कि मेरे सैकड़ों छात्र और मित्र, जिनके साथ मैं आत्मिक रूप से जुड़ा हुआ था, जैसे कि अब्दुर्रहमान, जिसका उल्लेख ऊपर बारहवीं आशा में किया गया है, कब्र में चले गए थे और उनके सभी स्थान खंडहर में बदल गए थे।

एक कहावत बहुत समय से मेरे मन में थी, लेकिन मैं उसे पूरी तरह समझ नहीं पाया था।

अब उस दुखद दृश्य को देखकर मुझे यह बात पूरी तरह समझ में आ गई। कहावत यह थी: "अगर दोस्तों से जुदा होना ही न हो, तो मौत हमारी आत्माओं तक पहुँचने का कोई रास्ता नहीं खोज पाएगी।"16 यानी,

16 यह कहावत अबू तैयब अल-मुतनब्बी, अल-हमावी, हिजानत अल-अदब, 1:136 से है। (ट्र.)

मनुष्य के मरने का सबसे बड़ा कारण दोस्तों से बिछड़ना है। उस स्थिति से ज़्यादा मुझे किसी और चीज़ ने इतना दुख या पीड़ा नहीं पहुँचाई। अगर कुरान और ईमान से मदद नहीं मिलती, तो मेरा दुख और पीड़ा मेरी आत्मा को लगभग उड़ा देती।

प्राचीन काल से ही कवि अपनी कविताओं में उन स्थानों पर समय की तबाही का शोक मनाते आए हैं, जहाँ वे अपने प्रियजनों के साथ थे। आज मैंने इसे अपनी आँखों से सबसे दर्दनाक रूप में देखा। दो सौ वर्षों के बाद अपने प्रिय मित्रों के घरों से गुज़रने के दुःख के साथ, मेरा दिल और आत्मा मेरी आँखों से मिल गए, और वे सब एक साथ रो पड़े।

फिर, एक-एक करके, मेरे प्यारे विद्यार्थियों के साथ काम करते हुए बिताए गए लगभग बीस वर्षों के जीवन के मनभावन दृश्य, जब मेरी आँखों के सामने खंडहर में पड़ी जगहें समृद्ध, हर्षित और खुशहाल थीं, मेरे सामने फिल्मों की तस्वीरों की तरह जीवंत हो उठीं, फिर गायब हो गईं और गायब हो गईं। ये मूर्त दृश्य कुछ समय तक मेरी आँखों के सामने से गुजरते रहे।

फिर मुझे सांसारिक लोगों पर बहुत आश्चर्य हुआ: वे खुद को कैसे धोखा दे सकते हैं? क्योंकि वर्णित दृश्य से स्पष्ट रूप से पता चलता है कि दुनिया क्षणभंगुर है और मनुष्य इसमें मेहमान हैं। मैंने अपनी आँखों से देखा कि सत्य के लोगों के बार-बार दोहराए जाने वाले शब्द कितने सत्य हैं: "दुनिया क्रूर, विश्वासघाती, बुरी है; इससे धोखा मत खाओ!" मैंने यह भी देखा कि जिस तरह मनुष्य अपने शरीर और घर से जुड़ा हुआ है-

वे अपने शहर, अपने देश और पूरी दुनिया से जुड़े हुए हैं। क्योंकि मैं अपनी बुढ़ापे के दुख में सिर्फ़ दो आँखों से रो रहा था, लेकिन मैं अपनी माँ की बुढ़ापे पर ही नहीं, बल्कि उसकी मृत्यु पर भी दस आँखों से रोना चाहता था।

और मुझे अपनी सुन्दर मातृभूमि की अर्ध-मृत्यु पर सौ आँखों से रोने की आवश्यकता महसूस हुई।

एक हदीस में है कि हर सुबह एक फ़रिश्ता पुकारता है, “तुम मरने के लिए पैदा हुए हो, और नष्ट होने के लिए इमारतें बनाते हो।”17 मैं अब इस सच्चाई को न केवल अपने कानों से सुन रहा था, बल्कि अपनी आँखों से देख भी रहा था।

दस साल बाद जब मैं अपनी उस स्थिति को याद करता हूँ, तो मैं आज भी उसी तरह रोता हूँ जैसे उस समय रोया था। पुराने गढ़ के नीचे के घर, जो हज़ारों सालों से वहाँ खड़े थे, सभी खंडहर हो चुके थे, शहर आठ साल में आठ सौ साल पुराना हो गया था, और मेरा मेदरेस, जो काफ़ी समृद्ध था और दोस्तों के जमावड़े का स्थान था, खत्म हो गया था और वैन के किले का विशाल मोनोलिथ उसकी कब्र बन गया था, जो उसके शव की आध्यात्मिक भव्यता को दर्शाता था; यह ओटोमन राज्य के सभी मेदरेस की मृत्यु का संकेत था।18 यह ऐसा था जैसे मेरे छात्र, जो मेरे साथ थे

17 अल-बहाकी, शुआब अल-इमान, 7:396; अद-दयालामी, अल-मुस्नद, 4:51. (ट्र.)

18 तुर्की में गणतंत्र युग के शुरुआती वर्षों में सभी मेदरेस पर प्रतिबंध लगा दिया गया और उन्हें समाप्त कर दिया गया। (ट्र.)

आठ साल पहले मेड्रेस में, वे मेरे साथ अपनी कब्रों में रो रहे थे। वास्तव में, शहर की उजड़ी हुई दीवारें और उसके बिखरे हुए पत्थर मेरे साथ रो रहे थे। मैंने उन्हें रोते हुए देखा।

तब मुझे समझ में आया कि मैं अपनी मातृभूमि में निर्वासन को सहन नहीं कर सकता। मैंने सोचा कि मुझे या तो उनके साथ कब्र में जाना होगा, या पहाड़ों की एक गुफा में जाकर अपनी मृत्यु का इंतजार करना होगा। मैंने खुद से कहा, "चूंकि दुनिया में असहनीय, जलती हुई जुदाई है जो धैर्य और प्रतिरोध को तोड़ देती है, इसलिए निश्चित रूप से मृत्यु जीवन से बेहतर है। जीवन का ऐसा गंभीर पहलू सहन नहीं किया जा सकता।"

फिर मैंने अपनी नज़रें छहों दिशाओं में घुमाईं और देखा कि चारों तरफ अंधेरा है।

मेरे गहरे दुख से उत्पन्न हुई दुनिया ने मुझे एक भयावह, शून्य, उजाड़ जगह के रूप में दिखाया जो मेरे सिर के ऊपर गिरने वाली थी। मेरी आत्मा ने अनगिनत शत्रुतापूर्ण आपदाओं के सामने एक सहारा बिंदु की तलाश की, और अनंत काल तक फैली अपनी अंतहीन इच्छाओं को संतुष्ट करने के लिए मदद का स्रोत, और अलगाव, तबाही और मृत्यु के अंतहीन उदाहरणों से उत्पन्न होने वाले दुख और शोक के सामने सांत्वना की प्रतीक्षा की। अचानक, चमत्कारिक व्याख्या के कुरान की निम्नलिखित आयत द्वारा व्यक्त वास्तविकता स्वयं प्रकट हुई: जो कुछ भी आकाश और पृथ्वी में है वह ईश्वर की स्तुति करता है; और वह अप्रतिरोध्य शक्ति वाला, सर्वज्ञ है। आकाश की संप्रभुता उसी की है

और पृथ्वी। वह जीवन देता है और मृत्यु का कारण बनता है। उसके पास हर चीज़ पर पूर्ण अधिकार है (57: 1-2)।

इसने मुझे उस दयनीय, विरह-पीड़ित, भयानक, दुखद कल्पना से बचाया और मेरी आँखें खोल दीं। मैंने देखा कि फलदार वृक्षों के शीर्ष पर लगे फल मुझे मुस्कुराते हुए देख रहे थे। वे कह रहे थे, "हमें भी देखो; केवल खंडहरों को मत देखो!" श्लोकों द्वारा व्यक्त सत्य ने निम्नलिखित विचार मन में लाए:

> एक शहर के रूप में एक पत्र, जो उन लोगों के हाथों से लिखा गया था जो वैन के मैदान के पृष्ठ पर मेहमान थे, और अंततः रूसी आक्रमण नामक एक विनाशकारी बाढ़ में गिर गया और नष्ट हो गया, आपको इस हद तक दुखी क्यों करता है? इसके बजाय, शाश्वत लेखक, हर चीज के सच्चे मालिक और स्वामी पर विचार करें, और देखें कि वैन के इस पृष्ठ पर उनके संदेश उसी शानदार तरीके से लिखे गए हैं जैसे आप देखते थे। इन जगहों के उजाड़ खंडहर बन जाने पर आपका रोना इस गलती से उत्पन्न होता है

> अपने सच्चे मालिक को भूल जाने से, यह न सोचने से कि लोग मेहमान हैं, तथा यह कल्पना करने से कि वे स्थायी रूप से उनके कब्जे में हैं।

उस गलती और उस जलते हुए दृश्य से सत्य का द्वार खुल गया और मेरी आत्मा उसे पूरी तरह से स्वीकार करने के लिए तैयार हो गई। जिस तरह लोहे को आग में डाला जाता है ताकि वह लचीला हो जाए और उसे उपयोगी रूप दिया जा सके, उसी तरह उस दुखद स्थिति और भयावह स्थिति ने उस आग के रूप में काम किया जिसने मेरे व्यक्तित्व को आकार दिया।

उपरोक्त आयतों की सच्चाई के माध्यम से, चमत्कारिक व्याख्या वाले कुरान ने मेरी आत्मा को विश्वास की सच्चाइयों का विकिरण दिखाया, जिससे वह उन्हें स्वीकार करने के लिए प्रेरित हुई।

ईश्वर की सभी प्रशंसा और धन्यवाद हो, जैसा **कि बीसवें पत्र जैसे** रिसाले-ए-नूर **के कुछ हिस्सों में स्पष्ट रूप से प्रदर्शित** किया गया है, विश्वास के विकिरण के माध्यम से, उल्लिखित आयतों द्वारा व्यक्त सत्य ने आत्मा और हृदय को एक ऐसा सहारा दिया - एक ऐसा सहारा जो प्रत्येक व्यक्ति के विश्वास की शक्ति के अनुपात में विकसित किया जा सकता है - जिसने मुझे आपदाओं का सौ गुना अधिक प्रतिरोध करने में सक्षम होने की शक्ति प्रदान की।

यह उस स्थिति से भी अधिक भयानक है जो मैंने तब अनुभव की थी। इसने मुझे फिर से याद दिलाया: सब कुछ इस देश के सच्चे मालिक के आदेश के अधीन है, जो तुम्हारा निर्माता है। सभी चीजों की बागडोर उसके हाथों में है। उसके साथ तुम्हारा संबंध ही पर्याप्त है।

जब मैंने अपने रचयिता को पहचाना और उस पर भरोसा किया, तो जो चीज़ें मुझे शत्रुतापूर्ण लगती थीं, वे अब वैसी नहीं रहीं; और वे दुःखद परिस्थितियाँ जो मुझे रुलाती थीं, वे मुझे खुशी देने लगीं। जैसा कि हमने रिसाले -ए-नूर के कई भागों में पक्के सबूतों के साथ प्रदर्शित किया है, आख़िरत में ईमान से निकलने वाली रोशनी ने मेरी अनगिनत इच्छाओं के विरुद्ध ऐसी मदद का स्रोत प्रदान किया कि यह न केवल इस तुच्छ, क्षणभंगुर और संक्षिप्त सांसारिक जीवन में मेरे मित्रों के प्रति लगाव और उनके साथ संबंध के लिए पर्याप्त था, बल्कि दुनिया में मेरी असंख्य दूरगामी इच्छाओं के लिए भी पर्याप्त था।

स्थायित्व और शाश्वत सुख का। क्योंकि अपनी दया के एक प्रकटीकरण के माध्यम से, सर्व-दयालु और सर्व-करुणामय परमेश्वर प्रत्येक बसंत ऋतु की मेज़ पर इस पृथ्वी पर, जो उसका अस्थायी अतिथि-गृह और ब्रह्मांड में एक महल है, असंख्य रमणीय, कलात्मक उपहार रखता है, ताकि अपने मेहमानों को एक या दो घंटे के लिए प्रसन्न कर सके। फिर, उन्हें क्षुधावर्धक के रूप में प्रस्तुत करने के बाद, वह अपने सेवकों के शाश्वत जीवन के लिए असंख्य किस्मों से आठ शाश्वत स्वर्ग भर देता है। इसलिए, जो लोग विश्वास के माध्यम से ऐसे सर्व-दयालु और दयालु परमेश्वर की दया पर भरोसा करते हैं और उसके साथ अपने संबंध के बारे में जानते हैं, उन्हें निश्चित रूप से सहायता का ऐसा स्रोत मिलता है, जिसकी थोड़ी सी भी मात्रा असंख्य महत्वाकांक्षाओं को अनंत काल तक बढ़ाने की सुविधा प्रदान करती है, जिससे उनकी प्राप्ति संभव हो जाती है।

इसके अलावा, ऊपर वर्णित श्लोकों में व्यक्त सत्य के माध्यम से, विश्वास के विकिरण से निकलने वाला प्रकाश इतना चमकीला दिखाई दिया कि उसने दिन के उजाले की तरह छह अंधेरी दिशाओं को रोशन कर दिया। इसने मेरे छात्रों और दोस्तों की मृत्यु और मेरे गुरु के विनाश से उत्पन्न मेरे दुख को दूर कर दिया , और मुझे याद दिलाया, "वह दुनिया जहाँ तुम्हारे दोस्त चले गए हैं, वह अंधेरी नहीं है। उन्होंने केवल स्थान बदल लिया है; तुम उनसे फिर मिलोगे।" इसने मेरे आँसुओं को रोक दिया और मुझे समझा दिया कि मुझे ऐसे लोग मिलेंगे जो उनके जैसे होंगे और जो इस दुनिया में उनकी जगह लेंगे।

सारी प्रशंसा और धन्यवाद ईश्वर को, मेदरेस के साथ
इस्पार्टा के उन्होंने वान के मृत मेदरेस को जीवन में वापस लाया , और, एक अर्थ में, उन्होंने वहां मेरे दोस्तों को अधिक संख्या में और मूल्यवान छात्रों और लोगों के साथ जीवन में वापस लाया।

यहाँ मित्रों। तो मुझे पता चला कि दुनिया शून्य या अर्थहीन नहीं है, और इसे बर्बाद बंजर भूमि के रूप में देखना मेरी गलत सोच थी। बल्कि, सच्चे गुरु की बुद्धि की आवश्यकता के अनुसार, दुनिया लोगों द्वारा बनाए गए दृश्यों को बदलती है और उनके संदेशों को नवीनीकृत करती है। एक पेड़ के नए फल की तरह-

जो लोग काटे जा चुके हैं, उनके स्थान पर, मानव जाति में मृत्यु और अलगाव वास्तव में नवीनीकरण और ताज़गी है। विश्वास के दृष्टिकोण से, वे नवीनीकरण हैं जो दोस्तों की कमी के कारण दर्दनाक दुःख का कारण नहीं बनना चाहिए, बल्कि एक मीठा दुःख है जो किसी अन्य, बेहतर जगह पर फिर से मिलने के लिए बिछड़ने से उत्पन्न होता है।

इन आयतों ने ब्रह्मांड में उन प्राणियों के चेहरे को भी रोशन कर दिया जो पहले की भयावह स्थिति के कारण अंधकारमय दिखाई दे रहे थे। इसलिए, मैं इसके लिए धन्यवाद देना चाहता था, और अरबी में निम्नलिखित पंक्तियाँ मेरे दिमाग में आईं; उन्होंने उसी वास्तविकता का वर्णन किया। मैंने कहा:

> विश्वास के प्रकाश के लिए परमेश्वर की स्तुति हो, जो यह दर्शाता है कि जिन्हें अजनबी, विरोधी, निर्जीव, डरावने और रोते हुए अनाथ समझा जाता था, वे वास्तव में प्यारे लोग, भाई और बहन, जीवित साथी, सार्थक परिणामों के लिए नियोजित, आनन्दित, परमेश्वर की स्तुति करने वाले और उसके नामों के जाप करने वाले हैं।

चूँकि मुझे अपने व्यक्तिगत संसार के साथ-साथ सम्पूर्ण विश्व के सभी प्राणियों को परमेश्वर की स्तुति और महिमा में लगे हुए मानने का अधिकार है, और उन सभी प्राणियों के साथ, जो अपने स्वभाव की जीभ के माध्यम से व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से परमेश्वर की स्तुति और महिमा करते हैं, इन कर्तव्यों में उनका उपयोग करने के इरादे से, मैं कहता हूँ, "विश्वास के प्रकाश के लिए परमेश्वर की सारी स्तुति और धन्यवाद हो।"

इसके अतिरिक्त, जीवन के सच्चे सुख, जो मेरी पिछली असावधानी और भयावह मनःस्थिति के कारण नष्ट हो गए थे, और मेरी आशाएं जो पूरी तरह सूख गई थीं, और मुझे प्रदान की गई नेमतें, जो संकुचित हो गई थीं, जैसा कि रिसाले-ए-नूर के कई अन्य भागों में स्पष्ट किया गया है, ने मेरे हृदय के चारों ओर के उस संकीर्ण क्षेत्र को इस विश्वास के प्रकाश के माध्यम से एकाएक इतना विस्तृत कर दिया कि उसमें संपूर्ण ब्रह्मांड समाया हुआ था।

होरहोर मेदरेस के बाग में जो नेमतें मुरझा गई थीं और जिनका स्वाद खत्म हो गया था, उनकी जगह उन्होंने इस दुनिया और आखिरत को नेमतों की एक दयालु मेज बना दिया। ईमान की रोशनी ने दस या उससे ज़्यादा इंसानी अंगों जैसे कि आँख, कान या दिल को नहीं दिखाया, बल्कि सौ अंगों में से हर एक को एक ऐसी बहुत लंबी भुजा के रूप में दिखाया जिसे ईमानवाले अपनी-अपनी हद के हिसाब से फैला सकते थे ताकि वे उन दोनों मेज़ों के हर तरफ से नेमतें इकट्ठा कर सकें। इसलिए, इस महान सत्य को व्यक्त करने और इनके लिए धन्यवाद देने के लिए

असीम उपहारों से अभिभूत होकर मैंने निम्नलिखित शब्द कहे:

> ईमान की रोशनी की उदारता के लिए मेरे रचयिता को सारी प्रशंसा और धन्यवाद है, क्योंकि यह दुनिया और आखिरत के दो क्षेत्रों को उदारता और दया से भरपूर दिखाती है, जिससे प्रत्येक आस्तिक अपने रचयिता की अनुमति से विकसित होने वाली अपनी असंख्य इंद्रियों के साथ उचित रूप से लाभ उठा सकता है।

चूँकि इस संसार में विश्वास का इतना बड़ा प्रभाव है, इसलिए अनन्त काल के क्षेत्र में इसका निश्चित रूप से ऐसा फल और विकिरण होगा कि इस संसार में मन द्वारा उन्हें समझा या वर्णित नहीं किया जा सकेगा।

और इसलिए, आप बुज़ुर्ग लोग, जो मेरी तरह बुढ़ापे के कारण कई दोस्तों से अलग होने का दर्द झेलते हैं! आप में से सबसे बड़ा व्यक्ति मुझसे उम्र में चाहे जितना बड़ा क्यों न हो, असल में, मैं उससे बड़ा ही होना चाहिए। क्योंकि मेरे स्वभाव में निहित अत्यधिक करुणा के कारण मुझे अपने साथियों पर अत्यधिक दया आती है, और उसी करुणा के कारण, मैंने अपने अलावा अपने हज़ारों भाइयों के दर्द को भी सहा है, मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं सैकड़ों साल जी चुका हूँ। इसके अलावा, चाहे आपने अलगाव की विपत्ति से कितना भी दुख क्यों न झेला हो, आप उस विपत्ति से उस हद तक प्रभावित नहीं हो सकते, जितना कि मैंने झेला है।

क्योंकि मेरा कोई बच्चा नहीं है कि मैं सिर्फ़ उसके बारे में सोचूं। दया और करुणा की मेरी गहरी सहज भावना मुझे हज़ारों बच्चों और यहाँ तक कि मासूम बच्चों के दुखों के सामने दर्द और सहानुभूति महसूस कराती है।

जानवरों के लिए नहीं। न ही मेरा अपना कोई घर है कि मैं सिर्फ़ उसकी देखभाल करूँ। बल्कि, एक मुसलमान होने के नाते, मैं इस देश से और, वास्तव में, पूरे मुस्लिम जगत से इस तरह गहराई से जुड़ा हुआ हूँ, जैसे कि हर एक मेरा अपना घर हो। इन दो महान घरों में मेरे साथी मुसलमानों की पीड़ा को देखकर मुझे बहुत दुख होता है, और मैं उनसे अलग होने पर दुखी हूँ।

और इसलिए बुढ़ापे से होने वाले इन सारे दुखों और जुदाई की मुसीबत के सामने ईमान की रोशनी मेरे लिए काफी थी। इसने मुझे कभी न बुझने वाली उम्मीद, रोशनी और कभी न खत्म होने वाली तसल्ली दी। तो बुढ़ापे से होने वाले अंधेरे, असावधानी, दुख और तकलीफों के सामने तुम्हारे लिए भी यह काफी होगी। असल में बुढ़ापा जो बिल्कुल अंधेरा और रोशनी और तसल्ली से रहित है और सबसे दर्दनाक और भयानक जुदाई है, वह गुमराह लोगों और भटके हुए लोगों का बुढ़ापा और जुदाई है। ऐसी उम्मीद, रोशनी और तसल्ली देने वाले ईमान और उसके असर का अनुभव करने के लिए इंसान को बुढ़ापे के लायक और इस्लाम के मुताबिक इबादत के मूड में होना चाहिए। हम इसे नौजवानों की नकल करके, असावधानी में सिर डुबोकर और बुढ़ापे को भूलकर अनुभव नहीं कर सकते।

हदीस पर गौर करें , जिसका अर्थ है, "तुम्हारे बीच सबसे अच्छे युवा वे हैं जो देखभाल और बुराइयों से बचने में बूढ़ों के समान हैं, जबकि तुम्हारे बुजुर्गों में सबसे बुरे वे हैं जो बुराइयों में युवाओं की नकल करते हैं

और असावधानी।”19

मेरे बुज़ुर्ग भाइयों और बहनों! एक और हदीस है जिसमें कहा गया है, "ईश्वरीय दया साठ या सत्तर साल के बुज़ुर्ग मोमिन द्वारा ईश्वरीय दरबार में की गई प्रार्थनाओं को अनुत्तरित छोड़ने में शर्मिंदा है।"20 चूँकि ईश्वरीय दया आपको इस तरह का सम्मान देती है, इसलिए उसकी पूजा करके इस सम्मान के प्रति सम्मान रखें!

चौदहवीं आशा

चौथी किरण, कुरान के इस चमकदार कथन, ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है (3: 173) की व्याख्या करते हुए, आरंभ में संक्षेप में कहती है:

सांसारिक लोगों ने मुझे सब कुछ से अलग कर दिया था, जिसके कारण मैं पांच प्रकार के अलगाव से पीड़ित था।
संकट से उपजी असावधानी के कारण , रिसाले-ए-नूर की सांत्वना देने वाली और मददगार रोशनी की ओर न देखते हुए , मैंने अपने हृदय और आत्मा की ओर रुख किया। मैंने देखा कि अनंत नपुंसकता और असीम ज़रूरत के साथ-साथ, स्थायित्व का एक अत्यंत शक्तिशाली प्रेम, अस्तित्व के प्रति एक गहन लगाव और जीवन के लिए एक महान तड़प मुझ पर हावी हो रही थी। लेकिन एक भयानक नश्वरता उस स्थायित्व को बुझा रही थी। उस मनोदशा में, मैंने वियोग से पीड़ित कवि की तरह कहा:

19 अत-तबरानी, अल-मुअजम अल-कबीर, 22:83; अबू याला, अल-मुस्नद, 13:467. (ट्र.)

20 अत-तबरानी, अल-मुजम अल-अवसत, 5:270। (ट्र.)

> जबकि मेरा हृदय स्थायित्व चाहता था, सत्य परमेश्वर ने मेरे शरीर की नश्वरता का न्याय किया;
>
> मैं एक असाध्य बीमारी से पीड़ित हूँ; यह कितने अफ़सोस की बात है कि लुकमान को इसका पता नहीं है!

मैंने निराशा में अपना सिर झुका लिया। अचानक आयत, ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना अच्छा रक्षक है! (3: 173) मेरी सहायता के लिए आई, और मुझे इसे ध्यान से पढ़ने के लिए कहा। इसलिए मैंने इसे हर दिन पाँच सौ बार पढ़ा। इसे पढ़ते समय, इसके असंख्य अमूल्य प्रकाशों में से, ईश्वर की पर्याप्तता के नौ पहलू21 मेरे सामने प्रकट हुए, न केवल "ज्ञान से आने वाली निश्चितता" के स्तर पर, बल्कि "अवलोकन से आने वाली निश्चितता" के स्तर पर भी।

परमेश्वर की पर्याप्तता का पहला प्रकाशमान पहलू

स्थायित्व के प्रति मेरा सहज प्रेम, जो मूलतः मेरे अस्तित्व में पूर्णता और महिमा के एक नाम की अभिव्यक्ति से उत्पन्न होता है, जो अपनी पूर्ण पूर्णता के कारण स्वाभाविक रूप से प्रिय है, और जिसे इसलिए एस- की ओर निर्देशित किया जाना चाहिए था।

उस परम सिद्ध की पूर्णता और स्थायित्व की भावना, असावधानी के कारण अपना मार्ग भूल गई थी और छाया में आसक्त हो गई थी। उसने सांसारिक जीवन की स्थायित्व की खोज की थी, जो कि मूलतः शाश्वत का एक क्षणभंगुर दर्पण से अधिक कुछ नहीं है।

21 यहाँ परमेश्वर की पर्याप्तता के छः पहलुओं का ज़िक्र किया गया है। (ट्र.)

फिर कुरान का कथन, ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है, आया और पर्दा उठा दिया। मैंने "पूर्ण निश्चय" की डिग्री के साथ देखा और महसूस किया और अनुभव किया कि मेरे स्थायित्व का सच्चा आनंद और खुशी सही रूप से और अधिक परिपूर्ण रूप में अनन्त पूर्णता के स्थायित्व में और यह विश्वास करने और पुष्टि करने में निहित है कि वह मेरा भगवान और देवता है। इसके प्रमाण चौथी किरण (किरणों में शामिल) में स्पष्ट किए गए हैं, जो कि ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है, इस आयत पर ग्रंथ है, जो लगातार बारह पैराग्राफ में एक बढ़िया, गहन तरीके से है।

परमेश्वंर की पर्याप्तता का दूसरा प्रकाशमान पहलू

ऐसे समय में जब वृद्धावस्था, निर्वासन, एकांत और एकांत मेरे स्वभाव में अंतहीन नपुंसकता के साथ जुड़ गए थे, जब "सांसारिक" लोग अपनी योजनाओं और जासूसों के साथ मुझ पर हमला कर रहे थे, मैंने अपने दिल से कहा, "सेनाएं एक अकेले आदमी पर हमला कर रही हैं जिसके हाथ बंधे हैं, और जो बीमार और कमजोर है।

क्या मेरे लिए कोई सहारा नहीं है?" मैंने इस आयत का सहारा लिया, ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना अच्छा संरक्षक है, और इससे मुझे निम्नलिखित बातें पता चलीं:

विश्वास के दस्तावेज़ के ज़रिए आप एक ऐसे परम शक्ति वाले शासक से जुड़ जाते हैं जो हर वसंत में धरती पर पौधों और जानवरों की सभी सेनाओं को एकदम सही तरीके से सुसज्जित करता है, जो सैकड़ों-हज़ारों अलग-अलग राष्ट्रों से बनी है। इसके अलावा, सर्व-दयालु के रूप में, वह छोटी-छोटी सुरक्षाओं में जगह देता है-

सभी जानवरों और मनुष्यों का भरण-पोषण

सभी प्रकार के खाद्य पदार्थों के अर्क के रूप में, जिन्हें हम बीज और अनाज कहते हैं और जिनकी तुलना हाल ही में खोजे गए मांस, चीनी और अन्य खाद्य पदार्थों के अर्क से की जा सकती है, लेकिन उनसे सौ गुना अधिक परिपूर्ण हैं। उन्होंने उन अर्क में निर्देश शामिल किए हैं

ईश्वरीय नियति के बारे में कि वे खाद्य पदार्थों में विकसित और विकसित होते हैं। उन छोटे-छोटे डिब्बों का निर्माण और उनका भोजन की विस्तृत मेजों में विकसित होना काफ़-नून के कारखाने में इतनी तेज़ी, आसानी और प्रचुरता के साथ होता है, जो "कुन! [हो!]" का आदेश देता है , कि कुरान कहता है कि निर्माता केवल आदेश देता है और यह अस्तित्व में आ जाता है।22 चूँकि आपके पास विश्वास के दस्तावेज़ द्वारा सक्षम उसके साथ संबंध के माध्यम से ऐसा समर्थन है, इसलिए आप एक अनंत शक्ति और ताकत पर भरोसा कर सकते हैं। जैसा कि मैंने आयत से यह सबक सीखा, मुझे ऐसी नैतिक ताकत मिली कि मुझे लगा कि मेरे पास न केवल अपने वर्तमान दुश्मनों, बल्कि पूरी दुनिया को चुनौती देने के लिए विश्वास की पर्याप्त शक्ति है। अपनी पूरी आत्मा के साथ मैंने घोषणा की, "भगवान हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना अच्छा संरक्षक है!"

परमेश्वर की पर्याप्तता का तीसरा प्रकाशमान पहलू

उन लोगों के अत्याचार सहने के बाद मैंने पाया कि संसार से मेरी आसक्ति टूट गई है।

22 लेखक इस आयत का हवाला देता है, जब वह किसी चीज़ को होना चाहता है, तो बस उसे कहता है, "हो जा!" और वह हो जाती है (36:82)। (ट्र.)

निर्वासन और बीमारियों के बावजूद, विश्वास ने मुझे याद दिलाया कि मुझे एक शाश्वत दुनिया, एक चिरस्थायी क्षेत्र में सतत खुशी के लिए नियत किया गया था। तब मैंने अफसोस के साथ आहें भरना छोड़ दिया, जिससे केवल और अधिक दुख और तड़प पैदा हुई, और मैं प्रसन्न और खुश हो गया। हालाँकि, आत्मा का यह आदर्श या लक्ष्य और मानव स्वभाव का अंतिम परिणाम केवल एक परम सर्वशक्तिमान की अनंत शक्ति के माध्यम से ही महसूस किया जा सकता है, जो अपने सभी प्राणियों के कार्य, विश्राम, आचरण और स्थितियों को वचन और कर्म से जानता और रिकॉर्ड करता है, और मनुष्यों पर असीम अनुग्रह और महत्व प्रदान करने के माध्यम से, जिन्हें वह अपना मित्र और अभिभाषक मानता है, और जिन्हें उसने सभी प्राणियों की तुलना में उनकी पूर्ण नपुंसकता के बावजूद श्रेष्ठ दर्जा दिया है। इन दो बिंदुओं पर विचार करते हुए—अर्थात्, ऐसी शक्ति की गतिविधि और स्पष्ट रूप से नपुंसक और तुच्छ मनुष्यों की वास्तविकता में महत्व वह कितना उत्कृष्ट संरक्षक है, और इसने मुझे प्रत्यय "-ना" (" हमारे लिए") पर ध्यान देने और उन प्राणियों के प्रति चौकस रहने के लिए कहा जो कह रहे हैं, "परमेश्वर हमारे लिए पर्याप्त है," मेरे साथ या तो मौखिक रूप से या उनके स्वभाव की जीभ के माध्यम से।

मैंने तुरन्त देखा कि असंख्य पक्षी

और मक्खियाँ (जो लघु पक्षी हैं) और असंख्य जानवर, पौधे और पेड़, मेरी तरह, भगवान का जाप कर रहे थे

हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना अच्छा संरक्षक है!
वे सभी को यह तथ्य याद दिलाते हैं: कि उनके पास एक ऐसा संरक्षक है जो उनके जीवन की सभी आवश्यक आवश्यकताओं की गारंटी देता है कि हमारी आँखों के सामने और विशेष रूप से वसंत ऋतु में, उनकी विशाल और सर्व-महान शक्ति अत्यधिक प्रचुरता से, सबसे बड़ी सहजता से, विशाल पैमाने पर, सबसे बड़ी कला के साथ, संतुलित और सुव्यवस्थित तरीके से, और एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न रूपों में, बिना किसी दोष, दोष या भ्रम के, अंडे, तरल पदार्थ की बूंदों, अनाज और बीजों से जो एक दूसरे के बहुत समान दिखते हैं और जिनके घटक तत्व समान हैं, पक्षियों की एक लाख प्रजातियाँ, लाखों जानवर, लाखों प्रकार के पौधे और लाखों प्रकार के पेड़। इन सभी प्राणियों के बीच अनंत अंतर के बावजूद समानता और समानता हमें उनकी एकता और एकता को प्रदर्शित करती है, और हमें बताती है कि उनके प्रभुत्व और रचनात्मकता के उन कार्यों में कोई हस्तक्षेप या भागीदारी नहीं हो सकती है। जो लोग एक आस्तिक व्यक्ति के रूप में मेरी व्यक्तिगत पहचान और मानवीय स्वभाव को समझना चाहते हैं, जो सभी आस्तिक लोगों की तरह है, उन्हें प्रथम पुरुष बहुवचन में शामिल 'मैं' के अर्थ को देखना चाहिए 'हम' ईश्वर में हमारे लिए पर्याप्त है। मेरा या किसी आस्तिक का दिखने वाला तुच्छ, जरूरतमंद अस्तित्व क्या है? जीवन क्या है? मानवता क्या है? इस्लाम क्या है? निश्चित, सत्यापित विश्वास क्या है? ईश्वर का ज्ञान क्या है? प्रेम कैसा होना चाहिए? वे पा सकते हैं

इन सभी सवालों के जवाब.

परमेश्वर की पर्याप्तता का चौथा प्रकाशमान पहलू

एक बार, जब मैं असावधानी के एक ऐसे दौर में था, जब मैं बुढ़ापे, निर्वासन, बीमारी और हार जैसी परिस्थितियों से अभिभूत महसूस कर रहा था, तो मैं अपने अस्तित्व के बारे में बहुत चिंतित था, जिससे मैं बहुत जुड़ा हुआ था और जिसके साथ मैं मोहित था। मैं चिंतित था कि मेरा अस्तित्व, साथ ही साथ अन्य सभी प्राणी, मृत्यु की ओर बढ़ रहे थे, अस्तित्व से वंचित हो रहे थे। इसलिए, एक बार फिर, मैंने श्लोक का सहारा लिया। इसने मुझसे कहा, "मेरे अर्थ पर ध्यान दो; इसे विश्वास की दूरबीन से देखो!"

इसलिए मैंने विश्वास की नज़र से देखा और पाया कि अन्य सभी विश्वासियों की तरह, मेरा छोटा सा अस्तित्व एक असीमित अस्तित्व का दर्पण था, और अनंत विस्तार के माध्यम से, असंख्य अस्तित्वों को प्राप्त करने का साधन था, और ज्ञान का एक शब्द था जो खुद से अधिक मूल्यवान असंख्य स्थायी अस्तित्वों के फल देता है। इसलिए, मैं ज्ञान की निश्चितता के साथ जानता था कि उस अस्तित्व के साथ संबंध में रहना, एक पल के लिए भी, शाश्वत अस्तित्व जितना ही मूल्यवान था। क्योंकि मैंने विश्वास की चेतना के माध्यम से समझा कि मेरा अस्तित्व कला का एक काम और अनिवार्य रूप से विद्यमान अस्तित्व की अभिव्यक्ति था। इसलिए, अकेलेपन की अनिवार्य रूप से निराधार चिंताओं और असंख्य अलगावों और उनके दर्द से बचकर, मैंने उन प्राणियों के साथ भाईचारे के संबंध और बंधन बनाए जिन्हें मैं प्यार करता हूँ,

ईश्वरीय कार्य और नाम प्राणियों और विशेष रूप से जीवित प्राणियों के लिए जिम्मेदार हैं, और मैं जानता था कि एक अस्थायी अलगाव के बाद उन सभी के साथ एक स्थायी मिलन था। और इसलिए, विश्वास के माध्यम से और निर्माता और उसके सभी प्राणियों के साथ विश्वास के माध्यम से संबंध के माध्यम से, सभी विश्वासियों की तरह, मेरे अस्तित्व ने अलगाव से अछूते असंख्य अस्तित्वों की रोशनी प्राप्त की। यहां तक कि जब मेरा अस्तित्व चला जाता है, क्योंकि वे पीछे रह जाते हैं, तो यह उतना ही खुश होता है जैसे कि यह भी रह गया था।

संक्षेप में कहें तो मृत्यु अलगाव नहीं है, यह मिलन है; यह एक वियोग है।
स्थान परिवर्तन; यह एक शाश्वत फल पैदा कर रहा है।

परमेश्वर की पर्याप्तता का पाँचवाँ प्रकाशमान पहलू

एक बार फिर, मेरा जीवन बहुत ही कठोर परिस्थितियों से हिल गया, और मेरा ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया।

मैंने देखा कि मेरी ज़िंदगी तेज़ी से गुज़र रही थी, आख़िरत के करीब पहुँच रही थी; यह कठोर परिस्थितियों में बुझने लगी थी। मैंने दुखी होकर सोचा कि, जैसा कि रिसाले -ए-नूर23 **में बताया गया है कि ईश्वरीय नाम, सर्व-जीवित** , इसके महत्वपूर्ण कार्यों और महान गुणों और लाभों के साथ, जीवन इतनी तेज़ी से बुझने के लायक नहीं था, बल्कि इसे लंबे समय तक टिकना चाहिए था। मैंने फिर से अपने शिक्षक, आयत का सहारा लिया, ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना बढ़िया रक्षक है! इस बार इसने मुझसे कहा, "जीवन को अपने से अलग समझो ।

23 इसकी चर्चा द ग्लेम्स के तीसवें भाग के पांचवें भाग में की गई है। (ट्र.)

उस सर्व-जीवित और स्वयं-निर्भर का दृष्टिकोण जिसके द्वारा सभी जीवित हैं, जो तुम्हें जीवन देता है!

मैंने ऐसा किया और देखा कि अगर मेरा जीवन एक में मेरी ओर देखता है तो वह सौ में सर्व-से एक मेरी जीवित और आत्म-निर्वाह-सम्मान की ओर देखता है। और अगर, इसके परिणामों में ओर देखता है, तो एक हजार मेरे निर्माता की ओर देखते हैं। इसलिए, ईश्वर की सीमाओं के भीतर इसके टिकने का एक क्षण

अच्छी खुशी और स्वीकृति ही पर्याप्त है; लंबे समय की आवश्यकता नहीं है। इस सत्य को तीसवीं झलक में पाँच संकेतों और चार मामलों में समझाया गया है

यह पुस्तक उन लोगों के लिए है जो मरे नहीं हैं या जो मरना चाहते हैं

जीवित लोगों को इन संकेतों और मामलों में जीवन की प्रकृति और वास्तविकता और उसके सच्चे अधिकारों की तलाश करनी चाहिए; वे उन्हें पा लेंगे और जीवन में उठ खड़े होंगे!

सारांश इस प्रकार है: जितना अधिक जीवन को समझा जाता है, जिससे वह सर्व-जीवित और स्वयं-अवस्था की ओर देखने लगता है, और जितना अधिक विश्वास जीवन और जीवन की आत्मा बन जाता है, उतना ही वह शाश्वत हो जाता है और अनंत फल देता है। यह इतना ऊंचा भी हो जाता है कि यह अनंत काल की अभिव्यक्ति को पुनः प्राप्त करता है। अब यह विचारणीय नहीं रह जाता कि जीवन छोटा है या लंबा।

परमेश्वर की पर्याप्तता का छठा प्रकाशमान पहलू

ऐसे समय में जब बुढ़ापा मुझे समय के अंत की घटनाओं के बीच दुनिया से मेरे व्यक्तिगत प्रस्थान की याद दिला रहा था, जो दुनिया के समग्र विनाश का संकेत देता है - सामान्य बिछड़ने का समय, सुंदरता के प्रति मेरा सहज प्रेम और पूर्णता के प्रति लगाव था -

असाधारण रूप से संवेदनशील तरीके से विकसित किया गया है।
असाधारण जागरूकता और दुःख के साथ मैंने देखा कि क्षणभंगुरता और पतन, जो हमेशा विनाशकारी होते हैं, और मृत्यु, जो अलगाव का निरंतर कारण है, इस सुंदर दुनिया और इन प्यारे प्राणियों को भयानक तरीके से मार रहे थे और उनकी सुंदरता को नष्ट कर रहे थे। जब सृष्टि के प्रति मेरा सहज प्रेम तीव्र रूप से उबल पड़ा और इस स्थिति के खिलाफ विद्रोह कर दिया, तो एक बार फिर मैंने सांत्वना पाने के लिए इस श्लोक का सहारा लिया: ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना अच्छा संरक्षक है! इसने मुझसे कहा, "मुझे पढ़ो और मेरे अर्थ पर ध्यान से विचार करो!"

अतः मैं सूरत अन-नूर की आयत 35 के वेधशाला में प्रवेश कर गया , ईश्वर आकाशों और धरती का प्रकाश है
(कविता के अंत तक) और विश्वास की दूरबीन से कविता के सबसे दूर के स्तरों को देखा, ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना बढ़िया संरक्षक है! और विश्वास की अंतर्दृष्टि की सूक्ष्मदर्शी से इसके सबसे सूक्ष्म अर्थों को देखा। मैंने निम्नलिखित देखा:

दर्पण, कांच के टुकड़े, पारदर्शी चीजें और यहां तक कि बुलबुले भी सूर्य के प्रकाश और उसके प्रकाश में मौजूद सात रंगों की विभिन्न छिपी हुई सुंदरता को प्रकट करते हैं; और उनके लुप्त होने, नवीनीकरण और नए रंगों से प्रतिस्थापन तथा विभिन्न क्षमताओं और अपवर्तन के माध्यम से वे इन सुंदरताओं के नवीनीकरण और पुनः प्रकटीकरण का कारण बनते हैं। उसी तरह, सर्व-दयालु की पवित्र सुंदरता के लिए दर्पण के रूप में कार्य करने के लिए,

महामहिम के सुंदर एक, शाश्वत सूर्य, और उनके सभी सुंदर नामों की स्थायी सुंदरता के लिए, और उनकी अभिव्यक्तियों के निरंतर नवीनीकरण का कारण बनने के लिए, ये सुंदर प्राणी, ये प्यारे प्राणी निरंतर प्रवाह में आते हैं और चले जाते हैं। जैसा कि रिसाले-ए-नूर में शक्तिशाली सबूतों के साथ विस्तार से बताया गया है, वे प्रदर्शित करते हैं कि उनके द्वारा प्रकट की गई सुंदरता उनकी अपनी संपत्ति नहीं है, बल्कि एक शाश्वत, पारलौकिक, पवित्र सौंदर्य के संकेत, संकेत, झलकियाँ और अभिव्यक्तियाँ हैं जो प्रकट होना चाहती हैं। स्वस्थ मन और दिल वाला कोई भी व्यक्ति जो उन्हें पढ़ता है, वह समझ जाएगा और पुष्टि करेगा कि उनका अस्तित्व, साथ ही साथ हर चीज का अस्तित्व, एक चमत्कार है, और वे इसे विकसित करने का प्रयास करेंगे।

पंद्रहवीं आशा

जब मैं एक बार एमिरदाग में जबरन निवास कर रहा था,[24]

एकांत कारावास में, असहनीय निगरानी और दबाव के कारण मुझे जो यातनाएँ दी गईं, उससे मैं जीवन से ऊब गया था। मुझे जेल से रिहा होने का अफसोस था और मैं अपनी पूरी आत्मा से डेनिज़ली जेल के लिए तरस रहा था, यहाँ तक कि कब्र में जाने की भी इच्छा थी। लेकिन, जब मैं सोच रहा था कि जेल या कब्र इस तरह के जीवन से बेहतर हैं, तो ईश्वरीय कृपा मेरी मदद के लिए आई और मुझे शिष्यों की शिक्षा प्रदान की।

24 एमिरदाग अफ्योन का एक जिला है, जो तुर्की के पश्चिम में एक प्रांत है। (ट्र.)

मेड्रेसेटुज़ -ज़हरा , जिनके कलम ऐसे थे जैसे नकल करने वाली मशीनें अभी-अभी ईजाद हुई हों। रिसाले-ए-नूर के मूल्यवान संग्रहों में से प्रत्येक की एक साथ पाँच सौ प्रतियाँ छपीं; एक कलम पाँच सौ हो गई थी। इस तथ्य ने कि इस काम ने व्यापक पैमाने पर नए दिलों को जीता, मुझे उस कष्टदायक जीवन से प्यार हो गया, जिससे मैं अंतहीन आभार व्यक्त करता हूँ।

कुछ समय बाद, रिसाले-ए-नूर के गुप्त शत्रु
अब मैं अपनी जीत को बर्दाश्त नहीं कर सका और सरकार को हमारे खिलाफ भड़का दिया। फिर से मेरे लिए जीवन कठिन होने लगा। फिर अचानक, ईश्वरीय कृपा प्रकट हुई: मामले से जुड़े अधिकारी, जिन्हें वास्तव में रिसाले -ए-नूर की सबसे अधिक आवश्यकता थी, ने अपने कर्तव्यों के संबंध में इसकी जब्त की गई प्रतियों का बड़ी उत्सुकता और सावधानी से अध्ययन किया और उनके दिल इसके प्रति अनुकूल हो गए। जब उन्होंने इसकी आलोचना करने के बजाय इसकी सराहना करना शुरू किया, तो रिसाले-ए-नूर के अध्ययन का दायरा बहुत बढ़ गया। इसने हमारे भौतिक नुकसानों की तुलना में सौ गुना अधिक आध्यात्मिक लाभ उत्पन्न किया, जिससे हमारी चिंता और परेशानी कम हो गई।

फिर, गुप्त, पाखंडी दुश्मनों ने सरकार का ध्यान मेरी ओर आकर्षित किया। उन्होंने मेरे पुराने या पूर्व सैद के दिनों के दौरान मेरी राजनीतिक गतिविधियों का वर्णन किया। उन्होंने न्याय विभाग, और शिक्षा अधिकारियों, और पुलिस, और आंतरिक मामलों के मंत्रालय दोनों को मुझ पर संदेह करने के लिए मजबूर किया। कुछ राजनीतिक रुझानों और कुछ लोगों के उकसावे के कारण

कम्युनिस्टों, जो वास्तव में अराजकतावादी थे, के प्रति संदेह और अधिक व्यापक हो गया। उन्होंने हम पर दबाव डालना शुरू कर दिया और हमें गिरफ्तार कर लिया, और रिसाले-ए-नूर के उन हिस्सों को जब्त कर लिया जो उनके हाथ में आ गए।

रिसाले -ए-नूर के छात्रों का प्रदर्शन ठप्प पड़ गया।

लोगों की नज़रों में मुझे बदनाम करने के ख़याल से, कई अधिकारियों ने इतने बेतुके झूठे आरोप लगाए कि कोई भी उन पर यकीन ही नहीं कर सकता था। उन्होंने सबसे अविश्वसनीय बदनामी फैलाने की कोशिश की, लेकिन वे किसी को भी उस पर यकीन नहीं दिला पाए।

फिर किसी अत्यंत मामूली बहाने पर उन्होंने मुझे सर्दियों के अत्यंत ठंडे दिनों में गिरफ्तार कर लिया और जेल में एकांत कारावास में रखा, एक बड़ी और अत्यंत ठंडी कोठरी में, जिसमें किसी भी प्रकार की हीटिंग की व्यवस्था नहीं थी।

जब मैं अपने छोटे से कमरे में था तो दिन में कई बार चूल्हा जलाने का आदी था और अपनी कमज़ोरी और बीमारी की वजह से हमेशा अंगीठी में जलते कोयले रखता था। इसके बावजूद, मैं अपनी कमज़ोरी और बीमारी की वजह से ठंड को बड़ी मुश्किल से ही झेल पाता था। कोठरी में संघर्ष करते हुए, ठंड की वजह से होने वाले बुखार और भयंकर परेशानी और गुस्से से पीड़ित होते हुए, ईश्वरीय कृपा से मेरे दिल में एक सच्चाई उभरी। इसके बाद मेरी आत्मा में क्या हुआ:

आपने जेल को "मदरसे-ए यूसुफिया" - पैगंबर जोसेफ का स्कूल कहा। और जब आप डेनी-ज़ली जेल में थे, तो हालात हज़ार गुना ज़्यादा थे

आपकी तकलीफ़ ने ऐसा आध्यात्मिक लाभ पहुँचाया कि दूसरे कैदियों को रिसाले-ए-नूर से फ़ायदा हुआ और इसकी जीतें बड़े पैमाने पर हुईं; इस कारण आपने शिकायत करने के बजाय हज़ारों शुक्रिया अदा किए। उन्होंने आपकी कैद और कठिनाई के हर घंटे को इबादत के दस घंटों के बराबर बना दिया और वे क्षणभंगुर घंटे शाश्वत हो गए। ईश्वर की इच्छा से, यह तथ्य कि आपके तीसरे स्कूल ऑफ़ जोसेफ़ में कैद की सज़ा भुगतने वाले लोग रिसाले-ए-नूर से लाभ उठाएँगे और सांत्वना पाएँगे-

उसमें जो कुछ भी है, वह तुम्हारे इस ठंडे, कठोर कष्ट को गर्म करके उसे आनन्द में बदल देगा। यदि तुम जिन पर क्रोधित हो, वे धोखा खाए हुए हैं, तो वे अनजाने में तुम्हारे साथ बुरा व्यवहार कर रहे हैं। इसलिए, वे क्रोध के पात्र नहीं हैं। लेकिन यदि वे तुम्हें जानबूझ कर, द्वेष के कारण और गुमराही के कारण पीड़ा दे रहे हैं, तो वे शीघ्र ही मृत्यु के अनन्त दण्ड के माध्यम से कब्र के एकान्त कारावास में प्रवेश करेंगे, जहाँ वे निरन्तर यातना भोगेंगे। उनके उत्पीड़न के कारण, तुम पुण्य और आध्यात्मिक सुख दोनों अर्जित कर रहे हो, और अपने क्षणभंगुर घंटों को शाश्वत बना रहे हो, और ईमानदारी के साथ विद्वत्तापूर्ण और धार्मिक कर्तव्यों का पालन कर रहे हो।

मैंने पूरी ताकत से कहा, "सारी प्रशंसा और धन्यवाद भगवान को है!" एक इंसान होने के नाते, मुझे उन अत्याचारियों पर दया आई और मैंने प्रार्थना की, "हे मेरे भगवान, उन्हें सुधारो!" जैसा कि मैंने आंतरिक मामलों के मंत्रालय को दिए अपने बयान में लिखा था, इस नई घटना के लिए जिम्मेदार लोग, जो पूरी तरह से दोषी थे।

कम से कम दस मामलों में गैरकानूनी, वे खुद ही दोषी थे। उन अत्याचारियों ने मानवीय कानून की नज़र में भी गैरकानूनी काम किया था। सबसे अविश्वसनीय बहानों के ज़रिए उन्होंने ऐसी बदनामी और मनगढ़ंत बातें गढ़ीं कि उन्हें सुनने वाले हंस पड़े और सत्य के प्रेमी रोने लगे, जिससे निष्पक्ष लोगों को पता चल गया कि वे रिसाले -ए-नूर या उसके छात्रों पर कानून या न्याय के अनुसार हमला करने का कोई तरीका नहीं खोज पाए हैं, और इसलिए वे पागलपन की ओर बढ़ गए हैं।

उदाहरण के लिए, जिन अधिकारियों ने एक महीने तक हम पर जासूसी की थी, वे हम पर आरोप लगाने के लिए कुछ नहीं पा सके, इसलिए उन्होंने एक नोट लिखा, जिसमें कहा गया था, “सैयद के नौकर ने राक़ी **खरीदी**
दुकान से खरीदकर उसे ले गए।" नोट पर हस्ताक्षर करने के लिए कोई नहीं मिलने पर, उन्होंने आखिरकार एक शराबी, असभ्य आदमी को उठाया और उसे उस पर हस्ताक्षर करने के लिए धमकाना चाहा। यहाँ तक कि उसने भी कहा, "भगवान हमें माफ करें! इस अविश्वसनीय झूठ पर कौन हस्ताक्षर करेगा?" इसलिए उन्हें इसे फाड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा।

दूसरा उदाहरण: एक व्यक्ति जिसे मैं व्यक्तिगत रूप से नहीं जानता था और अब भी नहीं जानता, उसने मुझे अपना घोड़ा उधार दिया ताकि मैं देश में भ्रमण कर सकूँ। अपनी बीमारी के कारण और थोड़ी हवा लेने के लिए, मैं गर्मियों में ज़्यादातर दिनों में कुछ घंटों के लिए बाहर चला जाता था। अपने नियम का पालन करते हुए और किसी के प्रति ऋणी महसूस न करने के लिए, मैंने घोड़े और गाड़ी (जो उसके साथ आई थी) के मालिक को पचास लीरा की किताबें देने का वादा किया था। क्या ऐसी चीज़ में कोई ख़तरा है? लेकिन ऐसा लगता है कि यह कोई ख़तरा था।

किसी महत्वपूर्ण राजनीतिक घटना या सार्वजनिक सुरक्षा को प्रभावित करने वाली घटना के मामले में, राज्यपाल, न्यायालय के अधिकारियों और पुलिस ने हमसे लगभग पचास बार पूछा कि घोड़ा किसका है। इस निरर्थक पूछताछ को समाप्त करने के लिए, मानवीय कोमलता के कारण, एक व्यक्ति ने कहा कि घोड़ा उसका है और दूसरे ने कहा कि गाड़ी उसकी है। उन दोनों को मेरे साथ गिरफ्तार कर लिया गया।

हमने ऐसे कई बचकाने खेल देखे और कभी हंसे तो कभी रोए। हम समझ गए कि रिसाले-ए-नूर पर हमला करने वाले लोग

और इसके छात्र केवल स्वयं को मूर्ख बनाते रहे।

इन घटनाओं में से एक अजीब बातचीत इस प्रकार है: मेरी गिरफ्तारी को अधिकृत करने वाले कागज पर यह दर्ज था कि यह “सार्वजनिक व्यवस्था को बिगाड़ने” के लिए था।

दस्तावेज़ देखे बिना ही मैंने सरकारी वकील से कहा, "मैंने कल रात आपकी पीठ पीछे बात की थी। मैंने पुलिस अधिकारी से, जो पुलिस प्रमुख की ओर से मुझसे पूछताछ कर रहा था, कहा, 'अगर मैंने इस देश की सार्वजनिक सुरक्षा के लिए एक हज़ार सरकारी अभियोजकों और एक हज़ार पुलिस प्रमुखों के बराबर सेवा नहीं की है - मैंने इसे तीन बार दोहराया - तो भगवान मुझे धिक्कारें!'"

फिर उस समय, उन ठंडी परिस्थितियों में, मैं उन लोगों के प्रति क्रोध और झुंझलाहट से लगभग अभिभूत हो गया था जिनकी घृणा और बुरे इरादों ने मुझे इस स्थिति में पहुंचा दिया था।

यह असहनीय निर्वासन, एकांत, गिरफ्तारी और उत्पीड़न उस समय था जब मुझे आराम की, सर्दी से बचने की और दुनिया के बारे में चिंता करने की सबसे अधिक आवश्यकता थी।

ईश्वरीय कृपा से मेरी सहायता हुई और मेरे हृदय में निम्नलिखित विचार आया:

ईश्वरीय नियति, जो शुद्ध न्याय है, उस अत्याचार में बहुत बड़ा हाथ रखती है जो ये लोग तुम पर कर रहे हैं। तुम्हें इस जेल में खाने को मिलता है, तुम्हारी इसी व्यवस्था ने तुम्हें यहाँ बुलाया है। तुम्हें संतोष और त्याग के साथ जवाब देना चाहिए। इस स्थिति में प्रभु की बुद्धि और दया का भी बहुत बड़ा हाथ है: तुम्हें इस जेल में बंद लोगों को समझाने और उन्हें सांत्वना देने की कोशिश करनी चाहिए, ताकि तुम्हें सवाब मिल सके। तुम्हारा जवाब हज़ारों शुक्रिया और बहुत धैर्य होना चाहिए। इस स्थिति में तुम्हारी आत्मा का भी हाथ है, क्योंकि कुछ ऐसे दोष हैं जिनके बारे में तुम नहीं जानते। तुम्हारा जवाब पश्चाताप और क्षमा माँगना होना चाहिए, अपनी आत्मा को यह बताना चाहिए कि वह इस आघात के योग्य थी। इसके अलावा, तुम्हारे कुछ गुप्त शत्रुओं का भी इसमें हाथ है, जो अपनी धोखेबाज़ साज़िशों के ज़रिए कुछ भोले और संदिग्ध अधिकारियों को इस तरह के अत्याचार के लिए उकसाते हैं। इसके जवाब में, रिसाले-ए-नूर **द्वारा** उन पाखंडियों पर किए गए शक्तिशाली अमूर्त प्रहारों ने तुम्हारा पूरा बदला लेने की कोशिश की है। उनके लिए यही काफी है। अन्त में, जो अधिकारी इस स्थिति को लाने के वास्तविक साधन थे, उनका भी इसमें हाथ है। आपकी प्रतिक्रिया यह होनी चाहिए कि - ताकि वे **ईमान के द्वारा** रिसाले-ए-नूर **से लाभ उठा सकें** , चाहे वे चाहें या न चाहें, और भले ही वे इसकी आलोचना करने के इरादे से इसमें आए हों - नियम के अनुसार उन्हें क्षमा कर दें, ईश्वर-भक्त, धर्मी लोग - जो अपने क्रोध को रोकते हैं (भले ही वे भड़के हों और बदला लेने में सक्षम हों), और लोगों को (उनके अपराधों को) क्षमा करते हैं (3:

.... यह-

134); यह उदारता का कार्य होगा।

इस सच्ची चेतावनी के परिणामस्वरूप मुझे जो पूर्ण संतुष्टि और कृतज्ञता महसूस हुई, उसके कारण मैंने "जोसेफ का स्कूल" बने रहने का फैसला किया, और इस नए में कुछ हानिरहित अपराध करने का मदद कर सकूं जो मेरे भी फैसला किया, जिससे मुझे जेल की सजा हो सके, ताकि मैं उन लोगों की भी विरोधी थे। इसके अलावा, मैं पचहत्तर साल का था, बिना किसी सांसारिक लगाव के, और जिन सत्तर लोगों से मैं प्यार करता था, उनमें से केवल पाँच ही जीवित बचे थे। इसके अलावा, रिसाले-ए-नूर संग्रह की सत्तर हज़ार प्रतियाँ मुफ़्त प्रचलन में थीं और मेरे कर्तव्यों का पालन करती थीं, और इसके अलावा, मेरे भाई-बहन और वारिस थे जो हज़ारों के साथ विश्वास की सेवा करेंगे-

मेरी एक भाषा के स्थान पर अन्य भाषाओं की रेत। इसलिए, कब्र मेरे लिए इस जेल से सौ गुना बेहतर थी। और जेल बाहर की आज़ादी से सौ गुना ज़्यादा आरामदायक और ज़्यादा फ़ायदेमंद थी, जिसमें कोई आज़ादी नहीं थी और जो अत्याचार और उत्पीड़न के अधीन थी। क्योंकि जेल में सैकड़ों अधिकारियों के उत्पीड़न के बाहर अकेले पीड़ित होने के बजाय, सैकड़ों अन्य कैदियों के साथ, जेल के गवर्नर और मुख्य वार्डर जैसे एक या दो लोगों के मामूली "औपचारिक" उत्पीड़न को सहना पड़ता था। लेकिन जेल में कई साथियों की भाईचारे वाली दया और सांत्वना मिलती है। इसके अलावा, इस्लामी करुणा और मानवीय सहज कोमलता ऐसी स्थिति में बुजुर्गों के साथ दयालु व्यवहार की ओर ले जाती है, इस प्रकार

जेल की कठिनाइयों को दया में बदलना। इन सब बातों पर विचार करते हुए, मैंने जेल जाने के लिए तैयार हो गया।

जब मैं इस तीसरे मुकदमे के लिए अदालत गया, तो कमजोरी, बुढ़ापे और बीमारी के कारण खड़े रहने में कठिनाई के कारण, मैं ट्रायल रूम के दरवाजे के बाहर एक कुर्सी पर बैठ गया। जज अचानक प्रकट हुए और गुस्से में द्वेषपूर्ण तरीके से पूछा, "वह खड़ा होकर इंतजार क्यों नहीं कर रहा है?" बुढ़ापे के सामने इस निर्दयता पर मुझे गुस्सा आया। अचानक, मैंने देखा कि हमारे चारों ओर बड़ी संख्या में मुसलमान इकट्ठा हो गए थे और पूरे प्यार और भाईचारे की करुणा के साथ देख रहे थे, और तितर-बितर नहीं हो रहे थे। निम्नलिखित दो सत्य मेरे सामने आए:

पहला: मेरे और रिसाले-ए-नूर के गुप्त शत्रुओं ने कुछ भोले-भाले अधिकारियों को धोखा दिया था, इस उम्मीद में कि इस तरह वे मेरे बारे में जनता की अच्छी राय को नष्ट करके और मेरी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचाकर रिसाले-ए-नूर की विजय को रोक सकते हैं -

ऐसा कुछ जो मैं किसी भी हालत में नहीं चाहता था। उन्होंने उन अधिकारियों को मेरे प्रति इस तरह से तिरस्कारपूर्ण व्यवहार करने के लिए उकसाया था। लेकिन उस एक आदमी के अपमान के बदले, इन सौ लोगों को रिसाले -ए-नूर की आस्था की सेवा के लिए एक ईश्वरीय अनुग्रह के रूप में देखें! आपकी सेवा की सराहना करते हुए, वे आप पर दया करते हैं और अपनी सहानुभूति व्यक्त करते हैं, और आपका स्वागत करते हैं और आपको विदा करते हैं। दरअसल, अगले दिन जब मैं सरकारी वकील के सवालों का जवाब दे रहा था, तो लगभग एक हजार लोग प्रांगण में एकत्र हुए

अदालत की खिड़कियों के बाहर खड़े होकर अपनी चिंता जाहिर कर रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे वे अधिकारियों से कहना चाहते थे कि वे मुझ पर अत्याचार न करें। पुलिस उन्हें तितर-बितर करने में असमर्थ थी। मुझे लगा कि इस खतरनाक युग में ये लोग सच्ची सांत्वना, एक अमिट रोशनी, एक शक्तिशाली विश्वास और शाश्वत खुशी के बारे में कुछ खुशखबरी चाहते हैं - अपने स्वभाव से, वे इन्हीं की तलाश कर रहे थे। उन्होंने सुना होगा कि वे जो खोज रहे थे वह रिसाले -ए-नूर में मौजूद है, और यही कारण था कि उन्होंने मेरे महत्वहीन व्यक्ति को मेरे द्वारा विश्वास के लिए की गई थोड़ी सी सेवा के लिए इतना ध्यान और सम्मान दिखाया - वह ध्यान और सम्मान जो मेरे हक़ से कहीं ज़्यादा था।

दूसरा सच: मेरे मन में यह विचार आया कि बदले में

कुछ धोखेबाज व्यक्तियों द्वारा हमारे साथ किया गया अपमानजनक दुर्व्यवहार, जो उन्होंने अपने निराधार संदेह के कारण किया था कि हम सार्वजनिक व्यवस्था में बाधा डाल रहे हैं और हमारी धार्मिक सेवा को रोकने तथा हमारे प्रति जनता की मान्यता और सम्मान को नष्ट करने के इरादे से किया था, उसके लिए असंख्य सत्यनिष्ठ लोगों और आने वाली पीढ़ियों की प्रशंसा और सराहना मिली।

निश्चित, सत्यापित विश्वास की शक्ति के माध्यम से, इस देश के हर हिस्से में रिसाले-ए-नूर और उसके छात्रों ने अराजकता के भयानक भ्रष्ट प्रयासों को रोक दिया है जो साम्यवाद के मुखौटे के नीचे शरण लेते हैं और जो सार्वजनिक व्यवस्था को नष्ट करने की कोशिश कर रहे हैं। रिसाले-ए-नूर और उसके छात्र सार्वजनिक व्यवस्था और सुरक्षा को बनाए रखने के लिए काम करते हैं,

और परिणामस्वरूप बीस वर्षों से अधिक समय में तीन या चार अदालतें और दस प्रांतों की पुलिस रिसाले-ए-नूर के छात्रों द्वारा सार्वजनिक व्यवस्था के उल्लंघन की कोई भी घटना नहीं खोज पाई है या दर्ज नहीं कर पाई है, जिनकी संख्या बहुत अधिक है और जो देश के हर हिस्से में पाए जाते हैं। और तीन प्रांतों के कुछ निष्पक्ष पुलिस अधिकारियों ने कहा है, " रिसाले-ए-नूर के छात्र नैतिक पुलिस हैं। वे सार्वजनिक व्यवस्था के संरक्षण में हमारी मदद करते हैं। निश्चित, सत्यापित विश्वास के माध्यम से, रिसाले-ए-नूर पढ़ने वाले हर व्यक्ति के दिमाग में कुछ ऐसा रह जाता है जो उन्हें कोई भी अपराध करने से रोकता है। वे सार्वजनिक व्यवस्था को सुरक्षित रखने के लिए काम करते हैं।"

इसका एक उदाहरण डेनिज़ली जेल था। जब रिसाले-ए नूर, जिसमें विशेष रूप से मेवे रिसालेसी शामिल थे

(विश्वास के फलों पर ग्रंथ), जो उस जेल में लिखा गया था, वहाँ प्रवेश करने के तीन या चार महीने की अवधि में कैदी, जिनकी संख्या दो सौ से अधिक थी, इतने असाधारण रूप से आज्ञाकारी हो गए और ऐसे धार्मिक, धार्मिक आचरण को प्राप्त कर लिया कि एक व्यक्ति जिसने तीन या चार लोगों को मार डाला था, वह खटमल को मारने से भी पीछे हट गया। वे राष्ट्र के पूर्ण रूप से दयालु, हानिरहित और लाभकारी सदस्य बन गए। अधिकारियों ने इस परिवर्तन को आश्चर्य और प्रशंसा में देखा। अपनी सजा पाने से पहले, कुछ युवाओं ने यहां तक कहा: "यदि रिसाले -ए-नूर के छात्र जेल में रहते हैं, तो हम खुद को दोषी ठहराने की कोशिश करेंगे ताकि हम उनसे सीख सकें और उनके जैसे बन सकें। हम खुद को सुधारेंगे

उनकी शिक्षा के माध्यम से।”

इसलिए जो लोग रिसाले-ए-नूर के छात्रों पर, जो उस किस्म के हैं, सार्वजनिक व्यवस्था को बिगाड़ने का आरोप लगाते हैं, वे निश्चित रूप से गंभीर रूप से गलत हैं, या उन्हें धोखा दिया गया है, या वे जाने-अनजाने अराजकता के लिए सरकार को धोखा दे रहे हैं, और दमन के ज़रिए हमें कुचलने की कोशिश कर रहे हैं। हम उनसे निम्नलिखित कहते हैं:

> चूँकि मृत्यु को मारा नहीं जा सकता और कब्र को बंद नहीं किया जा सकता, और इस दुनिया के अतिथिगृह में यात्री, काफिले के बाद काफिले, बड़ी तेजी और शोरगुल के साथ धरती में प्रवेश करते हैं और गायब हो जाते हैं, इसलिए निश्चित रूप से हम भी बहुत जल्द एक दूसरे से अलग हो जाएंगे। तुम्हें अपने अत्याचार की सजा बहुत बुरी तरह मिलेगी।
>
> तुम मृत्यु की फाँसी पर चढ़ोगे, जो तुम्हारे लिए अनन्त दण्ड का द्वार है, लेकिन विश्वास के उत्पीड़ित लोगों के लिए मुक्ति पत्र है। इस संसार में तुम्हें जो क्षणिक सुख मिले हैं, जिन्हें तुम स्थायी समझते हो, वे अनन्त, भयंकर पीड़ा में बदल जाएँगे।

अफ़सोस की बात है कि हमारे छुपे हुए पाखंडी दुश्मन कभी-कभी इस्लाम की सच्चाई को "सूफी संप्रदाय" का नाम दे देते हैं, जिसे इस धार्मिक राष्ट्र के संतों और वीर दिग्गजों के दर्जे के करोड़ों शहीदों के प्रयासों से हासिल और संरक्षित किया गया है। जबकि सूफी संप्रदायों का मार्ग इस्लाम के सूर्य की केवल एक किरण है, वे इसे स्वयं सूर्य के रूप में दिखाने का प्रयास करते हैं, और कुछ लापरवाह सरकारी अधिकारियों को धोखा देते हैं। रिसाले-ए-नूर के छात्रों को लेबल करना, जो वास्तव में प्रभावी ढंग से काम करते हैं

कुरान की सच्चाई और ईमान के लिए, "सूफ़ी संप्रदाय के अनुयायी" और "राजनीतिक समाज के सदस्य" के रूप में, वे ऐसे अधिकारियों को हमारे खिलाफ भड़काना चाहते हैं। हम उनसे और जो लोग हमारे खिलाफ उनकी बात सुनते हैं, उनसे वही कहते हैं जो हमने डेनिज़ली की निष्पक्ष अदालत में कहा था:

> आइये हम भी उस पवित्र सत्य के लिए बलिदान हो जाएं, जिसके लिए करोड़ों अन्य लोगों ने बलिदान दिया है!
>
> भले ही आप हमें जलाने के लिए दुनिया में आग लगा दें, हम जो कुरान की सच्चाईयों के लिए खुद को बलिदान करते हैं, विधर्म के सामने अपने "हथियार" नहीं डालेंगे; भगवान की इच्छा और मदद से, हम अपने पवित्र कर्तव्य को नहीं छोड़ेंगे!

और इसलिए, मेरे बुढ़ापे की पीड़ा और निराशा की स्थिति के लिए ईमान और कुरान से मिलने वाली पवित्र सांत्वना के कारण, मैं अपने बुढ़ापे के सबसे कष्टदायक वर्ष को भी अपनी जवानी के सबसे सुखद दस वर्षों के बदले में नहीं बदलूंगा। खास तौर पर इसलिए, क्योंकि तौबा करने और अनिवार्य नमाज़ अदा करने वालों का जेल में बिताया गया हर घंटा सामान्य परिस्थितियों में दस घंटे की इबादत के बराबर है, और बीमारी और उत्पीड़न में बिताया गया हर क्षणिक दिन अनंत जीवन के दस दिनों का इनाम पाता है, मैं समझ गया हूँ कि मेरे जैसे व्यक्ति के लिए ये दिन कितने शुक्रगुज़ार हैं जो क़ब्र के दरवाज़े पर अपनी बारी का इंतज़ार कर रहा है। मैं कहता हूँ, "मेरे रब का अनंत शुक्रिया!" और मैं अपने बुढ़ापे से संतुष्ट हूँ और अपनी कैद से खुश हूँ।

क्योंकि जीवन समाप्त नहीं होता; यह तेजी से गुजर जाता है। यदि यह आनंद और खुशी में बीतता है, तो जीवन के लुप्त होने से

सुख दुख है, यह अफसोस और दुख का कारण बनता है, और कृतघ्नता और असावधानी के कारण यह अपने पीछे पाप छोड़कर चला जाता है। जबकि, यदि यह जेल या कठिनाई में गुजरता है, तो चूंकि दर्द का गायब होना आत्मा में एक खुशी है, और चूंकि इसे एक तरह की पूजा माना जाता है, यह एक तरह से शाश्वत हो जाता है, और अपने अच्छे फलों के माध्यम से स्थायित्व प्राप्त करता है। यह अतीत में किए गए पापों और उन गलतियों के लिए प्रायश्चित बन जाता है जो कारावास का कारण बने थे, उन्हें शुद्ध करता है। इस दृष्टिकोण से, कैदियों में से जो लोग अनिवार्य प्रार्थनाओं के कम से कम अनिवार्य भाग करते हैं, उन्हें धैर्य के साथ धन्यवाद देना चाहिए।

सोलहवीं आशा

एक बार बुढ़ापे में मुझे एक साल की सजा काटने के बाद एस्कीशेहर जेल से रिहा कर दिया गया। उन्होंने मुझे कस्तमोनू (उत्तरी तुर्की में) निर्वासित कर दिया, जहाँ उन्होंने मुझे दो या तीन महीने तक पुलिस स्टेशन में मेहमान के तौर पर रखा। यह समझा जा सकता है कि मेरे जैसे किसी व्यक्ति को ऐसी जगह पर कितनी तकलीफ़ हुई होगी; यह उस व्यक्ति के लिए कितना मुश्किल था जो एकांत पसंद करता है, जो वफादार दोस्तों से भी मिलने से थक जाता है, और जो अपनी पारंपरिक, देशी पोशाक में बदलाव बर्दाश्त नहीं कर सकता।

ऐसी पीड़ादायक परिस्थितियों में, अचानक ईश्वरीय कृपा मेरे बुढ़ापे में मेरी सहायता के लिए आई। थाने में इंस्पेक्टर और पुलिस अधिकारी मेरे लिए वफादार दोस्त जैसे हो गए। उन्होंने एक बार भी मुझे इस बात के बारे में नहीं बताया कि मैं कैसे बीमार हो सकता हूँ।

मैंने कपड़े पहने और जैसे वे मेरे नौकर हों, वे मुझे शहर में घुमाने ले गए।

फिर मैंने पुलिस स्टेशन के सामने कस्तमोनू के " रिसाले-ए नूर मेदरेस" में निवास किया , और रिसाले-ए नूर के बारे में और अधिक लिखना शुरू किया। वीर रिसाले-ए नूर का छात्र-

फेज़ी, एमिन, हिल्मी, सादिक, नाज़िफ़ और साला-हद्दीन जैसे छात्र मेदरेस में शामिल हुए ताकि वे अपने हस्तलिखित ग्रंथों की नकल कर सकें और उन्हें वितरित कर सकें। हमने विद्वानों के बीच ऐसी बहसें कीं जो मेरे युवावस्था में मेरे पूर्व छात्रों के साथ हुई बहसों से भी कहीं ज़्यादा गहरी थीं।

फिर हमारे गुप्त शत्रुओं ने कुछ अधिकारियों और कुछ अहंकारी होजाओं और शेखों को हमारे विषय में संदेह पैदा कर दिया । उन्होंने हमें और रिसाले-ए-नूर को हमारे विरुद्ध भड़का दिया।

पाँच या छह प्रांतों के छात्रों को डेनिज़ली जेल के "जोसेफ स्कूल" में इकट्ठा किया जाना था। इस सोलहवीं आशा का विवरण कस्तमोनू से भेजे गए छोटे पत्रों और डेनिज़ली जेल में रहते हुए मैंने अपने भाइयों को गुप्त रूप से भेजे गए पत्रों और अदालत के बचाव भाषणों वाले संग्रह में पाया जा सकता है। इसलिए उन पत्रों और अपने बचाव भाषण का विवरण देते हुए, मैं इसे यहाँ संक्षिप्त करूँगा:

मैंने कुछ गोपनीय और महत्वपूर्ण ग्रंथों को कोयले और लकड़ी के नीचे छिपा दिया ताकि वे मेरी मृत्यु के बाद या राजधानी शहर में शीर्ष अधिकारियों द्वारा सच्चाई सुनने और उनके होश में आने के बाद प्रकाशित हो सकें। जब मैं इस बारे में निश्चिंत महसूस कर रहा था, कुछ जासूस और सहायक लोक अभियोजक-

टोर ने अचानक मेरे घर पर छापा मारा। उन्होंने लकड़ी के नीचे से उन गोपनीय और महत्वपूर्ण ग्रंथों को निकाला। बाद में, उन्होंने मुझे गिरफ्तार कर लिया और मुझे इस्पार्टा जेल भेज दिया, हालाँकि मैं खराब स्वास्थ्य में था। जबकि मैं रिसाले -ए-नूर को हुए नुकसान से बहुत परेशान और बेहद दुखी था, ईश्वरीय कृपा हमारी सहायता के लिए आई। अधिकारियों ने बड़ी सावधानी और जिज्ञासा के साथ उन महत्वपूर्ण ग्रंथों को पढ़ना शुरू किया जो छिपाए गए थे, और जिनकी उन्हें बहुत ज़रूरत थी, और सरकारी कार्यालय रिसाले-ए-नूर की तरह हो गए।

अध्ययन केन्द्रों में। आलोचना करने के इरादे से पढ़ना शुरू करने के बाद, वे उनकी सराहना करने लगे। डेनिज़ली में भी, हालाँकि हम इसके बारे में नहीं जानते थे, कई आधिकारिक और अनौपचारिक लोगों ने आयतु'ल-कुबरा (सर्वोच्च संकेत) के गुप्त रूप से मुद्रित संस्करण को पढ़ा, और उनका विश्वास मजबूत हुआ। इससे जेल की वह विपत्ति कम हो गई जो हम भुगत रहे थे।

बाद में वे हमें डेनिज़ली जेल ले गए और मुझे बदबूदार, ठंडी, नम कोठरी में एकांत कारावास में डाल दिया।
बुढ़ापे, बीमारी और मेरे कारण मेरे दोस्तों को होने वाली परेशानियों से उपजी परेशानी, साथ ही रिसाले-ए-नूर के अंगों की जब्ती और इसकी गतिविधियों में रुकावट से होने वाले दुख और परेशानी से जूझते हुए, अचानक ईश्वरीय कृपा मेरी मदद के लिए आई। इसने उस विशाल जेल को रिसाले-ए-नूर मदरसे में बदल दिया, जिससे यह साबित हो गया कि यह यूसुफ का स्कूल है। रिसाले-ए-नूर पूरे यूरोप में फैलने लगा।

मेदरेसेतुज़-ज़हरा के नायकों की हीरे की कलम। उन कठोर परिस्थितियों में, उन नायकों में से एक, जो रिसाले-ए-नूर की सेवा में सबसे आगे है, ने तीन या चार महीनों के अंतराल में विश्वास के फल और बचाव भाषणों के संग्रह की बीस से अधिक प्रतियाँ तैयार कीं। उन्होंने जेल के अंदर और बाहर दोनों जगह लोगों के दिलों और दिमागों पर कब्ज़ा करना शुरू कर दिया।

इससे उस विपत्ति में हमारी हानियाँ बड़ी उपलब्धियों में बदल गईं और हमारा दुख खुशी में बदल गया। इसने एक बार फिर इस आयत की सच्चाई को प्रदर्शित किया, हो सकता है कि कोई चीज़ तुम्हें पसंद न हो, लेकिन वह तुम्हारे लिए अच्छी है (2: 216)।

फिर पहली विशेषज्ञ समिति की गलत और सतही सरकारी रिपोर्टों पर आधारित कठोर आलोचनाओं, तथा शिक्षा मंत्री द्वारा हमारे विरुद्ध किए गए भयानक हमलों और उनके द्वारा हमारे विरुद्ध प्रकाशित बयान, तथा कुछ प्रेस विज्ञप्तियों के कारण, बात इतनी आगे बढ़ गई कि उन्होंने हममें से कुछ लोगों को फांसी पर चढ़ाने की भी कोशिश की।

इन परिस्थितियों में, ईश्वरीय कृपा हमारी सहायता के लिए आई। सबसे पहले, सभी उम्मीदों के विपरीत, अंकारा में विशेषज्ञ समिति से एक सराहनीय रिपोर्ट आई। इसके अलावा, हमने अदालत में साबित किया कि रिसाले -ए-नूर संग्रह में उन्होंने जो कुछ बिंदु दिखाए थे, वे पूरी तरह से सही थे, और वे स्वयं भी गलती कर रहे थे। साथ ही, हमने दिखाया कि उनकी रिपोर्ट के पाँच पन्नों में लगभग दस गलतियाँ थीं।

फिर, विश्वास के फल और कर संग्रह के बदले में गंभीर, धमकी भरे अपमान की प्रतीक्षा करते हुए

रक्षा भाषण संग्रह, जिसे हमने सात सरकारी कार्यालयों को भेजा था, और पूरे रिसाले-ए-नूर के लिए, जिसे न्याय मंत्रालय को भेजा गया था, और विशेष रूप से गोपनीय ग्रंथों में कुछ महत्वपूर्ण व्यक्तियों के खिलाफ की गई कड़ी आलोचनाओं के लिए, उन्होंने बहुत ही नरमी से जवाब दिया। यहां तक कि प्रधानमंत्री द्वारा हमें भेजे गए आश्वस्त पत्र की तरह, वे हम पर हमला करने से बहुत दूर, समझौतावादी थे। इन सभी ने निर्णायक रूप से साबित कर दिया कि, ईश्वरीय कृपा के चमत्कार के रूप में, रिसाले-ए-नूर की सच्चाई

उन्हें एक मार्गदर्शक की तरह अपने ग्रंथों का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया था, और उन व्यापक मंडलियों को एक प्रकार के अध्ययन मंडल में बदल दिया था, जिससे असंख्य झिझकते या भ्रमित लोगों के विश्वास की रक्षा हुई, जिससे हमें हमारे दुख से सौ गुना अधिक आध्यात्मिक आनंद और लाभ हुआ।

फिर हमारे गुप्त शत्रुओं ने मुझे ज़हर दे दिया और उसी समय रिसाले-ए-नूर के शहीद नायक स्वर्गीय हाफ़िज़ अली अस्पताल गए और वहाँ से मेरी जगह क़ब्र के मध्यवर्ती क्षेत्र में पहुँचे; हम निराशा में रोए। इस आपदा से पहले, मैंने कस्तमोनू के पहाड़ पर बार-बार पुकारा था, "मेरे भाइयों, घोड़े को मांस और शेर को घास मत दो!" यानी, "सभी ग्रंथ हर किसी को मत दो, कहीं ऐसा न हो कि वे उन्हें ग़लत समझ लें और उनका इस्तेमाल हम पर हमला करने के लिए करें।" जिस समय मैंने ऐसा कहा था, मानो उन्होंने सात दिन की दूरी से अपने आध्यात्मिक टेलीफोन के ज़रिए सुना हो, हाफ़िज़ अली, भगवान उन पर दया करें

उन्होंने मुझे लिखा, "वास्तव में, मेरे गुरु, यह रिसाले-ए-नूर का एक आश्चर्य है कि यह घोड़ों को मांस या शेरों को घास नहीं देता है। बल्कि, यह घोड़ों को घास और शेरों को मांस देता है ताकि यह उस शेर जैसी होजा को ईमानदारी पर ग्रंथ दे सके।" मुझे उनका पत्र सात दिन बाद मिला। हमने हिसाब लगाया, और पाया कि जिस समय मैं पहाड़ पर उन शब्दों को चिल्ला रहा था, उसी समय वह उन्हें अपने पत्र में लिख रहा था।

इस प्रकार, ठीक उस समय जब हम रिसाले-ए-नूर के उस नायक की मृत्यु से उदास महसूस कर रहे थे
और हमारे पाखंडी शत्रुओं द्वारा हमारे विरुद्ध रची गई साजिशें, ताकि हम पर संदेह किया जाए और हमें दंडित किया जाए, और जब हम चिंतित थे कि जहर से बीमार होने के कारण मुझे आधिकारिक आदेश पर अस्पताल ले जाया जाएगा, तो ईश्वरीय कृपा अचानक हमारी सहायता के लिए आई।

मेरे धन्य भाइयों की सच्ची प्रार्थनाओं के कारण, जहर से मेरी मृत्यु का खतरा टल गया। शक्तिशाली संकेतों के अनुसार, हाफ़िज़ अली, वह धन्य शहीद, रिसाले-ए-नूर के साथ अपनी कब्र में व्यस्त था, और रिसाले-ए-नूर के साथ सवाल करने वाले फ़रिश्तों को जवाब दे रहा था; और डेनिज़ली नायक, हसन फ़ेज़ी, भगवान उस पर दया करें, जो उसकी जगह पर सेवा करेगा और उसकी प्रणाली के अनुसार काम करेगा, और उसके दोस्त, रिसाले-ए-नूर की प्रभावी रूप से सेवा कर रहे थे। चूँकि अन्य कैदियों को रिसाले-ए-नूर द्वारा सुधारा जा रहा था , यहाँ तक कि हमारे दुश्मनों ने भी हमें रिहा किए जाने का समर्थन किया

जेल। गुफा के साथियों25 की तरह, रिसाले -ए-नूर के छात्रों ने उस कठिन परीक्षा की जगह को पूर्व समय के तपस्वियों की गुफा में बदल दिया, और रिसाले-ए-नूर के कुछ हिस्सों को लिखने और प्रकाशित करने का प्रयास किया

संतुष्ट हृदय के साथ। इन सब बातों से यह सिद्ध होता है कि ईश्वरीय कृपा हमारी सहायता के लिए आई थी।

मेरे मन में यह भी विचार आया कि चूंकि इमाम आज़म अबू हनीफा जैसे कानून के प्रमुख विद्वानों को कारावास की सजा मिली थी; चूंकि कानून के सर्वोच्च रक्षक

इमाम अहमद इब्न हंबल27 जैसे इस्लाम को कुरान से संबंधित एक मुद्दे के कारण जेल में गंभीर यातनाएं दी गईं, और उन्होंने इस मामले को पूर्ण धैर्य के साथ सहन किया, और इस मामले में चुप नहीं रहे; और चूंकि कई धार्मिक नेताओं और विद्वानों ने इस मुद्दे को उठाया था, इसलिए उन्होंने इस मुद्दे को गंभीरता से लिया।

---

25 गुफा के साथी सात युवा थे जिन्होंने देश के बहुदेववादी राजा की उपस्थिति में ईश्वर की एकता में अपने विश्वास की घोषणा की, और इसलिए उन्हें एक गुफा में शरण लेनी पड़ी। एक दिव्य चमत्कार के रूप में, वे तीन सौ वर्षों तक गुफा में सोए, और जब वे जागे तो पाया कि उनका विश्वास उनके राष्ट्र का आधिकारिक धर्म बन गया था। यह देखने के बाद, वे मर गए और गुफा में दफना दिए गए। कुरान, 18:9–26 देखें। उन्हें पश्चिम में सात स्लीपर के रूप में जाना जाता है। (ट्र.)

26 इमाम आज़म अबू हनीफ़ा, नुमान इब्न साबित (मृत्यु 768): हनफ़ी स्कूल ऑफ़ लॉ की स्थापना की और न्यायशास्त्र के सबसे महान मुस्लिम विद्वानों में से एक थे और कुरान और सुन्ना से नए कानूनों का निष्कर्ष निकालने वाले थे। वे धर्मशास्त्र में भी पारंगत थे। (ट्र.)

27 इमाम अहमद इब्न हंबल (मृत्यु, 855): इस्लाम में चार सुन्नी विधि-विद्यालयों में से एक के संस्थापक। उन्होंने अपने धार्मिक विश्वास के लिए वीरतापूर्वक उत्पीड़न सहा। उनकी मुसनद प्रसिद्ध है, जिसमें उन्होंने लगभग 40,000 परंपराएँ एकत्र की हैं। (अनुवाद)

यदि हमने पूर्ण धैर्य के साथ, बिना विचलित हुए, धन्यवाद दिया होता, यद्यपि उन्हें हमसे कहीं अधिक यातनाएँ सहनी पड़ी थीं, तो निश्चय ही हमें उन थोड़े से कष्टों के लिए अंतहीन धन्यवाद देना चाहिए था, जिन्हें हमें सहना पड़ा था।

कुरान की अनेक सच्चाइयों से हमें जो महान पुरस्कार मिला है, उसके बदले में हमें ईश्वर से प्रेम करना चाहिए। आइए मैं संक्षेप में मानव जाति के बीच ईश्वरीय कृपा की अभिव्यक्ति का वर्णन करता हूँ।

अनुचित अत्याचार:

जब मैं बीस साल का था, तो मैं बार-बार कहा करता था, "पूर्व समय में गुफाओं में रहने वाले संन्यासियों की तरह, अपने जीवन के अंत में मैं सामाजिक जीवन से पीछे हटकर किसी गुफा या पहाड़ पर चला जाऊंगा।" इसके अलावा, जब मैं प्रथम विश्व युद्ध के दौरान रूस के उत्तर-पूर्व में युद्ध बंदी था, तो मैंने फैसला किया कि मैं अपना शेष जीवन गुफाओं में बिताऊंगा। मैं राजनीतिक और सामाजिक जीवन से दूर हो जाऊंगा। मैं उनसे तंग आ चुका था। अब मैं देखता हूं कि, मेरे निर्णय और इच्छा से कहीं बेहतर तरीके से, मेरे बुढ़ापे के लिए करुणा से, प्रभु की कृपा और दिव्य नियति के न्याय ने उन गुफाओं को बदल दिया, जिनमें मैंने जाने के बारे में सोचा था, जेलों, एकांतवासों और अकेलेपन और एकांत कारावास में कठिन परीक्षा के स्थानों में। इसने मुझे जोसेफ के स्कूल दिए जो तपस्वियों और एकांतवासियों की पहाड़ी गुफाओं और एकांत कारावास के स्थानों से कहीं बेहतर हैं ताकि मैं अपना समय बर्बाद न करूं। इसने मुझे परलोक के वे लाभ प्रदान किये जो गुफाओं में रहने से अपेक्षित हैं, तथा मुझे यह भी सक्षम बनाया कि मैं अपनी आत्मा को शांति प्रदान कर सकूँ।

ईमान की सच्चाइयों और कुरान की पवित्र सेवा करना, जो एक तरह का जिहाद है। मैंने तो यह भी सोचा था कि अपने दोस्तों के बरी होने के बाद मैं कुछ अपराध का बहाना बनाकर हुसैन और फेज़ी जैसे कुंवारे लोगों के साथ जेल में रहूँगा। किसी बहाने से मैं लोगों से न मिलने या बेकार की बातचीत या अहंकारी दिखावे में अपना समय बर्बाद न करने के लिए एकांत कारावास की कोठरी में ही रह जाता। लेकिन ईश्वरीय नियति ने हमें परीक्षा की दूसरी जगह भेज दिया। ईश्वरीय नियमों के अनुसार, "जो ईश्वर चुनता है वही अच्छा है," और यह भी हो सकता है कि आपको कोई चीज़ नापसंद हो लेकिन वह आपके लिए अच्छी हो (2: 216), मेरी वृद्धावस्था के प्रति दया के कारण और ताकि हम ईमान की सेवा में और अधिक मेहनत करें,

इसमें बुद्धिमत्ता के तीन महत्वपूर्ण उदाहरण हैं
दी- में रिसाले-ए-नूर की सेवा के लिए लाभ

अनुग्रह ने दयापूर्वक उन गुफाओं को बदल दिया है, जिनमें मैं अपनी युवावस्था के दौरान, जब मेरा कोई शक्तिशाली, गुप्त शत्रु नहीं था, अपने आप को बंद कर लेने के बारे में सोचा था, उन्हें मेरे बुढ़ापे के लिए जेल की एकांत कोठरी में बदल दिया है:

बुद्धिमानी और लाभ का पहला उदाहरण: इस समय रिसाले-ए-नूर के छात्र बिना किसी नुकसान के केवल यूसुफ के स्कूल में ही एकत्र हो सकते थे। उनका बाहर इकट्ठा होना न केवल महंगा पड़ता बल्कि संदेह भी पैदा करता।

ऐसी स्थिति में तो यह भी हो सकता है कि

मुझसे मिलने आने वाले कुछ लोग चालीस या पचास लीरा खर्च करते , लेकिन मुझे केवल बीस मिनट देखने के बाद या मुझे देखे बिना ही वापस लौटना पड़ता। इसलिए, मैं अपने कुछ भाइयों के करीब रहने के लिए स्वेच्छा से जेल की कठिन यात्रा को चुनता। इसका मतलब है कि जेल हमारे लिए एक उपकार और दया है।

बुद्धिमता और लाभ का दूसरा उदाहरण: इस समय रिसाले-ए-नूर के माध्यम से ईमान की सेवा हर जगह इसका प्रचार करके और जरूरतमंदों का ध्यान आकर्षित करके संभव है। इस प्रकार, हमारी कैद रिसाले-ए-नूर की ओर ध्यान आकर्षित करती है

और इसके ज्ञात होने में योगदान देता है। जो लोग सबसे ज़्यादा जिद्दी हैं और जिन्हें सबसे ज़्यादा ज़रूरत है वे इसे पा सकते हैं और अपने विश्वास को बचा सकते हैं; उनकी ज़िद को हरा दिया जाता है और वे बिना विश्वास के दूसरी दुनिया में जाने के ख़तरे से बच जाते हैं, और इस तरह रिसाले-ए-नूर के अध्ययन का दायरा बढ़ जाता है।

ज्ञान और लाभ का तीसरा उदाहरण: रिसाले -ए-नूर के छात्र जो कैद में हैं, वे एक-दूसरे के आचरण, चरित्र, ईमानदारी और आत्म-बलिदान से सीखते हैं, और वे रिसाले-ए-नूर के माध्यम से अपनी सेवा में सांसारिक लाभ की तलाश नहीं करते हैं। दरअसल, चूंकि यूसुफ के स्कूल में उन्होंने अपनी आँखों से हर कठिनाई और परेशानी के लिए दस या सौ आध्यात्मिक लाभ और अच्छे परिणाम देखे हैं, अच्छे परिणामों और विश्वास के लिए व्यापक ईमानदार सेवा के माध्यम से, वे शुद्ध ईमानदारी प्राप्त करने में सक्षम हैं, अब कम नहीं-

वे कमतर, व्यक्तिगत लाभ की चाहत में खुद को नुकसान पहुंचा रहे हैं।

हालाँकि, इन कष्टदायी स्थानों के बारे में एक दुखद लेकिन सुखद बात है जो केवल मुझे ही चिंतित करती है। वह इस प्रकार है:

मैंने यहाँ भी वही स्थिति देखी है जो मैंने देखी थी

अपनी युवावस्था के दौरान अपने गृहनगर के पुराने मदरसों में।
पूर्वी प्रांतों में पारंपरिक रूप से, माध्यमिक छात्रों की कुछ आवश्यकताओं की पूर्ति बाहर से होती थी।

मेदरेस के किनारे । कुछ मेदरेस में, उनका भोजन मेदरेस में ही तैयार किया जाता था। और कई अन्य तरीके हैं जिनसे मेदरेस इस कठिन परीक्षा की जगह जैसा दिखता है। जब मैं सुखद पश्चाताप और लालसा की भावना के साथ जेल को देखता हूं, तो मैं अपनी कल्पना में युवावस्था के उन पुराने मधुर दिनों की यात्रा करता हूं, और बुढ़ापे की कठिनाइयों को भूल जाता हूं।

माता-पिता के प्रति स्नेह

[पत्र, इक्कीसवाँ पत्र से]

उसके नाम में, उसकी महिमा हो।

ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा न करती हो।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

तुम्हारे रब ने आदेश दिया है कि तुम सिर्फ़ उसी की इबादत करो और अपने माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो। अगर उनमें से कोई एक या दोनों तुम्हारे साथ बुढ़ापे में पहुँच जाएँ तो उनके सामने अपमान का एक शब्द भी न कहो और न ही उन्हें डाँटो, बल्कि उनके साथ सम्मान से बात करो। दया के कारण उनके सामने नम्रता का पंख नीचे करो और कहो, "मेरे रब! उन पर दया करो, जैसे उन्होंने बचपन में मेरा ख़्याल रखा।" तुम्हारा रब तुम्हारे दिलों में जो कुछ है, उसे भली-भाँति जानता है। अगर तुम नेक बनो तो वह सब्र करनेवालों को बड़ा क्षमाशील है। (17:23-25)

तुम जो अपने माता-पिता के प्रति पुत्रवत जिम्मेदारी से अनजान हो, जिनके घर में कोई बूढ़ा माता-पिता, कोई असहाय और अपंग रिश्तेदार या कोई ऐसा भाई या बहन हो जो धर्म के अनुसार जीविका कमाने में असमर्थ हो, इन आयतों पर ध्यान दो

और देखें कि वे किस प्रकार पांच तरीकों से आपसे पुत्रवत स्नेह दिखाने का आग्रह करते हैं।

जिस तरह बच्चों के प्रति पिता का स्नेह सांसारिक जीवन की एक उत्कृष्ट वास्तविकता है, उसी तरह संतान के प्रति कृतज्ञता एक अत्यंत आवश्यक और भारी कर्तव्य है। माता-पिता अपने बच्चों के लिए प्रेमपूर्वक अपने जीवन का बलिदान करते हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए, जो बच्चे अपनी मानवता को बनाए रखते हैं और कृतघ्नता के राक्षस नहीं बनते हैं, उन्हें उन्हें खुश करने और उनका सम्मान करके और उनकी सेवा करके उनकी स्वीकृति प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। इस्लाम चाचाओं और चाचीओं को माता-पिता के समान ही सम्माननीय मूल्य प्रदान करता है।

हे प्रभु, तुम जो ऐसे कर्तव्यों की उपेक्षा करते हो, जान लो कि उनके निरन्तर अस्तित्व से ऊब जाना और उनकी मृत्यु की आशा करना कितना अपमानजनक और बेईमानी भरा है।

यह जान लो और होश में आओ! समझो कि उन लोगों की मृत्यु की इच्छा करना कितना अन्याय है जिन्होंने तुम्हारे लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया।

हे जीविकोपार्जन में डूबे हुए! जान लो कि तुम्हारा विकलांग रिश्तेदार, जिसे तुम बोझ समझते हो, तुम्हारे लिए वरदान और समृद्धि का साधन है। जीविका चलाने में कठिनाई के बारे में कभी शिकायत मत करना, क्योंकि अगर तुम्हें वरदान और समृद्धि न मिली होती, तो तुम्हें और भी अधिक कठिनाई का सामना करना पड़ता। अगर मैं इस पत्र को संक्षिप्त नहीं रखना चाहता, तो मैं तुम्हें यह साबित कर देता।

मैं ईश्वर की कसम खाता हूँ कि यह एक वास्तविकता है जिसे मेरा शैतान और दुष्ट-आदेश देने वाला स्व भी स्वीकार करता है। सारा अस्तित्व देख सकता है कि असीम दयालु और करुणामयी

महिमा और उदारता के निर्माता बच्चों को उनके पोषण के साथ यहाँ भेजते हैं: उनकी माँ का स्तन दूध। वह बुजुर्गों के लिए पोषण भेजता है, जो बच्चों की तरह हैं और उनसे भी अधिक योग्य हैं और उन्हें दया की आवश्यकता है, आशीर्वाद और अदृश्य, अमूर्त बहुतायत के रूप में। वह उनके पोषण को दूसरों पर नहीं थोपता

मतलबी, लालची लोग.

सत्य यह है कि: ईश्वर सर्व-प्रदाता, सामर्थ्यवान और दृढ़ है (51:58) और: कितने ही जीवधारी अपना भरण-पोषण स्वयं नहीं कर पाते, परन्तु ईश्वर उनके लिए और तुम्हारे लिए भरण-पोषण करता है (29:60) सभी जीवित प्राणी अपने स्वभाव की जीभ से इसकी घोषणा करते हैं। इसलिए न केवल बुजुर्ग रिश्तेदारों का भरण-पोषण आशीर्वाद के रूप में भेजा जाता है, बल्कि पालतू जानवरों का भी, जो उन्हें खिलाने और उनकी देखभाल करने वाले लोगों के लिए मित्र के रूप में बनाए जाते हैं। मैंने व्यक्तिगत रूप से यह देखा है: वर्षों पहले, मेरा दैनिक राशन आधी रोटी थी।

मैं मुश्किल से इस काम को कर पाता था, जब तक कि चार बिल्लियाँ मेरी रोज़ाना मेहमान नहीं बन गईं। जैसे ही वे मेरी रोटी साझा करने लगीं, हमेशा वही राशन हम सभी के लिए पर्याप्त होता था। मैंने इसे इतनी बार देखा कि मुझे यकीन हो गया कि मुझे इससे फ़ायदा हुआ है

बिल्लियों के माध्यम से आने वाले आशीर्वाद से। मैं घोषणा करता हूं कि वे मुझ पर बोझ नहीं थे; बल्कि, मैं उनका ऋणी था।

ऐ लोगो, तुम सभी प्राणियों में सबसे अधिक सम्मानित, महान और सम्मान के योग्य हो। लोगों में, ईमान वाले सबसे पूर्ण हैं। ईमान वालों में, सबसे उत्तम व्यक्ति ईश्वर है।

असहाय और बुजुर्ग सबसे योग्य हैं और उन्हें सम्मान और करुणा की आवश्यकता है। असहाय और बुजुर्गों में, रिश्तेदार दूसरों की तुलना में अधिक स्नेह, प्यार और सेवा के हकदार हैं। रिश्तेदारों में, माता-पिता सबसे सच्चे विश्वासपात्र और सबसे अंतरंग साथी होते हैं। यदि कोई जानवर आपके घर में मेहमान के रूप में रहने पर आशीर्वाद और समृद्धि का साधन है, तो विचार करें कि आपके बुजुर्ग माता-पिता आपके साथ रहने पर आशीर्वाद और दया का कितना अमूल्य साधन हैं। निम्नलिखित परंपरा दर्शाती है कि वे विपत्तियों को दूर करने का कितना महत्वपूर्ण साधन हैं: "लेकिन पुराने मुड़े हुए दोहरे के लिए, विपत्तियाँ आप पर बरसेंगी।"28

इसलिए होश में आओ। अगर तुम्हें लंबी उम्र दी गई है, तो तुम बूढ़े भी हो जाओगे। अगर तुम माता-पिता का सम्मान नहीं करते, तो इस नियम के अनुसार कि किसी को उसके कर्म के अनुसार पुरस्कार या दंड मिलता है, तुम्हारे बच्चे तुम्हारा सम्मान नहीं करेंगे। इसके अलावा, अपने परलोक पर गंभीरता से विचार करने से पता चलता है कि अपने माता-पिता की स्वीकृति प्राप्त करना और उनकी सेवा करके उन्हें प्रसन्न करना तुम्हारे परलोक के लिए एक अनमोल प्रावधान है। अगर तुम्हें यह सांसारिक जीवन प्रिय है, तो उन्हें प्रसन्न करो ताकि तुम एक सुखद जीवन जी सको। अगर तुम उन्हें बोझ समझते हो, उनके आसानी से नाराज़ होने वाले दिलों को तोड़ते हो, और उनकी मृत्यु की कामना करते हो, तो तुम कुरान की इस धमकी के पात्र बनोगे: वह [वह] दुनिया और परलोक दोनों को खो देता है (22:11)।

अतः जो लोग दयालु ईश्वर की दया चाहते हैं, उन्हें चाहिए कि ईश्वर द्वारा सौंपे गए लोगों पर दया करें।

---

28 अल-अजलूनी, कशफ अल-खफा', 2:163.

मैंने देखा कि मेरे मज़हब के भाई मुस्तफ़ा कैवस को अक्सर सांसारिक और पारलौकिक दोनों ही मामलों में सफलता मिलती थी। मुझे तब तक समझ नहीं आया कि ऐसा क्यों होता है जब तक मुझे पता नहीं चला कि वह अपने माता-पिता के अधिकारों का सख्ती से पालन करता था।
जो कोई दोनों लोकों में समृद्धि चाहता है, उसे उसका उदाहरण अपनाना चाहिए।

हे ईश्वर, उस व्यक्ति पर कृपा और शांति प्रदान करें जिसने घोषणा की: "माताओं के पैरों के नीचे स्वर्ग है," और उसके परिवार और साथियों पर। हमारे पास कोई ज्ञान नहीं है सिवाय इसके कि आपने हमें जो सिखाया है। आप सर्वज्ञ, सर्वज्ञ हैं।

अनुक्रमणिका